



## यादों की बरात

---

भारत छोड़कर पाकिस्तान जा बसे उटू के मराहूर गायर  
जोग मलीहावाणी का बहुचर्चित आत्मकथा का सक्षप







## क्रम

कुछ प्रारम्भिक बातें	७
जिंदगी का मेला—	१०
मेरी विस्मिल्लाह	२१
लखनऊ का पहला सफर	२७
फिरगी से नफरत	३०
तालीम का बलबला	३४
मेरा निकाह	४०
पहला मुशायरा	४४
अलीगढ़ में	४७
मेरी जवानी तक का हिन्दुस्तान	५१
राष्ट्रीय आन्दोलन से लगाव	५४
एक सपना	५८
निजाम की नौबरी	६१
हैदराबाद से निकाले जाना	७०
दर-दर	७८
रिसाला खलीफ	८१
फिरगी राजनीति के दो रस	८४
कुछ दिन फिल्मी दुनिया में	८६
हिजरत	९०
पाकिस्तानी शहरीयत	९७
कुछ मित्र कुछ रेखाचित्र	१०६
पंडित जवाहर लाल नेहरू	१०७
सरोजनी नायडू	११३
फिरक गोरखपुरी	११५
मजाज	११६
सरदार दीवानसिंह भण्डू	१२२
वस्त्र विलग्रामी	१२५
छन्दू खा	१२६



## कुछ प्रारम्भिक बातें

सबसे पहले ये बातें सुन लीजिए, इनमें आगे चलकर मुझे समझने में आपकी मदद मिलेगी।

मैंने अपनी जिन्दगी के हालात लिखने के सिलसिले में पूरे छ बरस तक ज्यादातर लगातार और कभी-कभी रक रककर महनत की है। डेढ़ बरस की महनत के बाद पहला मसविदा तैयार किया उसे रददी की टोकरी में डाल दिया। फिर डेढ़ बरस में दूसरा मसविदा मुकम्मिल किया, उसपर भी लकीर खाव दी। फिर डेढ़-पौने दो बरस लगाकर नौ मी पृष्ठा का तीसरा मसविदा तहरीर किया और तीन हजार रुपये में उसकी किताबत भी मुकम्मिल करा ली। मगर जब उसपर एक गहरी नजर डाली तो पता चला कि इस मसविदे को भी मैंने एम्मे घबराण हुए आदमी की तरह लिखा है जा सुबह वेदार हाकर रात के म्वाव को इस म्वाफ से तरदी-जन्दी उलटा-सीधा लिख मारता है कि कहा वह जेहन की गिरफ्त स निकल न जाए।

और खुदा-खुदा करके यह चौथा मसविदा छप रहा है।

और भरे दिन् की बात आप पूछें ता यह भी कह दू कि मैं इस चौथे मसविदे में भी सतुष्ट नहीं हू। लेकिन क्या कर अब मुझमें यह दम बाकी नहीं रहा है कि दो बरस और महनत करके पाचवा मसविदा लिखू और उस पर भी कलम फेर दू।

फिर यह भी सोचना है कि भरे चल चलाव का बक्त सर पर आ पहुंचा है और यह मिमरा—नमीम जागो कमर का बाना उठाओ बिस्तर कि रात कम है दिल में गूजता रहता है। इसलिए डरता हू कि कहीं ऐसा न हो कि तहरीर ही में खुदा के फजला-बरम में मौत आ जाए और मसविदा नानामा पडा रह जाए। इसलिए अब जमा भी है यह चौथा मसविदा पेश कर रहा हू।

### क्षीण स्मरण-शक्ति

मैं कभी मजबूत हाफिजे का मालिक नहीं रहा और अब तो यह आलम हो गया है कि रात को क्या चीज खाई थी सुबह को यह भी याद नहीं रहता। कई महीने की बात है कि तारा की छाव में टहलने निकला बापसी में अपने घर का रास्ता भूल गया। वह तो बर्हिण कि मर एक् हमउम्र टहलते भिन् गए। मैंने उनमें पूछा कि यही-कही बरमानी नाम क दिनार जो एक मुम्बईवाला मवान है क्या आप उसका रास्ता पता मकन है? उन्होंने कहा, क्या आप जान साहब के मवान जाना चाहते हैं? मैंने कहा, जी हा।



जीर उन तब मर त मुन मर पर तह पहुँचा गया। रगमा हा हा उहने मुगम कहा, 'आग म पागीम-व्यागम चरग पट्ट' मैन जोन गाह्य को आगरे म रगमा था मरा नाम नसौर जहम है। जात साह्य म मरा मगम क दीजिण्णा। मैन शम क मार यह त। बापाय ति मी ही जोन हू।

और तो जीर आपना मुशिल से यरीन आण्णा ति एन राउ एन गन लिपन क राग तय रनगन की नोयन आई ता अपना तगल्लुग भूट गया। चर सैकड तन मुन पर एन धिरीन पीछा की ककिया तारी रहा त्रि घट धड करन लगा जीर अगर तार मरक क अरर-अरर अपना तगल्लुग पा न आ जाता ता यरीन जानिए मरा रम तिरल जाना।

मैन यह बात इग वास्त त्रि दी त्रि अगर मरी जिन्गी क तिसी वास्त्य म कमी-वशी या आगा-मीछा नजर आए तो उमे मरी तरफ म जान-बूझकर की गई बात न समनें और मरी हात पर तरस छाकर उम माफ कर दे।

### आत्मवधा लिखने की कठिनाई

पचहत्तर बरस की पहाड़-सी जिन्गी का अहाता करना बच्चा का मउ नहा है। मैन बुझे हुए हाफिजे क तह दर-सह पेचीन और घोर अधरा म टटोल-टटोलकर यह सफर तय किया है उन अधियारा म मर हालात इस बर उलझ और एक दूसर पर चडे हुए मिले कि यह पता नही चलता था कि कौन घटना पहले की है जीर कौन बाद की। जीर भूला का रेवड मुझे किस तरफ लिए जा रहा है। मैं फूट फूझकर बरदम रतता आगे बरता रहा अपन बुनापे को लडकपन की सीमाआ तक घीचकर ले गया लडकपन स विशोरा वस्था की ओर वाग मोडी विशोरावस्था म भरपूर जवानी और जवानी से अघेड उम के दो बयावा तय करता हुआ बुनापे के इस बीहड तक आ गया। क्या बनाऊ रस कठिन यात्रा म क्या-क्या जतन करन पडे। मैनने अपने बुनापे को बच्चा बनाकर अपन मा-बाप क जागाश म बिठाया अपने घर की अगनाई म कुलेल की पुरानी बरसाता को जगाया, अपने मदरसा और बोडिंग हाउसा म गया अपन लगेटिया वारा को पुनारा मौत की नीद सोए हुए जवानी के इतिहासकारा क कधे हिलाए अपन दूरस्थ दास्ता का इशारा स करीब बुलाया अपनी जवानी के शबस्ताना (राति गहो) म पहुँचा जहा जुल्फा की सुगंध अब तक मचल रही है और टूटे पमाना और बुझी हुई शमआ के अम्बार लग हुए और गेमुआ स गिरे हुए सिद्धर क जरें अब तक दमक रहे हैं। वहा पहुँचकर अपन विछुडे हुए माशूना को उस सिहासा पर बिठाया इद्र धनुष और आकाश गगा के रग जिसकी परिणमा किया करत थ। जीर माजी स अपने का जब डसवा चुवा तो कलम का खून म डुवा टुगेकर सब कुछ कलमबद कर लिया जीर आपनो सुनान बठ गया।

कहते है लखनऊ म एक बूढ़े मिर्जा साहब रहत थ, जिहने हजरत जाने

आलम वाजिद अली शाह की जाँचें देखी थी। एक बार चन्द नौजवाना ने आग्रह किया कि मिजा साहब कितना कुछ पुराने हालात सुनाइए। उन्होंने सीना पीटकर कहा 'लडको मुझसे बह दास्ता न सुना, वरना मेरी छानी फट जाएगी। तुम्हारी थाड़ी देर का निलचस्पी हो जाएगी और मैं पहरो के लिए बेकार होकर रह जाऊंगा।' लेकिन जब उन नौजवाना ने उनके कदम पकड़ लिए तो माजी की तरफ पलटने पर मजबूर हो गए और हालात सुनाते-सुनाते थाड़ी देर में उनका यह हाज हो गया कि गला रुग गया और हिचकिया ले-लेकर रान लग और हाथ जान-आलम' कहकर बहाश हो गए। सा बटापरवर, अपना हाल सुनाकर मैं भी इसी तरह हिचकिया ले-लेकर रो रहा हूँ। हाथ माजी के टक !!

अपने कभी के रग महल में जो हम गए  
आनू टपक पड़े दरा दीवार देखकर।

## जिन्दगी का मेला

### मेरा जन्म

मैं इस बूढ़े भर खिलगी की भोगने और बजाहिर रंगीन लेकिन धून में लय पय बंदखान में ऊपर के वास्तु पर लाया गया इन बान का ठीक-ठीक बयान नहीं कर सकता इसलिए रि मरे स्नानगान में बच्चा की जन्म निधि दज करन का रिवाज नहीं था।

अल्बता मरी दादीजात न जा यश की इतिहासकार थीं मुस मरी पदायश का जो सन् बताया था वह सन ईगवी व हिमाव स १८६६ था या १८६८, यह भी याद नहीं रहा।

बहरहाल अपनी उम्र की दा सान बग दन में मुबमान ही क्या है ? इसलिए आप यह समझ ल कि मैं १८६६ में पन्ना हुआ था। (दो बरम और बूटा हो गया, हो जान दीजिए। जूती की नाक से।)

अल्बता यह बखूबी या है कि दाती न परमाया था कि बटा, तू मुवह चार बजे पदा हुआ था।

### मेरा बचन

जाम के बागा की रोमानी और घनरी छाव में मूमता वीर की बूए मस्ताना में महकता कोमला की कूकू और पपीहा की पीहू पीहू से चहना मलीहाबा हि दुस्तान की तहजीवी जनत—लखनऊ से सिफ तरह भील की दूरी पर स्थित है।

यह खालिस पठाना की बस्ती है जिसके एक गोशे में हम लोग यानी दर्राए-खबर से आए हुए आफरीनी और दूसरे गोशे में कधार से आए हुए कधारी आबा है।

हि दुस्तान में जाकर और लखनऊ के आस पास बसन व बावजूद हमने लडाकू आदत नहीं छोड़ी। और आफरीदिया और कधारिया के दरम्यान एक लम्बी मुहूत तक तलवार चलती रही और फिरगिया न जाकर जब तलवार छीन ली तो लठ पौगा होने लगा।

हि दुस्तान आकर और खासतौर पर लखनऊ का सम्भता से प्रभावित होकर हम लोग एक अजीब गगा जमुनी कोम बन गए।

हमारे यहा एक तरफ तो लखनऊ की दुपल्ली टोपिया मसमल के

१ हम लोग आकरदी आनखल और आनखलो की एक शाय जलायन' स तालुक रखते थे।

लिहाफ, चौक का इत्र, बनीज का तल फुल्ल और मशरू के पायजामे रिवाज पा गए। और पतगवाजिया मुग्राजिया बटेरराजिया और उनकी पालिया हान लगी—और हमने 'अस्मलाम अलेकुम' के बजाय आदाय तस्लीमान, कारनिश और बदगी को अख्तियार किया। और उनके साथ-साथ बतवाजिया और मुशायरे भी हान लग और सेहन-जुवान के तसबुर ने भी आखें खाल दो

और दूसरी तरफ अल्लाह दे और वदा ल' किम्म के हगामे भी जारी रह और आए दिन का फौजदागिया और खूखारिया भी बराबर होनी रही।

मुद्ता तक हमारा यह आलम रहा कि अगर किसी राही को अचानक खासी आ जानी थी और वह किसी के दरवाजे के सामने यूक देता था ता साहब-शाना साहब लट्टु लकर गली म आ जान थे कि खान माह्य आप हमारे भवान पर यूक रहे हैं। और घूबनवाले खा साहब अकडकर जबाब दत थ कि तब नहा यूका था अब यूक रह हैं—आक घू आक यू।

और दोना के दरम्यान बडे जोर शोर से लट्टु चलन लगना था और अगर किसी शान्ती-व्याह म दो मुखालिफ गिरोह आमन-भामन छटटा<sup>१</sup> पर बडे हुक्का पीत थे तो उनम से जब एक गिरोह का आदमी कुड-कुड कुड कुड कडाक<sup>२</sup> की आवाज निकालकर हुक्का पीता था ता दूसरे गिरोह के तमाम आदमी उसे एलान-जग समझकर इससे भी वही जमान जोर मे कुड-कुड कुड-कुड कुर कुर कडाक कडाक की आवाजें निकालकर इम कदर जार मे टुक्का पीत थ कि चिल्ला से आचें निकल आती थी और इम जिद्दम जिद्दा का नतीजा यह हाना था कि पल भर म दोना तरफ क सर लट्टु-सुहान होकर रह जाते थे।

लखनऊ के कमिश्नर या गवर्नर ने मलीहावाद के बारे मे यह जुमला निहायत खूब लिखा था कि मलीहावाद दर्रा खबर का एक ऐसा अश है जिसका हि-दुस्मान म अभी तक विलय नहा हा सका।

मेरे कुल के विघटन के बाद मलीहावाद की कसर टूटकर रह गई। तीना इयोडिया<sup>३</sup> म से अब एक भी इयोडी बाकी नही रही—और मलीहावाद की धाक दम ताड चुकी है।

फिर भी मेरे मलीहावाद के तबेर अभी तक एकन्म मिटने नही पाए हैं। हरचंद जमींदारी और ताल्लुकदारी का खात्मा फिजा पर एक खनरनाक सनाटे की तरह छाया हुआ है। मगर लोग म पठनीली का दम-धम और सिपहगिरी का तनतना आज तक बाकी है।

अब मलीहावाद की हालत लखनऊ के उन मोर साहब की-सी है जा शबाब म इस कदर खूबरू और गवरू थ कि बडी-बडी नक्चडी परी जमाओ के गरूरे-जमाल की पिडलिया उनके स्वरू कापने लगती थी। शबाब ढलन क

१ ऊपी और चीनी चारपाई

२ मेरे बाप और मेरे दोना चचाओ का इयाजिया।

वाद जब वह किसी शहर की सराय में जाकर ठहर और बरामन् में बठकर हुक्का पीन लग और भठियारिया की लट्ठिया उनक हुक्का पीन क अगज और हर कश पर उनक गाला के गला पर हुसन लगा ता उहाने झल्लाकर कहा हस लो ! कट्टी छोकरियो जो भरक हम ला । अगर जवानी में तुम मुन देख लती तो हाय मेरे अल्लाह हाय मर अल्लाह कहकर जमीन पर बठ जाती और छलछलाने लगती ।

### मेरी हवेली का भीतरी वातावरण

हर तरफ राशनी थी रगीनी थी चहल पटल थी लौडिया बानिया, मामायें असील मुगलानिया जनायें खिलाइया उस्तानिया पखा की डोरिया खीचन और राता को कहानिया सुनानेवालिया चारा तरफ चलती फिरती और हमती-बोलती नजर आती थी ।

इस मुस्तकिल आवाजी के अलावा शरीफ घराना की गरीब औरतें भी चंद अच्छे दिन गुजारने के लिए आए दिन बतौर महमान आता एक-एक दो दो महीने रहती और जब चली जाता ता नई मेहमान औरतें आकर उनकी जगह पूरी कर लेती थी ।

### बाहरी वातावरण

खिदमतगारा खाबन्गारा, फर्राशा, सिपाहिया मौलविया मास्टरा मुसाहबा, दास्तागोआ मुशिया, जिलानारा और कार्रिदा का हर तरफ एक हगामा सा बरपा रहता था ।

उनके अलावा बाहर के और लखनऊ के शायरा में से दो चार हमेशा बतौर मेहमान रहत और आए दिन मुशायरे हुआ करते थे ।

और हम बच्चे मजा लिया करत थे अपने घर की हथिनी से, जिसको हम गन्ने खिलाते तो वह झूमती । और जब हम उसको 'नूरी अडा कहकर चिढाते थे तो वह गुस्से के मारे जजीरें तुडाने लगती थी ।

### मेरा परस्पर विरोधी स्वभाव

कुछ समय में नहीं आता कि मैं बचपन में था क्या ? शोला था कि शबनम हूँद' था कि हरीर', नोके-खार था कि बरगे गुल खजर था कि हिलाल चगेज खा का अल्मवरदार था कि रहमतुल आल्मीन का परस्तार ?

एक रख तो मैं इतना गुस्सल था कि जरा-जरा सी बात में आप स बाहर हो जाता और जो भी सामने आता उसीको फाड़ छाया करता था ।

और एक रख से इम कदर मेहरबान और फरागदिल था कि दूसरा के वास्तु बड़ी से बड़ी कुर्बानी के लिए आमादा रहता था।

मेरे गुस्से का यह आलम था कि साथ खेलनेवाले बच्चा से अगर किसी बात पर बिगड़ जाता तो बेंत मार मारकर उन बेचारा की छात्र खींच लिया करता था।

और जब मास्टर बनकर अपना पढ़ा हुआ सबक साथ के बच्चा को पढ़ाता और दूसरे दिन उसे उनसे दोहरवाना और वे दोहरा न सकते तो उनको डडा से पीटता और उनके कंधा पर सवार होकर उनको बच्चरा की तरह इस कदर सरपट दौड़ाया करता था कि उनकी जान पर बन जाया करती थी।

अपनी छोटी बहन अनीसजहा से तो मेरे ऐसे-एसे जबदस्त हंगामे हुआ करते थे कि अल्लाह की पनाह! वह भी बचपन में मेरी ही तरह बदमिजाज, जल भड़कनवाली और चिड़चिड़ी थी कि लडा में वह मेरा गुरेवान पकड़कर धाक कर लेती और मैं उसके झांटे पकड़कर पक दिया करता था।

हर तीसरे चौथे रोज अनीस से मेरी महाभारत हुआ करती थी और अगनाई में कुए के गिर्दों पेश का हिस्सा हमारा पानीपत का मदान था। और ऐसा मदान कि अगर मामाये, असील आकर हमें छुड़ा न देती तो हम एक दूसरे को हलाक करके रख देते।

मेरी मा अपने बच्चा में सबसे ज्यादा मुझे चाहती थी। और दूध और शहद का प्याला रोज सुबह मुझे अपने हाथ से पिलाया करती थी। अगर किसी दिन दूध के प्याले में कोई जरा नजर आ जाता था तो मैं कम्बख्त तड़से प्याले को जमीन पर पटक दिया करता था और वह रोने लगती थी।

मैं अपने बाप से बैहद डरता था, और इस कदर कि जब उनके सामने जाता था तो मेरी चाल बदल जाया करती थी। लेकिन इसके बावजूद जब एक रोज मैं खरबूजे की फाँकेँ चाकू की नोक से उठा उठाकर खा रहा था और उन्होंने डाटकर यह कहा था कि यह क्या कर रहा है गर्ध, चाकू की नोक अगर तालू में चुभ गई तो नाचता फिरेगा सार घर में, तो मुझे इस कदर गुस्सा आ गया था कि मैंने बाप की तरफ चाकू इस तरह निशाना बाधकर फेंक मारा था कि अगर वह उनके सीने में चुभ जाता तो लहू लुहान हो जाते।

इसी तरह मैंने एक बार और भी अपने बाप के साथ गुस्ताखी की थी।

मेरे बाप का ससुरी के साथ यह हुकम था कि हम बच्चा में से कोई भी उनकी इजाजत के बगर फाटक से बाहर कदम न रखे, और जब हम बाहर जाने की इजाजत दे देते तो चार-पाच सिपाही हमारे साथ कर दिया करते थे। एक रोज वह बाग तशीफ ले जा चुके थे इस बात से फायदा उठाकर मैं मशीर अहमद खा गयपुरी के घर, जो बिलकुल मेरे फाटक के सामने था, चला गया। मशीर खा की मा अपने पोते यानी मेरे दोस्त मुस्तार को खाना

खिला रही थी। मुझे भी उन्होंने दमनमान पर गिठा लिया और अपन हाथ से लुभम बना-बनावर भिड़ो खिलाई।

जब मजे की भिड़ो खाकर घर आया तो देखा कि मेरे बाप बाग से आ गए और आराम कुर्सी पर लटे हुए हैं। मुझे देखत ही उन्होंने तयारी चढ़ाकर पूछा, 'कहा गए थे?' मैंने कहा 'मशीरखा के घर।' उन्होंने पूछा, 'और मेरी इजाजत के बगर?' मैंने कहा, 'आप कहा थे कहा?' उन्होंने कहा 'मेरे आने का इन्तजार करत। और अगर गए भी थे तो सिपाहिया को साथ लिया हाता। मैंने कहा, 'मिया दो कम्म व लिए सिपाही ले जाकर क्या करत। उन्होंने चिढ़कर फरमाया, 'मुझसे दलील करत है। वह उठे और हरोती की पतली-सी जरीब इस जोर से मेरी पीठ पर मारी कि मैं बिलबला उठा और इन्तहाई दद के आलम में मुझे नालायक की जवान से निबल गया, 'अल्लाह कर मेरे जाए मिया।

यह सुनते ही मेरे बाप गुस्से के मारे दीवाने हो गए और जरीबा पर जरीब मारन लग। वह तो कहिए मरी दालीजान आ गई और उन्होंने मेरे बाप की पुश्त पर लकड़ी मारकर कहा 'क्या मार डालेगा बच्चे का?' और मेरे बाप ने फौरन हाथ रोक लिया।

मानूम नहीं क्यों भगर 'मिया बसन्त' से मेरी चिढ़ थी।

एक रोज मेरे बाप के कमरे में एक बड़ी खोपनाक दाढ़ी के मौलाना बड़ा-सा पग्गड बांधे और मोटे तार की ऐनक लगाए किसी मसले पर गुपतगू कर रहे थे कि मैं उधर आ निकला। मुझे देखत ही मशीर खा ने उन मौलाना के कान में कुछ कहकर मेरी तरफ इशारा किया, मौलाना ने झपटकर मुझे गोट में उठा लिया और मेरे सर पर बड़ी शफ़कत से हाथ फरकर कहा 'क्या मिया बसन्त क्या खाओगे?' यह सुनते ही मैंने उनकी दाढ़ी पकड़ ली और उन्हें मार डालूंगा' का नारा लगाकर इस जोर से उनकी दाढ़ी को झटका दिया कि उनका पग्गड ऐनक समेत जमीन पर गिर पड़ा। उनके मुह से 'ददनाक' चीख निकल गई। मशीर खा हसत हसते बेदम हो गए। मेरे बाप ने जोर लगाकर उनकी दाढ़ी मरी गिरफ्त से छुड़ा दी, और मैं उफ उफ उफ करत बाहर निकल गया।

एक रोज मैं अपने फाटक पर बड़ी-सी हवाई बन्दूक भरे खड़ा हुआ था कि एक नाई का लड्डा मेरे सामने से गुजरा लेकिन मुझे सलाम नहीं किया। उसकी इस गुस्ताखी पर मुझे ताव आ गया। मैं उसपर दन्-से फायर कर लिया। बड़ा सा छरी उस बेचार की पीठ में खुभ गया और वह गिरकर तड़पन लगा। और मुझे निदमी न उसके तड़पन पर रहम खान के बदल उसकी पसली पर ठार मारकर कहा 'जबे दो बौड़ी व नाई उठ और सलाम कर। जब वह गरीब कराहता हुआ उठा और खुबकर मुझे सलाम किया तो मरा गुम्मा ठंडा हो गया।

एक रोज़ याद नहीं किसी खता पर मैं अपने घर के गुलाम हुसनब्रदश को जनाने मकान के सेहन में खड़ा मार रहा था छडिया से तडातड-तडातड कि डयाडी से दादा मिया तशरीफ़ ले आए। दम निकल गया उन्हें देखकर, कि अब वह मुझे मारें या डाटेंगे। लेकिन यह देखकर खुशी भरी हैरत हुई कि दादा मिया मुसकराते हुए आए। मेरा हाथ पकड़कर मुझे मेरे बाप के कमरे में ले गए और मेरे बाप से कहा 'बशीर, मैं तुम्हारा मुबारक-बा' देना हूँ कि तुम्हारा यह भइला बेटा बड़ा सूरमा निकलेगा और बादशाहा तक से टक्कर लेगा।' जब मेरे बाप ने पूछा 'बाबा, यह अन्दाजा कैसे हुआ?' तो उन्होंने फरमाया, 'यह गुलाम को मार रहा था और ऐसे तबरा से मार रहा था कि सूरमा के सिवा ऐसे तेवर किसी को मयस्सर नहीं हो सकत।

'बशीर, हम पठान हैं। सूरमा और बुखदिलो के तबरा का हमसे ज्यादा और कौन समझ सकता है और इसलिए कि—सौ बरस से है पेशाए-आवा सिपहगिरी।

और फिर मुझमें इरशाद फरमाया कि बरूने-बाबा मैं दो गाव बरूहे-रास्त तेरे नाम लिख दूंगा। ले ये दो गिन्निया, इसकी मिठाई खाना और इमम से पाच रुपये उस गुलाम को दे देना जिसका तू अभी मार रहा था।

आपने मेरा गुस्ता देख लिया अब मेरी फरागदिली का रुख भी देख लीजिए।

मेरे बचपन तक मेरे घर में चाय का रिवाज नहीं था। नाश्ते में हम निहायत खस्ता रोगनी रोटिया बालाई और अडे खात और शहद मिला खालिस दूध पिया करते थे। जाडा के जमाने में नाश्ते के बाद जब हमारी जेबा में छिले चलगोजे अखरोट की गिरी, किशमिश, बादामा का मज्ज और साफ़ किए हुए पिस्त भर दिए जाते थे तो मैं बाहर आकर आवाज दिया करता था—'बफ़ के छुडब्वियो चलो!'।

पहले इस नारे को समझ लीजिए।

मेरे दादा के बफ़खाने की छत पर मिटटी के कोरे बरतन मसाशर लगाकर रख दिए जाते थे जिनमें पिछले पहर तक बफ़ जम जाती थी और मुह अघेरे बफ़खाने के आदमी पुकारत थे मजदूरा को—'ऐ बफ़ के छुडब्वियो, चलो। ऐ बफ़ के छुडानेवालो आओ।' और वे मजदूर आकर बरतना से बफ़ खुरच-खुरचकर छुडते और खत्ता में बूट-कूटकर भर दिया करते थे। और इन खत्ता में जस्त की सुराहिया दबा दी जाती थी। यह समय लेने के बाद अब यह मुनिए कि ज्याही मैं 'बफ़ के छुडब्वियो चलो!' का नारा लगाता था तो लौंडिया और मामाजा के तमाम बच्चे दौड़-दौड़कर मेरे पास आ जाया करते थे। और मैं ऐ मेरे टाघनो चने चवाओ! यह बह-बहकर अपना सारा मेवा उह खिला दिया करता था।

जब कभी समदा तालाब के जागी मुह अघेरे यह गीत गाते हुए मेरे दरवाजे पर आत थे—





ले बेटा तरो अना आ गई जीर मैं उस गुडिया से चिपटकर सो जाया करता था ।

एक रोज जबकि बड़े धूम धड़कने से रिम विम पानी बरस रहा था, ओलौतिया टपक रही थी, परनाल धना धड़ चल रहे थे अगनाई के भरे हुए पानी में जा-बजा भवर पड़ रहे थे कि मुहम्मद शेर खा मिपाही ने लहक लहक कर मल्हार गाना गुरु कर दिया

मग्नमाहन विन कल ना पडे रे—अरी ओ सखी, अरी ओ सखी

हाय भीगे दरो दीवार मस्ताना बोछार बनी का सितार, पीहू की पुसार, विरह की झकार और मुहम्मद शेर खा का मल्हार—खुश ही जाने क्या चोट लग गई मेरे मामूम दिल पर कि मैं राने लगा जारो कतार ।

अभी मैं बरखा की बड़ी जीर मल्हार के चूले में झूल ही रहा था कि सारा मजा विरार कर दिया जहूरअली खा न यह कहकर कि मुहम्मद शेर खा तुम्हें खा माहन बहादुर (मेरे बाप) बुला रहे हैं । मैं हाय करके रह गया, खन से चक्काचूर हा गया मेरा सागरे-मरशार (भरा प्याला), जीर चट स नूट गया मरा वमा वम का तार ।

जीर जब मैं यह सुना कि मेरे बाप शर मुहम्मद का जोर जार स डाट रहे हैं कि मैं कहा था कहार बुला लाओ और तुम अभी तन नहीं गए ता मैं छतरी लगाकर अपन बाप के कमरे में जाकर वे अखियार रोने लगा । मेरे बाप ने बड़ी हैरत से पूछा— बेटा, किस बात पर रो रहे हा ?” मैं एक स्वर कहा, ‘मिया यह मुहम्मद शेर खा यह कहते ही मेरी आवाज रुध गई । मर बाप न चारपाई से उठकर मुझे घुटने पर बिठा लिया और बहुत चुमकारकर पूछा— बेटा जल्दी बनावो क्या बात है ।

मैंने रआमी आवाज में कहा— मिया पेटे का पानी बरस रहा है । यह मुझे अभी मल्हार सुना रहे थे और अब इनपर डाट फटकार हो रही है ।

यह सुनते ही मिया ने मुझे छाती से लगा लिया और कहा— बेटा तू आगे चलकर शायर हा जाएगा जीर हमारे खानदान का नाम तुझसे रोशन होगा मुहम्मद शेर जाओ इस मल्हार सुनाओ और जहूरअली को भेज दो कहार बुलाने के लिए ।’

मैं अपनी पचासी बरस की खिलाई अबासी खानम का जिक्र कर चुका हू जिहू मैं बड़ी बी’ बहा करता था । हम दोना एक दूसरे पर जान न्याछावर करत थे । मुझे बरफी बेहद पसंद थी । और कुजा या बिल्लाह हन्वाद की दुफान से हर मुवह को बरफी का एक दोना आ जाया करता था । यह क्याकर हा सकता था कि मैं बरफी खाऊ और बड़ी बी को न खिलाऊ—जीर यही नहीं मेरी यह तमन्ना होती थी कि आधा दाना मैं खाऊ और आधा दोना अपनी बड़ी बी को खिलाऊ । लेकिन मरी उल्टी खोपड़ी में यह बात नहा आना थी कि बड़ी बी की-मी फूसी बूनी औरत आधा दाना क्या



## मेरी विस्मिल्लाह

अरे मैं अपनी विस्मिल्लाह का हाल लिखना तो भूल ही गया। इस पढ़ने ही जाना चाहिए था। खैर अब सुन लीजिए। जरा भी तो बात ही है। उस मौके पर क्या-क्या रस्म हुई थी, विस्तार से यान् नहीं है। बस इसी कदर खयाल है कि कम उम्री मैं मेरी विस्मिल्लाह हुई थी। चान्नी की थाली में सोन की त्वात साने के खोल का कलम और कुरआन मेरे सामने रखा गया था और मने सबसे पहले अध्यापक मौलवी नयाजअली खा ने मुझसे कहा था— मिया साहबजादे, कहिए विस्मिल्लाह। इसके बाद हाजिरीन के गला में हार डाले गए थे और मिठाई तबसीम की गई थी। दादा मिया भी मौजूद थे जिन्होंने बुलंद आवाज में यह मिसरा पला था—

कलम गीयद कि मन शाहे-जहानम।

(कलम कहती है कि मैं सप्ताह का सम्राट हूँ।)

उसी रात को जनान में डोमनिया का गाना और मदनि में तवाइफ़ा का मुजरा हुआ था—और मुझे दूल्हा बनाकर बीच में बिठा दिया गया था।

मेरे उस्ताद

मरे फारसी व उस्ताद थे मौलवी नयाजअली खा उदू के मौलाना ताहिरअली, अरबी के मौलवी कुदरतुल्लाह बेग और अंग्रेजी के थे मास्टर गोमतीप्रसाद।

मौलवी नयाजअली खा एक रूबे खुशक मिजाज आदमी थे। मौलाना ताहिरअली बड़े ही खुशदिल थे और शायर भी। उनका यह एक शेर अब तक याद है —

शाहरा जो मुना हुस्न का ताहिर की जवानी,  
नानीदा मैं आशिक हुआ, तुझ पर मिरि जानी।

मौलवी कुदरतुल्लाह बेग फारसी और अरबी के प्रफ़ाट पंडित थे। मरे पास उनकी एक मसनवी मौजूद है जिसमें लगभग पाच हजार शेर हैं। और अचरज की बात यह है कि इस मसनवी के तमाम शेर ऐस हैं कि उनमें एक लफ़्ज़ भी नुक्तादार मौजूद नहीं है जिससे अदाआ किया जा सकता है उनके अयाह शब्द भंडार का।

अब रह मास्टर गोमतीप्रसाद सा वह बड़े ही मस्कीन और खामोश आदमी थे। लेकिन इस ढंग से पलात थे कि अक्षर-अक्षर मन पर अंकित हो जाता था। उसके बहुत लिन के यान् मेरे बाप ने हज़रत मानी जायसी को मेरा ट्यूटर मुकरर परमाया था।

## सूर्योदय का प्रथम दशन

हमारे घर के जदर चुटबुला नकला और कहानिया के कारण दिन रहता था रात के ग्यारह बजे तक, और रात रहती थी दिन के बारह एक बजे तक । इसलिए इस माहौल में पला हुआ बच्चा वाकफ ही कस हा सरता था सुबह की रमीनिया से ?

मेरे बाप खी और खरीफ के जमाने में अपने इलाके के दौरे पर तशरीफ ले जाया करते थे और उन अवसरा पर वह सो रहत थे आठ नौ बजे रात का और जाग उठत थे सुबह तीन चार बजे ।

एक बार जब वह दौरे पर जानेवाले थे तो मने दरखास्त की थी कि मिया हम भी अपन साथ लेत बलिआ। तो उन्होंने मेरी दरखास्त मजूर करके बुजा लहाजत को नियुक्त किया था कि मुझे बहुत तडके जगा दें ।

जब लहाजत बुजा ने बहुत तडके मुझे झसोडकर जगाया कि भया उठ बडो मिया के साथ गाव जाना है तो मैं उठ बैठा और आँखें मलकर निगाह उठाई तो बडी हैरत के साथ जब यह दखा कि गगा जमनी परिया नकावा के सेहरा को चुटकिया में तोल रसमसाते आसमान से कसमसाती जमीन की तरफ उडती चली आ रही है, तो मर दिल ने पूछा अरे यह हो क्या रहा है ?—नि है न रात अधेरा है न उजाला—अधेरे में उजाला—उजाले में अधेरा—एक तरफ मलमल कमलवाय सुरमा काजल गेसू मलमल करव और रशम और एक तरफ सलमा सितारा गोटा किनारी सोता चानी मरमर लकवा पटठा, अबीर और गुलाठ फिजा पर सुनहर तारा का जाल और बडा जाहिस्तगी के साथ उभरता हुआ कुदन का थाल ।

छलाँग भरता नीम के पींच गया । शाख पर चटचहाती बिडिया भरा माखर उड गई । हाथ फलाजर नीम का छाती से लगा लिया । टाली को बुकाकर उसकी पतिया को चूम लिया—नीवातावार मगन में पन्चा । दखा कि म्याना सहन में रखा हुआ है । कहार बिलम पी-पीजर खास रह है । उनकी छामी भी अच्छी लगी । सिपाही का इंग इगालन्लाह कहतर मुह धो रह है । उनका छपना की आवाज न दिख मोह लिया । पाख के करीब घाड दुम हिला रह है कुए के पास खडी हुइ हथिनी झूम रही है अगव के गिद पामी बडे ताप रह है अलाव की उछलनी आंच में जुहरा की कमर लकन रही है और यह सास समा दंड के जखडे में तनीठ हा गया । मैं वहीँ चकारे के मानिख दौखर मामन के कमर में दाखिल हा गया । कमरे की समोइ सनी-गमीं स निशुशहा गया । मैं जरा-सा मुडकर और एक कस-आत्म आदि के सामन जाकर अपना मुह देवन ला । गाग पर मुर्ती के हत्यार बाया में गुलाजी डोरे छररा बन्न पतली कमर फनरे बाल, पतन्जन हा लम्बी-लम्बी पलके—ह पर रशमी बुर्जा कुर्ते पर हद भरा मयमला सन्नी,

सर पर आड़ी जनेली टोपी टोपी के गिद आगर का मुनहरा फीता और दाहिन कान म हिलता हुआ सोन का झलझल, उफ में किस कदर हसीन हू। जि दमी म पहली बार इसका पता चला। अल्लाह भला कर पो फट की रगीनी का जिसन भरे छिप रूप को मुझ पर जाहिर कर दिया।

### गाव का पहला दृश्य

किरन फूत ही हमारा काफिला चल पडा। मेरे बाप आठ बहारावाले म्यान म जिलेदार और सम्बन्धी घाडा पर, मेरे बड़े भाई मशीर अहमद खा रामपुरी और मैं हयिनी पर बाकी तमाम खिदमतगार मिपाही और गुडीत (गोन्त) पदल।

पाच छ मील का सफर तय करके हमारा काफिला मयदपुर म दाखिल हुआ ता, चूकि इससे पहले मैंन कभी गाव नेखा ही न था मेरी आख खुली की खुली रह गई। अल्लाह-अल्लाह जहा तक नजर जाती थी, यूमत लहलहात और गुनगुनात खेत आर खेत म धरती माना की उगी हुई तमनाए। बीच-बीच म खम खानी पगडडिया चलती बडिया और पराहिया की बनीलत गहरी-गहरी नालिया म शहर क चूल्हा को आग बग्घनेवाले बहुत पानी की कुड-बुड-बुड-बुड मुनहरी और मुलायम किरणा स भी की लहरा की झलमल-झलमल किनारे पर खूबमूरत मुग्गात्रिया की कतारें पर तात्ती हुई और लहरा म उनकी रह रहकर डुबकिया। और मुगायम कथा पर खेत की तरावट, और बालिया की खुशबू उठाए हुए ठडे चाका की पाकीड़गी और एनाफत—और खेत स दूर कच्चे-कच्चे लिये पुत भजाना छपर ऊचे-ऊचे खलिहान—निबाइ करनवाली जवान-जवान औरतें आर लन्दर गूजर छोररिया, उधर तूपान इधर उठान। इतने लाल-भी लहग, ऊनी ऊनी चुनरिया मेहनत के पाले हुए छलमत शाशव चेहरे और गठे गठे चटवन वन एम बदन वि पूरी तरह बसमसावर जगडाइ आण ता जिल मसकर रह जाए और दयनवाल क लिल म यह आरजू धूम मचाए कि दह छूकर भी दख लिया जाए कि य बनी हैं फिन सत्त्वा स। यह समा दखवर मेर मौन की तमाम पिडकिया खु गइ—रग रग म उल्लाग क फवार छूट लग, निचल पपाटा क नीर खुनकी दौड गई आखें जस एकात्म म बटी हा गइ निगाह चुकी ता अपन चहरे की गुर्छी नजर आ गई पार पार म ताजगी जगुलिया उटपान लगी माम न्न का गर-महमूर अम एव महसूस अय्याशी बन गया और मेरे जिन्म क अन्दर पो फन लगी। सबरा हा गया।

इसी आरम्भ म हमारा काफिला मना के पवान-यम म गुजरता सवना धरती चूमनवाल सलामा का मिफ सर हिलाकर जवाब दना—हयिनी की बार-बार बन्ती हुई मूह म टूटत गना की चटाव चटाव मुनना बारे पिडा

वा कच्ची-नच्चा लपटा म झूमता और पापा की झटका लपटा मारता था नारे मुरागीनर गता जा पापा-पानी बघरा की लतर लपटा हुआ जाग्रित था! गहूत गया।

हमार था लपटा ही रया जोर-जोर आा जोर हम राना भाया क पाप हू लतर नजरता न लगी और हम लजरान क रया का मामा मुने तप्त पर घटी बगरयागी क गाय राना-परी और लता लत फेरन लग। घोना लर म प्याज क कता क म बमता गितता का तग पर जम्मार लग गया पन्नी भी बत गद।

रयन जय रयव बग्गा चुरी तो सयन्नापुर क ठिगा महाज्जा—भन्ना शा हाया म माा की अगूठिया पन्ना और चाना क शाम और लान क गन्ना की हृत्वती बाधे पुन पुन आण—अपन नौरर क सर स रपया का भरत हुआ चागीनर था उतारा—उम हम राना भाइया क गर पर मन्के क नौर पर तीन मतवा धुमाया और फिर एक बट पनार क साथ थाल का तमाम रपया फग पर गिरा लिया। घाग्मि चानी के घनकत रयव फग पर इधर-उधर नाचन दीडने लग और हमारे नौररा ने रीत क अनुसार क तमाम रपय सूट लिए।

अज दोपहर क खान का वसन आ गया। जबअत्री फडीर दस्तरखान पर अपन हाथ का पकाया घाना चुनन लगा और दम भर म हमारे मुरान अहीर और ब्राह्मण वाश्तवार अपने-अपन सरा पर पकवान उठाए हुए आण और देखत ही देखत हमारे सामने पूरिया, कचौरिया, भाति भाति की तरफारिया तली मछली के टुकडा, गुलगुला, फलकिया दूध-दही की हाडिया मिठाइया और रसावली की बडी-बडी लुटिया का एक अम्बार लग गया।

घान के बाद मेरे बाप हस्वे मामूल अदर के कमरे म जाकर सो गए। मैं भी थकान के कारण चाह रहा था कि थोडी देर के लिए लेट जाऊ कि बाहर से आत्मगीर फुप्पा की गरजती जावाज सुनाई दी। बाहर गया, तो देखा कि एक सर स पाव तक झुरिया म लिपटा हुआ वाश्तवार अपने बेटे क कंधे पर हाथ रखे फुप्पा से अपनी जवान म यह कह रहा है कि घान साहब बहादुर आप खुद मेरी सामन खडी हुई बीबी को देख लें। उसे सूखे का रोग लग गया था। उसकी दवा-दारू न मुझे खाक कर दिया है। आधा लगान अभी ले लीजिए, आधा दूसरी फसल पर अदा कर दूंगा।

उसका यह उज्ज सुनकर फुप्पा ने एक मोटी-सी गाली देकर कहा— 'अब एक जाना भी कम नहीं लूंगा पूरा लगान अदा कर पूरा।' उस बूढ़े फूस ने धरयगती आवाज में कहा— भगवान की कसम आधे लगान से ज्यादा भरे पास एक झुजी कौडी भी नहीं है। यह सुनत ही फुप्पा उठे और एक थप्पड उसके मुह पर इतन पनाट स मारा कि बट घडाम से जमीन पर गिर पडा। उसकी मुरझाई हुई बीबी की आखा से फुल फुल आसू बहने लगे उसने बेटे ने

शम से आखे चुका ली। गिरे हुए बूढ़े ने अपनी रोती हुई वीवी और बेंपे हुए वेवस लटके का एसी नजर स देखा कि मेरी सास भरे गले में उल्टव गई और फिर एक नदनाक चीख मारकर मैं थान म दाखिल होकर अपन माए हुए वाप के सिरहाने जाकर खडा हा गया और हिचकिया ले-लेकर रान लगा। मरी हिचकिया मे उनकी आख खुल गई और इतहाई घबराहट के माय उहाने मुयसे पूछा— जरे क्या हुआ, जरे क्या हुआ ?

मैंने उम बूढ़े किसान की हालत और फुप्पा की निष्ठुरता का साग माजग क्यान कर लिया। मेरे वाप की आखें नमनाक हो गई। सालह मुहम्मद या को हुकम दिया कि उस बूढ़े किसान को मेर पाम बुला लाओ। वह रूठ मरे वाप के कत्मा पर गिरकर कहन लगा—‘ दुहाई खान बहादुर साहब की !’ इतने म उसकी वीवी भी अपन बट के साथ आ गई और व दाना भी फूट फूटकर रोने लगे। मेरे वाप न उह तसल्ली देकर गुडीन को हुकम दिया कि मातादीन पटवारी को बुला लाओ। पटवारी आ गया ता उहाने फरमाया— मानादीन स्याहे म इस निमान के लगान की पूरी दवाकी दज कर लो और दसी वक्त रसीद इसक हवाले कर दो।’

बूढ़े किसान उसकी बीमार वीवी और उसके बटे की आखें गुत्रिये के आसुआ की सडी बरसान लगा। मुझे ऐमा महमूम हुआ जैसे किसी ने मेरे लिङ क घाव पर मरहम रख दिया हो। और जब वे तीना आदमी जय खान साहब बहादुर की ऐ भगवान खान साहब बहादुर का राज गग धार तक रहे, कहते चले गए, तो मर तमाम रागटे खडे हा। ए। मुयें अपन वाप की सूरत और भी अच्छी लगन लगी और आलमगीर फुप्पा से एमी नफरत हुइ कि जब मेरा जमाना आया तो मैंने बडे लतीफ हीले के साथ उससे जिलदारी निवालकर अपनी फुफेरी बहन के बट स्वाजा हसन खा के सिपुद कर दी। लकिन वह भी घुरे सारित हुए। फुप्पा नगी तलवार धे ता वह मीठी छुरी निकले। गरज कि रयत को आराम नहा मिन्न सका।

### मेरा खतना

लीजिए अपना बिम्बिल्लाह की तरह मैं अपने खतन (मुन्नत) का भी जिक्र करना भूल गया आगे—बहुत आग निकल गया। क्या करू अब सुनाए देता हू काँ पनवाडा ता है नहा। मेरा खतना कम उम्रो म हुआ था और खूब याद है कि दादा मिया न फरमाया था कि दख बग रोने की आवाज मूह स निकलने न पाए। लकिन लाल दादी के जासली हज्जाम न घाडी सन कर जब पट से मेरा खतना कर लिया—मरी चीख निरग्न गई थी। दादा मिया के माये पर बल पड गए थ और मैं शम मे गडबड रह गया। आज भी दादा मिया के माये के बल जय याद आत हैं तो दिल पर क्यारिया-भी चग्न लगती हैं।



हरन मरे सतों की रसम बड़ी घूम घाम ग भार्द गई थी, दगें चड़ी था, तपाद्राग क मुजर हूण ध, कश्मीरिया न नरन की थी । मगर मर दि का कली मुग्धाई ही-मी रही थी । इग मुग्गात क का कारण थ । पत्रा कारण तो वही मरी गतन क कन की चीग थी और दूमग कारण यह था कि मर सतन की खुशी म त्रिम कत मगीगगा क का लाशर न एत बड़ी खूब खूरत और शलमलाती तिरफ बाओ तजर वेग की थी ता उस तिरन का हाय म लत ही मुग पर गमा जनू (उमग) तारी हा गया था कि मैंन आन गुलामजागे हुमानकग के नग सर पर खर ग मार दा थी । और उग कचार के सर स चल चल खून बहन लगा था । धर उगरी ता सुरत मरहम-गन्गी और उसक बाप की मुह भार्द पर दी गई थी । लतिन मर दि का पात्र भर नहीं सता था और मुझे खूब याद है कि कश्मीरिया की हगानवाली नरन भी मुझे हसा नहीं सारी थी । लिह ही ता है ।

## लखनऊ का पहला सफर

हमारी गाड़ी अकबरी दरवाजे के सामने जाकर खी हो गई और हमारा सामान बामदाली सराय में जान लगा। लखनऊवाले हमारे अफगानी खदरो-खाल डी-डील, हमारे सिपाहिया की सज घड़, उनके बड़े-बड़े पगड उनके मोटे माट लट्टु देखन के लिए ठट लगाकर हमारे गिद जमा हो गए।

मैंने अकबरी दरवाजे के अंदर कदम रखा तो देखा कि इस चौड़े चकले दरवाजे के दायें-बायें लकड़ी के तख्ता पर मिट्टी के इस कदर सजल सुदर मुक्क जोर नाजुक खिलौने ऊपर-तले रखे हुए हैं कि उन्हें देख यह खयाल होन लगा कि करीब जाऊं तो हर खिलौना पलकें खुलाने और बातें करन लगेगा और गुजरिया भाव बतान लगी और सक्का का अगर जरा-न्हा भी छू लिया तो उनकी भरी मसक्का से धल धल पानी बहन लगेगा।

खिलौने खरीदकर तब मैंने चौक में कदम रखा अगर और लावान की लपटा न भरा स्वागत किया। आग बला ता चानी के बक बटन की नपी-तुली आवाज न भर पाव में जजोर डाल दी। वह व्यवस्थित और संगठित खटा-खट एमी मालूम हुई जस तबले पर बाल बट रह हैं। फिर हारवाले की सुरीली आवाज आइ हार बेल के फूल चम्पा के 'बहा से आग बटा तो क्या बताऊ क्या क्या देखा ? हाय तवालिया की वे झिलझिलानी नितरी कुलाव, व दुपल्ली टोपिया व शरवनी अगरसे व घन घने पठठे व चूडीदार पायजाम कघा पर व बड़े-बड़े रश्मी तमाल आडी निरखी भागें, बल्ला में दबी हुई सुगंधित गिलारिया साबिया और साबिना के हाया में व खुशबूदार तम्बाकू के हुक्रे हुक्का पर व लिपट हार, हारा से पानी के कतरा का वह टपकना व यज्ञत कपड़े, व सारगिया की धरधराहट व हवा में हल्कार व गमकत हुए तबल बालाखाना के सज्जा से वह मुखड़ा की बरमती हुई चालनी और जुलिफ के गिरन हुए म्याह जावशार (प्रपात), काठेचालिया में काइ गारा काई चम्पद काई सावली-मगानी खदरो-खाल इम कदर बारीक गोया हीर के कलम से तरागे हुए काई कड़ीमल जवान काइ नौजवान और काइ इन दाना व दरम्यान, गाया हुमकती हुई उठान, काइ गठे जिम्म की और काई घान पान—विमी की नान में नय किसी की नाक में नीम का निनका तमाशादया का हुजूम, शान से शान छिन्न रल और काठा पर नऊर जमाए हुए विपरीत दिशाआ में आन जान वाला के मोना का टकराव और टकराव पर वह विनीत क्षमा-याचना। मैं अभी इम निलिस्म के दरिया में गोन खा रहा था कि मगीर पान में मरा हाय परडवर अपनी तरफ खींचा। मैं विनारे पर जा गया। सारा निलिस्म टूट गया। और मैं सबके साथ, मिया के पीछे-पीछे सर खुवाकर सराय आ गया।

सराय में नदम रखते ही दम-सा घुटने लगा। मैंने बड़ी लजाजत के साथ कहा—  
‘मिया, हम सिपाहिया को माथ ठेकर नीचे घूम आए?’ मशीर खा मुस्कराए  
और मिया ने बड़ी भयंकर सजीदगी से कहा—‘चीज बच्चा के टहलन की जगह  
नहीं है।’ मैं कलेजा मसोसकर रह गया।

इतने में सालह मुहम्मद खा डार<sup>१</sup> का साथ लिए आ गए। उसने जस्ता की  
बड़ी बड़ी कुल्फिया का दाता हाथा की हथलियां म बड़े माहरना अदाज से  
घुमा घुमाकर और बालाई व कागजी आबखोरा को मिटटी की सौधी सौधी  
खाकिया में छाल-छालकर पेश किया। और मिटटी के बोरे-बोरे चमचे  
भी सभने रख लिए। क्या बताऊ इन कुल्फिया और आबखोरा  
की लज्जत और मुलायमत जबान ने इससे पहले कभी कोई ऐसी चीज  
चखी ही नहीं थी। उनके मजे का बयान करू तो क्याकर? उपमा दू तो किस  
चीज से?—और मुनायमत का तो यह आलम कि उह सिफ हीरो से और  
तालू से छाया और नजर की हारात में पिघलाया जा सकता था। रात होते  
ही हमारे बाबरची के पकाए हुए खानों के साथ साथ—अदुल्ला की  
दुकान की पुरिया अहमद की बाकरखानिया, सआदत की शीरमालें शब  
राती के अठारह-अठारह परता के पराठे, शुम्मत रकाबदार के भुने हुए मुर्ग,  
शाहिद का बटेरा का पुलाव, हैदर हुसन खा के फाटक की गली का अननास  
का मुजअफर गुलामहुसन खा के पुल के कजाब कप्तान के बुए की पिस्ते  
वादाम की मिठाई और हसनाबाद की बालाई। और न जाने क्या-क्या  
न्यामतें हमारे दस्तरख्वान पर चुन दी गई—और मैं खा-पीकर सो रहा।

भोर-दशन की चाट तो पड़ ही चुकी थी। मैं सबसे पहले बेदार होकर  
बागखान की छत पर चढ़ गया। सुबह का स्वागत करन को जब आसमान  
की तरफ नजर उठाई शहर की ऊंची-ऊंचा इमारतों का कारण उपा की रगीनी  
दूर दूर भां नजर न आई। जायें मुरझा गई। मैंने देखा पी तो ज़रूर फट रही  
है और मुर्ग भी बाग दे रहे हैं, लेकिन न पी फटने में सुहानापन है और न मुर्गों  
की बाग में जोर—जमोन से आसमान तक एक फानापन छाया हुआ है। सास  
लेता हू तो घास भरां मोती मोती हवा सीन का खुरब और तिल पर बास  
दाल रही है। प्रात-समीर चल रही है पर उसका ज्ञान में प्यार नहीं है।  
प्रकृति की दलहन के पाव में न चांगों का धुधरू है न सर पर छपका। मर बल  
कले एमी मलगजी मलगजी खार्द-खार्द फांसी फीरी उमला-उमला हठां गठी  
रठी रठी औंगी-औंगी गयी-गयी भिचो भिचो और पुझी बुझी मुजह को  
दखनर गुल हा गए और घुआ दन लग। मैं भारा तिल का माथ नाथ  
आया और मुठ-हाथ धान लगा—मुठ पर बार-बार छपकत मारे तिल की कली  
नहीं चिली।

१ लखनऊ का नवम बहतर कुशीवाना जो नजर  
जाता था।

इतन म नाश्ता आ गया। रोगनी रोटी, अडा के सितारे, बालाई शीर-माल और नुमज का नाश्ता करके फारिंग हुआ तो मेरे बाप ने दो सिपाहिया और मशीर खा को साथ करके मुझे लखनऊ की सर के लिए खाना कर दिया।

मैंने लखनऊ म हफ्ता भर रहकर नीचे लिखे स्थान दखे

हुसैनावाद की शाही बाठी उसका बलान-टावर, हुसनावाद का इमामजाडा उसकी भूलभुलैया, आसफुददौला का इमामवाडा, रमी दरवाजा, हजरत अब्राम की दरगाह नजफ अशरफ ताल कटोरे और भूल कटोरे की करबलाए, वेलीगारद<sup>१</sup>, अजायबघर, शाह पीर मुहम्मद, टीले की मस्जिद शाह मीनार का मजार और मोती महल हजरतगज, चुनिया बाजार अमीनावाद, गोमती, ठनी सडक लोहे का पुल, लाल बाग, सिकदर बाग बदरिया बाग, विकटोरिया बाग और बनारसी बाग और छतर मजिल का फक्त वह हिस्सा जो सडका से नजर आता है। हरचद मरी लडकपन की नजर म ये सारे स्थल बडे अजीब थे लेकिन इनसे भी अजीबतर नजर आए लखनऊ के वे रईम आलम अदीब और शायर जो मेरे बाप के पाम आत थे। वह उनके वहा तशरीफ ले जाया करत थे। अल्लाह-अल्लाह उनके वे लचकीले सलाम, उनके उठन-बठने के वे पाकीजा अदाज, उनके व तहजीब में डूने हाव भाव उनके लिबास की वह अनोखी तराश-खराश सामाजिक और साहित्यिक समस्याआ पर उनका वह वाद विवाद, उनका शब्दा का ठहराव, उनके लहजा के वे कटाव गजल सुनात समय शेर के भाव के अनुमार उनकी आखा का रंग और चेहरा का उतार-चढ़ाव वह कहकहा से बचाव, उनका हल्का-हल्का तबस्सुम विनम्रता के साचे म डला हुआ उनका वह स्वाभिमान और बावजूदे-बमाल उनका वह हाथ जोड-जाडकर अपनी कम इल्मी का एतराफ। ये सारी बातें देखकर मैं आश्चयचकित रह गया। वे तमाम लोग इस कदर सम्य, शालीन और सुमस्तुत थ कि ऐसा मातूम होता था वे इस दुनिया के नहीं किसी प्रकाश-मडल के वासी हैं।

इन्हा बुजुर्गों की जूतिया सीधी करके मैंने शार्दस्तगी (शालीनता) सीखी और यह जरा-सी मुघ-बुघ जो आज मुझे अदब और शवान पर हासिल है, यह उन्हींकी सोहवत का असर है।

अब वह लखनऊ ह न लखनऊ वाले। एक-एक करके सब चले गए खाक के नीचे। खा गई मिटटी उनके जोहरा को। बहुत दिन हुए, मैं एक खवाई कहीं घी जलती हुई शमआ को बुसान वाले जीता नहीं छोड़ेंगे जमाने वाले ला-देहली पे, लखनऊ न यह कहा, अब हम भी हैं कुछ राज म आने वाले।

१ वह हमारत त्रिमस बला गाहव न शरण सी घी और १८५७ क विगाही सनिक म उस गालिया से छलनी कर लिया था।

## फिरगी से नफरत

एक राज में लखनऊ के नल्लास वाले मकान की बालाई मजिल के बरा मदे में अपनी खिलाई 'बडी वी' के साथ बठा हुआ था कि सड़क से अचानक 'तडाक-तडाक' की आवाजें आईं। बडी वी ने झुककर दखा और जार-जार से राने लगी। मैंने पूछा— 'यह बठे विठाए राने क्या लगी, बडी वी?' उहाने रात हुए कहा— 'वेटा! मुआ गाडीवाला घोडे को चाबुक से मार रहा है तडाक-तडाक। हाय हमारे जाने-आलम पिया के जमाने में इन घाडा को रईसा की आबरू समया जाता था। इहू दूध जलेबी और बालाई खिलाई जाती थी। जब से इन बदर फिरगिया का राज हुआ है इन गाजी मदों को चाबुका से मारा जाने लगा है। वेटा य गाजी मद किस कतार शुमार में हैं इन बदरा का जत्र से दौर लीरा हुआ है बटे बडे शरीफजाद गलिया में जूतिया चटघात फिरने लगे है।' इहाने यह कहते-कहत अपने ब-बाटी के खाक्ल सीने पर हाथ मारकर कहा— 'हाय हमारे जाने-आलम पिया अब कभी नहीं पलटगे। बडी वी की यह बात सुनकर मैं बिलबिला गया और मुचे फिरगी से नफरत हो गई और बही लडपपन की नफरत आग चलकर मरी सियासी नरमा के रूप में व्यक्त होने लगी।

अब जरा मेरी मूछा के कूडों का घूम घटकका भी देख लीजिए। उधर जनाने मकान के चौड़ चौड़े दरवाजो और ऊची-ऊची महारावा के लम्बे चौड़ दालानो में चान्नी का पश विछा हुआ है। दीवारगोरिया, इन्के और गैस के हडे जल रहे हैं। ओरतों गाव तकिया पर टक लगाए बठी हैं। इधर-उधर पर्शों उगालदान और बडे-बडे चादी के पान दान रने हुए हैं और उनके सामन डाम निया ढारनें सरोतनिया और मीरासिनें नक्के कर रही हैं और नकला के बाल डोलक पर गाना हो रहा है और गानवालिमा को बेल दी जा रही है।

इधर मन्नि सहन में दल-बाल्ल शामियाना लगा हुआ है। शामियान के गिद नौकर चाकर बगरह परे जमाए हुए हैं। चारा तरफ गस के बड-बडे हड मनमना रहे हैं। मशालची मशालें उठाए तम्बीर वन बीच में पडे हुए हैं। शामियाने के नीचे भद्र लाग ऊच ऊच गाव तकिया पर बाटनिया टन बडी शान के साथ कालीना पर बठ हुए हैं। और वह स्थिए, अपन कश्मीरिया के तायक के साथ पद्रह-माह वरम का अलीवान जिमव हमान चहर को शकार पर हला मा नमक छिन्ना हुआ है चग जा रहा है बरी लग के माय छम छम करता हुआ। शामियान में कर्म रखन ही उमन बनी राच के साथ पर्शों

१ बड-बडे शामियाने वगैरे में जब नइरा का मनें भादन लगता था ता कार कूडा में जब दिना भर हुवरन घूमन की नमाज निनाई जाता था। इसका नाम ही कूडा का रम्य पद गया।

सलाम किया—सलाम करन म उसकी कलाई इस कदर लचकी कि डर लगने लगा कही टूट न जाए । सलाम करके वह अपने साजिदा के आगे ऐसे दिल फरेव घुमाव के साथ बैठ गया जम उडता हुआ कबूतर अनी छतरी पर जाकर बठ जाता है—उसके बठत ही— मैं चमन म क्या गया गाया दबिस्ता खिल गया का तरह—साजदे अपने-अपने साज मिलान लग । साजा के मिलाए जान म जो वक्त लगता है वह कितनी मुश्किल से गुजरता है—

हरवल सुरीले नग्मा स जजबात जगाय जात हें  
उस वक्त की तलवी याद करो जब साज मिलाये जात ह ।

लेकिन कश्मीरिया (भाडा) न अपनी उछल-कूल अपन कू ओ जा' क नारा और पट म बल डाल डाल देनेवाली अपनी नकला स इस तल्बी का ढाप लिया और इस कदर हसाया कि लग लौटन लगे । जब साज मिल गए और हसी क दौगडे रुक गए तो अलीजान फुरहरी लेकर या खडा हा गया भाव बतान जस पहली किरण फूटत ही दरिया सास लेकर चलन लगता है । पल भर म अच्छी तरह मिले हुए साज वजन लगे । सारगी की रू रू, जाडी की दू दू और मजीरे की खुन खुन की नपी-सुगी और घुली मिली आवाजा के जादू भरे दायरे म अलीजान ने अपने भाव बताने के वास्तु जब अपने लचकीले हाथ यानी चप्पू उठाए अपन छरहरे जिस्म की किरती खेन के लिए तो कश्मीरिया न उम हल्के म ल लिया और बडी सुरीली आवाज म कहन लगे— 'इधर दखा खुशवती, अल्लाह न यह दिन दिखाया कि खा साहब बहादुर की डयाडी पर अलीजान का तायफा आया वह महफिल वीरान जहा भाड न हा ।' इस पर बडा कहकहा पडा ।

इसके बाद साजा की गूज म अलीजान कश्मीरिया का हल्का तोडकर या अपना चेहरा सामने लाया गाया काली उदली को फाडकर चान निकल आया । सामन आते ही इस छलाव न या पाव फश पर मारा कि उबल पडा घरती से नाच का फन्वारा और दायें-बायें खडे कश्मीरिया ने उसके नत्य के हर मम पर तालिया बजा-बजाकर बहना गुरू कर दिया— ताता थई थई थई थई—ए ताता थई । जब उसक नाच म तेजी आई तो कश्मीरिया न ऐ बडने ए बडके, घटा बडके हा, बडके बटा बडके—थई थई थई थई, ता ता ता' क नारे लगाना शुरू कर दिए और भाव बतान और नाचने के वास्तु जब उसन विन पानी का बला जा रे बजरा गाना गुरू कर लिया ता ऐसा मालूम हुआ कि वह एक बजरा है और फग पर हचकोले खा-खाकर बहना चला जा रहा है और साज उसके वास्तु म इनने गुय गए हैं गाया सान की उडती हुई गुदया म दलपनात मकीश के ठारे पिरो दिए जा रहे हैं ।

अलीजान के मुजर क बाद शामियान पर एन सन्नाटा—खनपनाता सन्नाटा छा गया । इमक वास्तु चार तवाशफें तापनोड आइ, लकिन

मुजरे का रंग जमा ही नहीं और ऐसा जग हाफिज शीराजी क बलाम क बाद जोक की नरम पढ़ी जा रही हा या शराब क बगर घाली साडा पिया जा रहा हा ।

सुन-सुन करके अत्र पिछठ पहर वार्द चौह बरग का पाचवा सवादक आई मुजरे क वास्त । उसका चम्पई मुग्रडा गाया बगन क नुफ म पहाड पर प्रभात हा रहा है । जब इग सितमगर न नाचन क लिए अपन तराग हुए कूल्ह के लिफरेब बटाब पर बाया हाम रखर छल्ला सी बमरे लचलाई तो एसा लगा गाया नृत्य की देवी क सुनहर रथ का घुरा बडी लचक क साप घूम रहा है और ब्रह्माड की गति उसरी परिश्रमा कर रहा है ।

उसरी जवानी का सब अभी पाल स बाहर नहीं निकाला गया था । उसन मुग्रडे पर जवानी और बालकपन गल मिल रहे थ । उसना बजूर एक एसा झुटपुटा था जिसकी छाव म धुधलवा हुमक रहा था—उसका नार की नथ गवाही दे रही थी कि उसका पिडा अभी तक बारा है और सीन पर उसक आवी आबल क नीच मोथा एक बलवा सा हा रहा है ।

वह बहुत कमसिन थी और सगीत म खाम होन का बजट से उसक गल म पत्ती लगती थी । लेकिन उसकी नीम पुछा जवानी की बहणी आखा क शरवती डोरा म वह अनोखी रागिनी छिडी हुई थी जिस दुनिया क किसी साज पर बजाया ही नहीं जा सकता और जिस काना स नहा आखा स सुना जा सकता है ।

और आखिरकार डूबत सितारा की छाव म चाद की हस बेंटी न जब यह गबल छेडी—

नसीम जागो कमर की बाधो, उठाओ बिस्तर कि रात कम है  
तो रागिनी की चलत फिरत उसने नीम रवा और कच्चे गले म या घूमन लगी गाया पुरवा के मुलायम झाका म पेटे से कटा हुआ चाद-तारा फिजा म पता रहा है ।

और जब नाचत-नाचते इनाम की खातिर, वह हचकाल खाती किशती की मानिद आहिस्ता-आहिस्ता मेरी तरफ बढने लगी तो मेरा गला रुधने सा लगा । मेरी गदन के हारा की खुशबू तेरा ही गई । और जब वट एक घुटना टेक्कर छम स मेरे सामने बठ गई ता उसकी कमसिनी की सास की सुगध खच स मेरे सीने म चुभ गई और उसकी पेशवाज का सिरा मेरे हाथ की हथेली स मस हो गया तो मेरे बदन म पौ सा फटन लगी ।

मेरी जिदगी क जठारह मुआशिका म वह मरा अस्पष्ट सा पहला मुआशिका था—जा स्वप्नावस्या म शबनम के मानद मुन्न पर गिरा और मेरे तन बदन म रच-बस गया ।

अत्र अगर वह जिदा भी हागी तो मेरी तरह बूनी हा चुकी होगी । हम एक

दूसरे को पहचान भी नहीं सकेंगे। हाय, ज़ालिम वक्त कितने चादा को लील चुका है !

लेकिन इतनी तबील मुददत गुज़र जान के बाद भी जब उस मुजरे की याद आ जाती है तो मेरे क्षुरिया भर हाथ की हथेली पर उसकी पेशवाज का दामन सरसराने और करवटें-सी लेने लगता है। हाय क्या करू मेरे अल्लाह !



## तालीम का बलबला

मरे तालीम के बलबल न मरे बाप के लिल के साथ वह सलून किया जो रिजली खलिहान से भरती है। बात यह नहीं थी कि वह मुझ जादिल रचना चाहते थे मगर सारा सेल रिगाडे हुए थी उनकी गरमामूली मुहजत, बन्ही हिसाब मुहजत। वह लिल से चारूत थे कि मैं पलू तो जहर मगर उनकी जाया से पल भर के लिए भी जुग न होने पाऊ। जय मैं दात निजाल निजाल कर उनकी गिम्मत म जज करता था कि मिया मुझ पढन के लिए वही बाहर भेज दाजिए म घर पर नहीं पड सकूगा। मौलवा उल्ट मुझसे डरते है। डरनेवाले मौलवी पना नहीं सकत।—तो उनके चेहर पर एक तीव्र पीडा का रग दौट जाया करता था। तग जाकर मैं तमाम घर की दीवारों कायने से तालीम का भूखा शबीर लिख लिखकर स्याह कर डाला। मिया नोकरा से उन तहरीरा का मिटका दत थे और मैं फिर लिख दता था।

आखिरकार मैंने जपन फुफर भाई और तालीम के शौनाइ सफर हुसन का को पकडा कि आप मिया से मेरी सिफारिश कर दें। उहाने मेरी इमदाद का वात किया। मैं उनका यह एहसान कभी नहीं भूलूगा कि उहाने मेरी तालीम के बारे म मेरे बाप से वार वार कहा और आग्रह के साथ कहा पर मिया ने इस वान से सुना उम वान से उडा दिया।

लेकिन सफर भाई धुन के पक्के थे हिम्मत नहीं हारे और एक दिन शाम के वक्त मिया को बडे अच्छे मूड म पाकर उहाने बडे साहस के साथ यहां तक कह दिया कि मामू अब जमाना बदल चुका है। जो बच्चा घर के रईसाना माहौल से बाहर निकलकर नहीं पडेगा, वह 'शरीफजादो की औलादे-बेतरबीयत है के जुमरे म आकर तबाह हो जाएगा। मामू आप खानदान भर म सबसे ज्यादा पडे लिये हैं और अक्लमद हैं जोर फिर भी तालीम से इस कदर गफलत बरत रहे हैं !

यह सुनकर मिया बिगड गए और इरशाद फरमाया 'सफर एक छोड चार चार उस्ताद उसे पडा रहे हैं। यह इस उम्र म गुलिस्ता वोस्ता, स्फर नामा और दीवान हाफिज चाट चुका है जोर गोमतीप्रसाद से अंग्रेजी भी पड रहा है। क्या इसी का नाम है तालीम से गफलत ? सफर भाई ने हाथ जोड कर कहा मैं सर झुकाए लता हू आप चाहें तो मुझे मार लें। मगर इस कदर जज जहर करेगा कि चार क्या दस उस्ताद भी इस माहौल मे बेकार हैं। मामू रईसा के बच्चे मौलविया से नहीं डर सकत बल्कि उल्टा मौलवी उनसे खोफ खात हैं। मामू यह तो आपके सामन की बात है कि नसीम नाना के एक बच्चे को बाहर से आए हुए एक उस्ताद न जब हल्का-सा एक धप्पड

मार दिया था तो उन्होंने उसका हाथ फीरन तुड़वा डाला था। उस दिन से यज्ञ के उस्ताद और भी डर गए हैं और अपने शागिर्दों को घुड़की तब देने की जुगजुत नहा करते। यह सुनकर मिया कुछ सोचने लगे। सफदर भाई ने इशारा स बताया कि जासाद अच्छे हैं। थोड़ी दर गौर करन के बाद मिया ने कहा 'सफदर यह ता बताओ कि शरीर को भेजू ता कहा भेज ? लखनऊ हरचद करीब है मगर वहा के रगीन माहील म त्रिगड जाणा। सफदर भाई न रहा "मामू मैं खुद भी नहीं चाहता कि उनकी तालीम लखनऊ म हा। मैं अपन असरार हसन का सीतापुर म पग रहा हू। आप शहीर मिया को सीतापुर भेज द। वहा मलीहाबाद के बहुत-मे लडके यानी अदुल घारी, अदुल बडीज फगमल हसन पड रह हैं। और शहीर मिया का लगीटिया यार अबरार भी वही तालीम पा रहा है।

मिया ने यह सुनकर इरशाद फरमाया 'अच्छा सफदर एक महीन के बाद शहीर का सीतापुर ले जाना। मैं इस एक महीन म अपन दिल को भी समना लूंगा। यह मुनत ही मेरा लिल मिलकारिया मारन लगा।

लखन जब पूरा महीना गुजर जा के वावजूत मिया का वादा पूरा नहीं हुआ ता मरी उम्मीदा पर पानी फिर गया।

उमा बीच म जब स्पेटीनेट गवनर से मिलने मिया लखनऊ गए मैं भी साथ हा लिया और जब वह लाट साह्य से मिलकर हवसन हाने लग ता मैं फूट फूटकर रान लगा। लाट साह्य ने भरे वाप से पूछा 'आपका लटका क्या रा रहा है ? ता मैंने उनसे तमाम माजरा बयान कर दिया। लाट साह्य ने बचकर मेर सर पर हाथ फेरा और मेर वाप स अपनी टूटी फूटी उदू म जा कहा उसका मतलब यह था कि खा साह्य आप बडे खुशकिस्मत हैं। एसे इल्म क शाहीन लडके तो विलायत म भी नहीं हैं। जाप इसे एक महीन के अदर-अन्दर किसी म्बूत म दाखिल करके मुझे सूचित कर दें। उमन बने प्याग स मेर गाल थपथपाए और कहा, अगर खा साह्य ने मेरी बात नहीं मानी ता मैं सरकारी बडीफा दिलाकर तुम्हें तालीम के लिए लदा भेज दगा।

गवनमत हाउस से निकलकर जब मिया गाडी म बठे ता घरस पडे मुझ पर। फरमाया, मरदूद, तून स्पेटीनेट गवनर स मेरा शिकायत की और वह भी मेरे मुह पर। क्या तू समथता है कि मैं इन लाल मुहवाठ बन्दर म डर जाऊगा ? खूब ज्ञान गालकर मुन ल कि अगर स्पेटीनेट गवनर भी कहेंगे फिर नी मैं तुझे घर स बाहर भेजकर नहीं पगान का। ऐसी-नसी लाट साह्य का। यह मुनत ही मैं फूट फूटकर रान लगा। हिनकारिया बय गद रान रान और मरी सास मेर गल म घूमकर कुछ एस खबरदस्त बटक लग कि मेरे आशिक वाप का मुह फक हा गया। उह यह खतरा पग हा गया कि मेरा दिल बठ जाणा। उन्होंने दीवानावार दाना हाथ बगारर मुझे अपन मीन से लगा लिया और जल्नी-जल्नी कहा, तर सर की इसम एत महीन के अदर

मं मुझे सीतापुर भेज दूंगा।' मरी सास ठहर गई, हिचकिया ख गइ, आसू धम गए। मरे बाप न मुझे बहुत गौर से देखकर पूछा 'बटा अब तबीयत कसी है?' मन मुस्कराकर कहा, जच्छा हू मिया। उनवे चेहरे पर बहाली आ गई जोर में तिल ही तिल म सीतापुर जाने के तिन गिनने लगा।

मलीहाबात आत ही मिया ने सफर भाइ का बुला भेजा और कहा 'सफर, तुम जुमा के तिन शबीर को सीतापुर ले जाओ। मेरा तिल खुशी के मारे उछलने लगा।

दा दिन क अदर-अदर मेरे साथ जानेवाले बाबरची की जिस 'सय' क नाम स पुकारा जाता था नियुक्ति कर दी। सफर भाई न चार पाच दिन क अदर-अदर मेरे तमाम सुनहरे और भडकीले कपडे नजरी करके सादा जाडे सिलवा दिए।

खुदा-खुदा करके जुमा आया। मेरा तमाम सामान गाडी पर रखवा दिया। लकिन बडी बी दादी मा जोर सबसे ज्यादा मरे बाप क रखसती आसुआ म गाडी का वक्त निकल गया और मैं कलेजा धामकर रह गया।

दूसरा जुमा आया। मैं गाडी के वक्त से दो घटे पहल ही तयार हो गया। दादी और मा ने मेरे बाजू पर इमामे जामन बाध। मबन मुझे बारी-बारी गले लगाया। बडी बी ने भी मुझे सीने से चिपटा लिया। मिया ने इम कदर भीच-फर मुझे सीने स लगाया कि पसलिया लचक गइ और मर सीन पर उनक धडकते दिल की जरब पडने लगी। आगन म पहुचकर जब हस्वे दस्तूर कुरआन के नीचे स निबलने लगा ता मिया न भराई आवाज म हुक्म लिया कि इधर आआ बटा। मैं उनक पास पटुचा। उहान इरशाद फरमाया—घोडी देर क वास्ते बठ जाआ। दो चार मिनट के बाद मीने घडी पर नजर जमाई तो गाडी का वक्त निकल जा रहा था।

इतने म सफर भाइ आ गए जोर हाथ जोडकर कहा 'मामू, गाडी छूट जाएगी। मिया न मरे चेहरे पर निगाह जमा दी और फिर इशार से मुग रखसत की इजाजत दफर सर झुका लिया। मिया के साथ पूरा घर रोत लगा। मने जामू भरी आवा से झुन झुनकर सबको सलाम किया। जत्र बाहर जान क लिए डयागी स गुजरन लगा ता हिचकिया मरा पीछा करती रहा

### यउ कलास और इक्न का पहला सफर

सफर भाई न स्टेशन जान हुए मुझे एर लम्बा लेक्चर पिलाया, जिमता खुलासा यह था कि जमाना अब बडी तजी क साथ बल रहा है। अमीरी की बू जान सर म निकल ग। मामू न मुझे फण्ट कलास का किराया लिया है मगर मैं तुम्ह ल जाऊंगा थर बगन म—मजूर है तुम्ह? मुग क्या मातूम था कि थर-बगन के मुसाफिरा का तिन तिन बगना स दा चार हाना पाना ह। मैंन उनरो तजवाज मजूर पर ली।

मगर थड-क्याम म कदम रखा तो जी सन-मे हाके रह गया। पाव के नीचे स जमीन निकल गई। सबसे पहल उम डिब्ब की उस बन्दू ने मेरे दिल पर घुसा मारा। निसमे मैं कभी दो चार हुआ ही नहीं था। फिर मैं देखा कि वह डिब्बा औंधा-औंधा-सा है और बेगददा की सुरदरी जलील बेंचें मुझे मुह चिड़ा रही हैं। एक बेंच पर चन्द्र गवार विच्छ माका तम्बाकू की चिलम पी-पीकर बुरी तरह खाम रह हैं। नाक म डक मारन लगी गणकू की बंदू। भरता क्या न करता सर बुकाकर धरौं सीट पर बैठ गया। सीट चुभन लगी साम भर सीन म उल्लव गई और इमामे तामन गम हाकर मेरे बानू पर चरके लगान लग। मैं गिडकी से मुह निकालकर बठ गया। चारपाग से निकलकर सफ्टर भाई न दो खीस इक्केवाला का इजार मे बुलाया और व दा काी के जलील इक्क अपन गधा के-मे अफयूनी घाडा के साय चू चू करत जब मरी तरफ रेंगन लग तो मुझे एसा लगा जस मुह बाला करके मुजे गधे पर पिठाया जा रहा है। सफ्टर भाई न मेरी हालत का अदाजा लगाकर कहकहा मारा और वह कहकहा धाव पर नमक छिडकने की तरह मुझे बहुत बुरा लगा। उन्हाने मुझे जुज-बुज देखकर कहा शबीर मिया, यह आपरगन बहुत मुफीद है। इसस तुम्हारे दिल मे गटर का जो मवाद है वह निकल जाएगा। मैं चुप हा गया।

इक्का भर करीव आया ता मैं कहा सफ्टर भाई इमपर वठू कस ?' उहने मरी वगला म हाय दवर मुजे हजारा दिक्कत क साय बिठा दिया और दूसरे इक्के पर मयद वावरची मामान समत मवार हा गया।

इसक के चिक्कट गदने की बू स मुजे मतली हान लगी। जब चारपाग स हमार जलील इक्के आगामीर की डपोनी की तरफ रमान रसान रेंगन लग।

जब हमारा इक्का पाऊगल के पुठ स गुजरन लगा ता मेरी नजरा के सामन म अपन परदाग का मुहल्ला गुजरन लगा जिसके नुक्कड के पथर पर अहाताए फकीर मुहम्मद' माट अगरा म अकित था। इम बाड का देखकर मेरे तमाम रौगट धन-मे हो गए। खयाल आया कि दरर से दाग जान हावी पर गुजरत और उनकी मवारी के आग नकीव वाला करत थ। आज उमी तरफ म उनका पाता एक हकीर तोना धना हुआ इक्क म बठा टरखटू-टरखटू गुजर रहा है। शम क मार मैं जपना मुह टिपा लिया।

धर य दिक्कतें आर जिल्लतें उठाता हुआ सीतापुर पटुच गया। मलीहा-बाद के तमाम लडक निहाट हा गए। जवरार न दौडकर भर गये म बाहें डाट दा।

दूसर हा निन मरा नाम ब्राच स्कूल म लिखा दिया गया। सफ्टर भाई न हाई स्कूल क दबना-म्बरूप हड माम्टर धमटीगट और वालिग के हममुख इंचाज घापवानू म भी मुजे मिला दिया और मैं हजारा बलबला के माय बाबापग स्कूल आन-जान और जी लगाकर लिखन-पत्न मे व्यग्न हा गया।

अभी सीतापुर जाए मुश्किल से पंद्रह बीस दिन ही गुजरे हंग। एक रोज शाम के बक्त क्या दखता हू कि हमारे घर के दारागा नेब मुहम्मदजली चले आ रहे है। नेब साहब को देखकर मैं समझा कि मिया सीतापुर तशरीफ ले जाए हैं। लेकिन जब दारोगा साहब ने मिया का खत दिखाया ता मालूम हुआ कि मिया ने फक्त दो रोज के लिए मलीहाबाद बुलाया है। दो दिन की छुट्टी लेकर जब रात की ग्यारह बजे वाली गाड़ी से मलीहाबाद आया और अपने मकान की गली में पहुंचा तो देखा कि मिया डाक्टर अब्दुल्करीम और चन्दा सिपाहिया को लिए जादत के विपरीत अचकन और टापी के बगर फाटक से निकल रहे हैं। जैसे ही मुझ पर उनकी नजर पड़ी हाथ मेरा बेटा बहकर वह क्षपट पड़े और मुझे सीने से लगाकर रान लगे। डाक्टर अब्दुल्करीम ने कहा 'ता साहब आप खुश होने के बजले रो रहे है? मेरे बाप ने इरशाद फरमाया डाक्टर साहब काकोरी के पुल से गुजरत ही रल हमेशा सीटी दती है। लेकिन आज उसन सीटी नहीं दी। मैं यह खयाल करके दीवाना हो गया कि कही खुश न खास्ता पुल तो नहीं टूट गया है। डाक्टर साहब जिसका बटा रेल में आ रहा है उसके जी से पूछिए कि अपने बक्त पर रेल का सीटी न देना कितने बहम पदा कर सकता है।

सीतापुर में मरी तालीम का सिलसिला साल टेक साल से ज्यादा जारी नहीं रह सका। मरी जुदाई की ताब न लगकर शायद १९०२ में मेरे बाप ने मुझे लखनऊ तलब फरमानर हुसनाबाद हाई स्कूल में दाखिल करा दिया और मेरी रिहायश के लिए नल्लास (चिडिया बाजार) में संघद एजाज हुसन साहब के मकान के ऊपर का पूरा खुश हिस्सा किराय पर ले लिया गया। मेरे मकान के नीचे मुशी बाहिदजली की नवाबरी की दुकान थी। उनकी दुकान के सामने किसी बुजुग का मजार था जिस पर हर जुमारत (बृहस्पति वार) का चिरागा (रोशनी) हुआ करता था और उसने आम-भास हर इतवार को चिडिया का बाजार लगा करता था। और मेरे मकान के ऐन सामने हजरत रयाज खराबानी रहत थे।

उस जमान में मेरे मकान के सामने और हजरत रयाज खराबानी के मकान की दीवार के नीचे दूर तक घाडा-गाटिया का अड्डा था जहां पचीस तीस गाडीवाड रहत थे। हर राज त्रिला नागा मुजह के चार बज एक साहब विकटारिया रात की तरफ से मौला अली इमाम अनी मुतजा जली गान हुए जिस ही मेरे मकान के सामने में गुजरत थे ता गाडीवाल ठुमकीदार आवाज में नारा लगाया करत थे नवाब साहब बनरा हाजिर है। और वह नवाब साहब उह गालिया पर धर लिया करत थे। पर क्या मजाल कोई अश्लील शब्द जवान पर आ जाए।

जस ही गाणीवाला की आवाज बुल्ल हाता थी—नवाब साहब बनरा

हाजिर है वसे ही वह उड़ी मुरीली और ठहरी हुइ आवाज म कहने लगत थे, 'ऐ आले रसूल के दुश्मनो, ऐ मुआविया के दुश्मो ऐ इने-रयाद के ऊटा, तुम पर लानत, तुम पर आम् थू ए यज़ीद के पित्तो ऐ इन्ने मलजम के बोकडो, ऐ हदए जिगरख्वार के पडदो तुम पर लानत, हजार वार लानत, आम् थू आम् थू आम् थू । और उन गालिया पर गाडीवालो के कहकहे बुलद हो जात थे । और जब वह गालिया देत हुए धडेवाली सराय की तरफ मुडने लगत थे तो गाडीवाला की आवाज फिर बुलद हो जाती 'नवाब साहब बकरा हाजिर है नवाब साहब बकरा हाजिर है ।' और वह उसी किरम की गालिया देते हुए मुड जाया करते थे । उस तरफ भेरे गाडे के बांशद मिया नौरोज बावरची का भी यह मामूँ था कि जब वह नवाब साहब बकरा हाजिर है की आवाजें सुनते थे तो चारपाई पर उठकर बठ जात और बडबडान लगत थे 'इम साले गाडीवालन पर नालत (लानत), रोज रोज बकरा हाजिर, बकरा हाजिर चीन्वा करत हैं । थू का बाहियातपना है । साले सवेर-सवेरे अल्लाह रसूल का नाम तो लेत नाही, बकरा हाजिर, बकरा हाजिर का गुल मचा देत है । थू है उनकी औकात पर ।

## मेरा निकाह

मेरा निकाह एसा-वसा नहीं बड़ा जिद्दम जिद्दा और बड़ी चापम चाटा था निकाह था। उसना थोड़ा सा हाल गुन लीजिए। मेरे दादा नवाब मुहम्मद अहमद खा के सौतेले भाई थे नवाब मुहम्मद नसीम खा—उन दादा भाइया के दरम्यान खानदानी दस्तूर के मुताबिक बड़ी अनबन और बड़ी तुन पन रहा करती था। मेरे सगुर नवाब मुहम्मद नसीम खा के बटे थे और मैं नवाब मुहम्मद अहमद खा का पाता। इसलिए मेरे समुर के बड़े भाई नवाब मुहम्मद अली खा को यह बात पसन्द नहीं थी कि उनके छोटे भाई की लडकी से मेरा ब्याह हो। लेकिन चूँकि मेरे समुर और मेरे बाप के दरम्यान खानदानी दस्तूर के खिलाफ बड़ी मुहलत थी इसलिए मेरे बाप ने जब मेरा पयाम दिया तो उन्होंने मजूर परमा लिया। उनकी मजूरी से मेरे समुर का तमाम कबीला बिगड़ गया और मेरे चाचा नवाब मुहम्मद अली खा को खसूसियत के साथ बहल मलाल हुआ। इस कारण मेरे निकाह के मौके पर खुशी के साथ-साथ यह भावना भी काम कर रही थी कि मेरे समुर के तमाम कबीले के विरोध के बावजूद मेरा निकाह हो रहा है। अल्लाह-अल्लाह मेरे निकाह का धूम धडकना—बड़े धूम से मुजरे हुए दाबत हुद और ऐन निकाह के दिन दुश्मना को जलान और तपाने के लिए इस कदर जोर जार से ढाल पीटे गए इस कदर शिदत के साथ ताशे बजाए गए और इतने बड़-बड़े हौलजरे गाल छाड़े गए कि उनकी दू-दू दनादन दनादन से दूर दूर तक जमीन दिलन लगी। हाथ पठानो का मिजाज।

लेकिन यह निकाह भागे चलकर क्या रग लाया कितना बड़ा फितना खड़ा हुआ उसके बाद और मेरे सहरे के फुला ने कितना काटे दो दिए मेरे बाप की राह में आगे इसका जिश्र आएगा।<sup>१</sup>

या तो नौ बरस की उम्र ही से गेर की देवी ने मुझे आगोश में लेकर मुझसे शेर बहलाना शुरू कर दिया था। लेकिन जाग चलकर जब शायरी से मेरा लगाव बतन लगा तो शायद इस खयाल से कि अगर मैं शायरी में डूब गया तो मेरी तालीम नाकिस रह जाएगी, मेरे बाप के कान खड़े हो गए और उन्होंने मुझसे इरशाह परमाया कि खबरदार जब अगर तुमने शायरी की तो मुझसे घुरा काई न होगा। इसके साथ उन्होंने जनाने में बुआ गुलजार और मर्दाना मे उम्मादअली का मामूर परमाया कि वे जब मुझ गेर कहत

१ निकाह मसूब करान के लिए बरसा मुकदमा चला। हजारी रुपये बीपट होने के अलावा बहल परेशानी उठानी पड़ी। आखिर में जीत जोश के बाप को हुई।

दखें तो उनकी जनाव म रिपोर्ट कर दें। बाप के इस हुकम और जनाना मर्दाना की क्षुफिया पुलिम न मुझे बोखला दिया।

भान्य का यह परमान कि शायरी कर शरीरगत का यह हुकम कि खबरदार शायरी व करीब भी न पटक। मैं इस कशमकश म पड गया कि अपनी फिरत का हुकम मानू कि अपने बाप का खारिजी परमान कबूल करू।

सोचने लगा मैं अपनी जात से जुग ब्याकर हो जाऊ। ने र कहता हू तो बाप विगडत हैं, नही कन्ता तो दिल पर विगाड आत हैं। क्या करू और क्या न करू? शे र कहू तो बाप डाट पिलाए अपन दस्तरखान पर खाना न खिलाए और गर न कहू ता दिमाग के परखचे उडकर रह जाए।

इमलिए मैं शायरी हाड नही सका। चोरी छिप ने र कहता इधर-उधर देखना हुआ किमी गाने म जाकर उह लिखता और पचे अपन सन्दूकचे के अदर बद कर देता और स्मगलरा की तरह इम सन्दूकचे को अपनी मा के हवाले कर देता था कि वह इम छिपाकर रख दें। मेरी मा को मेरी इम हालत पर बडा तरस आता था। मगर वह उत्साह हा जान के सिवा जोर कर ही क्या सकती थी।

लेकिन इम अहतियात के बावजूद मैं अदर जोर बाहर एन मौके पर शे र कहना पकडा गया। मेरा जेय-यच बद हुआ बाप ने अपन माय खाना खिलाना तरक कर लिया और अस्मर थप्पड भी मार। अपनी हर जिल्लत के बाप मैंन बारहा कान पकड-पकडकर कसम खाइ कि अब कभी शे र नही कहूगा। अत्र खाइ सी खाई, अब खाऊ तो राम दुगाई। लेकिन जैम ही मेर दिल म शायरी की रगमगाहट हान लगती थी मेरी तमाम कसमें चूर चूर होकर रह जाया करती थी और हजरत-वदशत का यह शे र मुझ पर लागू होता था

मजात तर्के मुहवत न एक बार हुई

खयात तर्के मुहवत तो बार-बार आया।

### श र कहने की इजाजत

एक बार मैं अपन सद्रूकचे म जेय म पुजें निकाल निरालकर रख रहा था कि पुआ गुन्जार न दख लिया। वह भाव गइ। मिया का खबर कर गी। मिया आए। मेरी मा से कहा शबीर का सद्रूकचा कहा है? मेरी मा का रग हल्दी का-सा हा गया। मिया का खौफ इस कदम था कि बह इनकार नही कर सकी और मेरा सद्रूकचा उनके सामन रख दिया। मिया ने मुचने कुजी मागी। बापन-लरवन हाया स मैंने कजी द दी। उन्हाने सद्रूकचा खाला। मरे पुजें एक एक करक निकाले। मैं अपने बाप का पन तरह देखन लगा जिस तरह गाय अपने बछे को छुरी के नाचे दखकर कापती है। जय उन्हाने मरे तमाम पुजें चर चर फाटकर फक लिए मरे मुह म एक ददनाक चीख निकली



और मैं बहाश हो गया। मेरी मा दीवानावार मुझसे चिमटकर राने लगीं। मिया के हवासे उड़ गए। दादी जान ने आकर मरे बाप को डाग कि क्या बच्चे को मार डालेगा ?

डाक्टर अब्दुल्करीम को मेरे बेहोश हो जाने की खबर की गई। वह तुरन्त आ गए। मरी नज़ देखी और कहा 'खा साहब घबराइए नहीं। मैं दवा साय लाया हूँ।' उन्होंने मेरा मुँह खोलकर दवा पिलाई। रईस की अना ने मुँह पर छोट मारे और दस-पंद्रह मिनट के बाद मुझे होश आ गया। मरे बाप ने मुझे सीने से लगाकर इरशाद फरमाया 'बेटा मैंने तुम्हें शेर कहने की इजाजत दे दी है। मैं खुश तुम्हें इस्लाह लिया करूँगा। इधर आकर दम भर के लिए इस फलमड़ी पर लेट जा। मैं लेट गया तो मेरा जौ बहलान के लिए उन्हाने मुग़ते बहा—बेटा हम तेरे के मानी बयान कर—

वह जल्द आयगे या दर म शब-बादा  
मैं गुल बिछाऊ कि कलिया बिछाऊ बिस्तर पर।

जब तेरे की इजाजत मिल जान के बाद मरी तरीयत बग़ल हो चुकी थी। मैंन ज़रा सा गौर बरके अज किया— शायर से उसके दोस्त ने वादा किया है कि आज मैं आऊंगा। अब शायर इस जसमजसत में है कि मैं गुल बिछाऊ कि कलिया। अगर वह ठीक वक़्त पर आने वाला है तो मैं खिल हुए फूल और अगर देर में आने वाला है तो बेखिली कलिया बिछा दूँ।

मिया ने पूछा 'डाक्टर साहब मानी सही बयान किए हैं शरीर ने ?' डाक्टर साहब ने कहा 'इसमें श्याम सही मानी बयान नहीं किए जा सकते। मिया ने कहा 'मुझे आपकी राय से इत्फाक है। लेकिन तर्जुबमान में उमन दो ठोकरे खाई है। डाक्टर साहब ने कहा 'साहबजाद फिर तशरीह कर दीजिए।' मैंन फिर एन एन लपज़ दोहरा दिया। डाक्टर ने कहा 'मेरे नज़दीक ता साहबजाद ने कहा ठोकरे नहीं खाई है। मिया ने हमकर कहा 'आप लाय मुखन सज़ (गर समझनेवाले) और हाली के हमबनन रानी फिर भी जाए उम्मां घालीस्त। मुनिए उमकी पढ़ती गलती तो यह है कि उमने घिरे हुए फूल कहा है। कभी जब चत्परर घिल जाती है तो उसे फूल कहा जाता है। घिरेवट ता फूल का एन ज्ञान है। इसलिए घिरे हुए फूल कहना हक्का-जमाद (ब्यथ) में दागिल है। दूसरी गलती यह है कि उमन कभी का बघिती बला कहा है। हांगि बली का तो इमीगि कभी बहन है कि वह अभा चत्परर घिली नहा है और बखिगपन उमकी एन ज्ञान है। डाक्टर साहब ने कहा 'बशर आपरा मयात मुम्म है। फूल और कभी के साथ निमा मिरन की काई जम्हन नहीं। एन वां मिया ने इरशाद फरमाया—अच्छा एन और गर क भी मानी बना दा ता मैं तुम्हारा गर पढ़ती का मान जाऊगा—

आ रह हैं लाश के वो साथ-साथ  
अब हमारी वन्न कितनी दूर है ।

शेर सुनकर मैं उल्टन म पड़ गया । दाना मिसरा म कोई रत ही नजर नहीं आया और सोचने लगा । दस-पंद्रह मिनट साचने के बाद मैं खुशी से उछल गया । मिस्तर से उठ बठा । मैंन कहा, "शायर क जनाजे म उमका दोस्त शरीफ है । शायर को यह खयाल सताने लगता है कि उसके दोस्त का पदल चलने म तकलीफ हो रही होगी । इसलिए वह उकताकर पूछ रहा है कि अब हमारी वन्न किस कदर फासते पर रह गई है । मिया ने झुककर मुझे सीन से लगा लिया । डाक्टर राहव ने भी बहुत दाद दी और इम वान का स्वीकारा कि उह यह शेर निरयक लग रहा था । मिया न कहा, तुम्ह इस शेर म फन के नुकताए-नजर से काई ऐब तो नजर नहीं आ रहा है ? मैं बेचारा फन स वाकिफ ही कव था । मैंने कहा कोई एब नहीं है । मिया ने फरमाया, इसके पहले मिसरे मे ताकीद है ।' जीर फिर मिसालें देकर समझाया कि ताकीद क्या चीज होनी है ।

डाक्टर ने कहा, 'खा साहज आप साहबजादे का शायरी स वाज तो नहीं रख सकत । लेकिन यह बात जरूर ममज्ञा दीजिए कि पढाइ खत्म करन से पहले इस मशगले पर ज़्यादा वक्त सफ न किया जाए ।'

मिया ने फरमाया 'मैं तालीम स भी आने की बात सोच रहा हू । यानी शायरी वह चीज है जो शायर को इस बात की इजाजत ही नहीं देती कि वह शेर कहने और शायराना जिदगी उसर करन के जलावा दुनिया का काइ और काम भी कर सके । यह वह बंद बला है कि शायर के दिल म दौलत को इस कदर हकीर कर देती है कि वह उसकी तरफ आख उठाकर भी नहीं देखता । नतीजा यह कि वह मुफिस्सी का शिकार होकर रह जाता है ।' इतना कहकर उनकी आखा म आसू भर आए । उन्होंने मेरी तरफ निगाह करके दुआ के लिए हाथ बुलद फरमाए कि 'ए अल्लाह मेरे शवीर को तमाही' ने बचाना जीर उसपर ऐसी करम की निगाह रखना कि राजगार की खातिर इसे दूसरा का मुह न देखना पड़े ।

- १ मिया आपका दुआ कबूल नहा हूँ । आपको खबर नहीं कि आपकी आखा का तारा शवीर बानाए-गुरवत (विशेष) म ठोकरें खा रहा है । वह पाकिस्तान आकर एक भाभूभा-नी तनवाह पर त्रि दगी बमर कर रहा था । लेकिन इम जुम पर मुलाजमत और दूमेरे जरियो से महकूम कर दिया गया कि वह १ स्वाभिमानी है २ किमी की सत्ता के सामने सर नहा झकाता ३ अपनी आत्मा जीर इलम को बचता नहीं ४ उस अपना जन्मभूमि से नफरत नहा है और ५ उमका सबम बडा कुमूर जिसमे बगावन की बू जाना है मन् है कि वह फक्त पाकिस्तानियो और हिंदुस्तानियो ही को नहीं सारी दुनिया क वाशिदा को एकता का जजीर म बकडकर एक दूइ इकाई और एक विश्व राय बनाने का शतानी सपना देखना रहता है ।

## पहला मुशायरा

मह शापद १६१० या १६११ की बात है कि मैं अतन वाप वं हमराह हजरत मौलाना रजा फिरगी महली के मुशायरे में पहली बार शरीफ हुआ और दग हाकर रह गया ।

आइए, मैं आपको मुशायरे में ले चल ताकि आप खुद देख लें कि शपनाफ चादनी जिछी हुई है चादनी पर कालीन हैं । गावतकिये दीवारा से लग हुए ह । इधर उधर साफ-सुयरे उगालदान नेवा में हार लिपटे हुक्के शालवाफ से मढी हुई छोटी छोटी बोरी हाडिया हाडिया में चानी के बरक की सुगंधित गिलोरिया और इलायची दान तम्बाकू और कचाम की डिणिया रखी हुई हैं । शायर ज्यादातर जगरसे और कमतर शेरवानिया पहने अपने-अपने मतबे के लिहाज से दाजानू बठे हुए हैं । सबके सरा पर टोपिया हैं । शोताआ में से काई भी नग सर नहीं है । आपस में आहिस्ता-आहिस्ता बातें हो रही हैं गिलोरिया छाई और हुक्के पिए जा रहे हैं । और जो शायर मुशायरे के फश पर कम्म रखता है वह हाजिरीन को बुक झुनकर सलाम कर रहा है । हाजिरीन उसके मतबे के मुताबिक नीमकद या सरूक जवाबी सलामा से उसका स्वागत कर रहे हैं । लीजिए अब मीर मुशायरा के सामने शमअ आ गई है और मौलाना रजा की गजल से मुशायरे का आगाज हो रहा है और दाद से छत गूजन लगी है । किसकी मजाल है कि गजल पढन के दौरान काई मिसरान उठाए हुक्का पी ले पान या ठ जापस में सरपाशी करने लग या काई इधर से उठकर उधर बठ जाने की जसारत कर सके ।

मीरे मुशायरा के बाद शमअ घूम रही है । नौ मशक नौजवाना की सफो में और कमी बेशी के साथ सबको दाद मिल रही है और मामूली शेरों के सरो पर भी माशा अल्लाह के सेहरे बाधे जा रहे हैं । लीजिए नौ मशक में जब मेरी धारी जा गई । अरे गजब हो गया । शमअ सामने रखी हुई है रोये महफिन स में वाप रहा हू । शायरा की सका से जावाज आ रही हैं— बिस्मिल्लाह साहबजादे बिस्मिल्लाह ! लेखिन साहबजादे का दम निरला हुआ है । क्या मजाल कि मुह स एक हफ भी निल सवे । अब मेरे वाप मुझमें फरमा रहे हैं पत्त क्या नहीं ? पत्तन का वेग ना बारह बरस की उम्र ही में रण में तत्वार चलाने लगता है । और एत तुम हो कि तुमसे गजल नहीं पनी जा रही है । अब मिर्जा मुम्मन हानी साहन रसवा अपनी जगह से उठकर मेरे पट्टूम आ गए हैं और मेरी पीठ ठाकर फरमा रहे हैं— साहबजादे आप तो शायर शायर के बटे शायर के पौन और शायर के परपाते हैं पढ़िए और गरज कर पढ़िए । अब बड़ी हिम्मत करने मैं मतला (गजल का पहला शेर) पढ

रहा हू। मतला पर दाद मिल रही है। और दाद के नये मशेर पढ रहा हू

ऐ नसीमे सुम्ह के झाका यह तुमने क्या किया  
मेरे मस्ते-ख्वाब की जुल्फों परेशा हा गइ।

इस शेर पर मतला से ज्यादा दाद पा रहा हू। और वल्बले के साथ दूसरा शेर सुना रहा हू—

मेरी आँखें जानती हैं करये अफरात खुशी<sup>१</sup>  
खदाजन<sup>२</sup> देखा किमी को और गिरिया<sup>१</sup> हो गइ।

अब दाद का गलगला ज्यादा बुलद हो रहा है और 'मुहान अल्लाह, माशा अल्लाह स मुशायरा गूज रहा है। मिर्जा मुहम्मद हादी रसवा, हजरत सफी स कह रहे हैं देखे आपने इस शेर के तवर, यह उम्र और इतनी गहरी बात।" और अब मैं आखिरी शेर पढ रहा हू—

हाथ मेरी मुक्किलो तुमने भी क्या धोका दिया  
ऐन दिलचस्पी का आलम था कि आसा हो गइ।

देखिए छठे उठ रही हैं और घुए पार हो रह है इस शेर की दाद से और उस्ताद फरमा रहे है— अल्लाह नजरे-बद स बचाए।

मुशायरे स दाद का बडा जाम पीकर झूमता ज्ञामता घर आया। खुशी के मारे दर तक नीद नही आई। और सो गया तो ख्वाब म रात भर यह देखता रहा कि परिया भीच भीचकर मुझे गले लगा रही हैं।

मुवह उठत ही नहाया और नाश्त से फारिग होकर जब अपने बाप की ख्वाबगाह के बरामदे स हाकर गुजरने लगा तो बाप की आवाज आई, "इधर आइए जनाव। दम निकल गया इस आवाजे गजब से। जब मैं लरजता हुआ उनकी ख्वाबगाह म गया तो उन्होंने बडी भारी आवाज म इरशाद फरमाया, देखिए साहब यह मेरी दिली तमना है कि आप इस दुनिया म फूलें फूलें, आपकी दौलत मेरी दौलत से बढ जाए आपका मतवा मुयस हजार गुना ऊचा हो जाए आप जिदगी के हर शीवे (क्षेत्र) म मुझसे आगे बढ जाए मगर वान खोलकर सुन लीजिए कि मैं इने बरदाशन नहा कर सकता कि खा साहन आप मुझसे शायरी म भी बढ जाए। रात के मुशायरे म आपको मुझसे ज्यादा दाद मिली। अब आपका मेरे साथ मुशायरे जाना बंद—कतई बंद। गजब खुदा का, बाप से ज्यादा धेटे को दाद मिले। मैं यह उल्ली गया बहन का मौका नहा दन का—सुना खा साहन आपन।

मेरे बाप भीर का गालिब पर तरजीह देन थे। हल्की फुल्की ज़रान म

१ अधिक उत्तान की पाड़ा      २ मुस्करान  
रोने सगी।

शेर बहते और दाग के इस शेर पर अमर भरत थ

बहन हैं उस जवान-उदू  
जिसम न हो रंग फारसी का ।

एक रोज मैंने उनकी विनम्रता में अपनी एक गजल इस्लाम के लिए पेश की  
जिसमें जा-बजा फारसी तरतीबों थी और एन मिसरा या

हमारी जितनी यानी बफाए राजदा तक है

उन्होंने त्योरिया पर बल डालकर फरमाया मुहान अल्लाह यानी  
बफाए राजदा तक है । इस यानी का दाग नहा दी जा सकता । मुझे इस  
बात का शरीर खोफ है कि तुम कुछ दिन में गुमारे-मुमहाए भरगून-बुत मुयिरल  
पसद आया (गालिब) तक जा जाओगे । ना साहब मैं तुम्हें इस्लाम नहीं  
दूंगा और तुम्हें अजीब साहब के सुपुत्र कर दूंगा । वह भी यानी बफाए  
राजदा और गुमारे मुमहा के बरतने वाला में से है । दोता में खूब निवाह  
हा जाएगा । उन्होंने अजीब साहब का बुलाकर मुझे उनका शागिद बना लिया  
और शागिदी उस्तादी का यह सिलसिला छ बरस के अंदर ही टूट गया ।

इसमें कोई शक नहीं कि अजीब साहब बहुत ही अच्छे उस्ताद और बहुत  
जानी बुजुग थे । जहां तक साबान की सेहत और लहजे की नजाबत का ताल्लुक  
है उनकी ज्ञात से मुझे बहुत ज्यादा फायदा हासिल हुआ । जब मुझे साफ तौर  
पर यह महसूस होने लगा कि मेरे चित्त की राह उनसे मुश्किल है और  
हम दाना की कल्पना एक ही समत में सफर नहीं कर रही है और उनकी  
इस्लाम से मेरे रो का लफ्जी रंगो रोगन तो जहर उभर आता है लेकिन  
मानवीयता (भावाय) धुंधली होकर रह जाती है तो मैंने इस्लाम लेना छोड़  
दिया ।

लेकिन इससे मेरे और उनके ताल्लुक में किसी विस्म की तल्लखी राह  
नहीं पा सकी । मैं हमेशा उनके रूबरू सर शुकाता और वह हमेशा मेरे सर पर  
हाथ फेरते रहे ।



इसी तरह हमारी मजबूत पार्टों ने डाकखानवाला को भी इस कदर डरा दिया था कि जब अलीगढ़ से बाहर सर करने जाना चाहत थे तो वे हमारे घरा से बुलावे के पर्जों तार हमारे नाम भेज दिया करत थे ।

अपनी पार्टी के तमाम मेम्बरा के नाम मुझे याद नहीं रह हैं । पटन के सयद अलीअब्बास सयद मुबारकअली रामपुर के, मुहसनउल्लाह खा अलीगढ़ के पास के, अदुल जलील खा के नाम भूले नहीं है और यह भी याद है कि इस पन्द्रह-बीस लडका की टोली के सरदार अदुल जलील खा और उनके नायब थे मुहसनउल्लाह खा ।

एक बार जब हम पांच लडके यानी अबासअली मुहसनउल्लाह, अदुल जलील और मैं सालाना इम्तहान में पास हो गए तो हम लगा में यह मिस्वीट हुई कि पास होने की खुशी में आगेरे जाकर दिवाली देखें ।

लेकिन इस जय्याशी के वास्त रफया कहा से आए ? और छुट्टी कैसे मिले ? यह बड़ा टेरा सवाल था । अबासअली ने मशविरा दिया कि हम सब अपने अपने बापा का खत लिखकर पास हो जाने की पुशकवरी सुनाए और नये कोस की किताना की गलत सन्त और लम्बी चौड़ी फहरिस्त भेजकर पाक-पाक सौ रुपये मगवाए । यह तजवीज पचा ने बहुत पसन्द की ।

मुझे खत लिखे जब छ सात रोज़ हो गए तो एक दिन देखा कि दारोगा उम्मीदअली चले आ रहे हैं । उन्हें देखते ही मेरा माया ठनका । हा न हो दाल में कुछ काला ज़रूर है । मैंने सलाम किया सबकी धरियत पूछी और उनका आने का समय दरियाफ्त किया । उन्होंने कहा— खा साहब मनीआडर कर रहे थे, मगर बड भया ने कहा कि रकम किसी के हाथ पड मास्टर के पास भेज दी जाए । मैं सन से होकर रह गया लेकिन चेहरे से परेशानी जाहिर नहीं होने दी और मुहसनउल्लाह के पास जाकर जो इम वक्त जंगल के कमरे में गए हुए थे सारा मोजरा बयान कर दिया । मुहसन खाण दर गौर करन के बात आईना देखन लग । मैंने कहा— 'माशा अल्लाह ! मैं मुसीबत में पिरा हुआ हूँ और तुम आईना देख रहे हो । उन्होंने मुस्कराकर कहा 'तुम्हारी मुश्किल हल करने के लिए ही आईना देय रहा हूँ । मैंने कहा 'यह क्या मत वास कर रहे हा ? उन्होंने कहा 'तुम तो चुगल हा । मेरी बात समझ ही नहीं रहे हा । मैं आईने में यह देख रहा हूँ कि मैं अफ्रेजा की तरह मारा चिट्ठा हूँ और तुम्हारी धुआँसिमता से मेरी आँखें भी अफ्रेजा की तरह बगजा हैं । उन्होंने कहा 'तुम भी रितनी मोगा अल्लाह के आत्मी हा—जाआ कमर न मेरा बाग मूत मेरा बूट टाई और है ? आआ मगर इन तरह कि आई देय न पाए । मैंने पूछा— क्या ? उन्होंने हाठ पर अगुण रखकर कहा 'यामाग वक्त जाया न करो । जा चारों मैं बरी हैं जंगल में लगे । मैं उनका सब मामान ल आया । उन्होंने जंगी-जंगी मूत पहना और घर पर है रखकर कहा 'आआ मेरे माय । मैं मरपग-मा गया और उनका माय हा

लिया। वह सीधे हंड मास्टर के कमरे के बरामद म दाखिल हो गए और हंड मास्टर क चपरासी स कहा, 'हम इस वक्त एक मजाक करने आए हैं। अभी हेड मास्टर के आन म आघ घटा वाकी है। तुम मुझको इजाजत दो कि मैं हेड मास्टर की कुर्सी पर बठ जाऊ और जब शबीर एक आदमी को अपने साथ लेकर यहा आए तो उस दरवाजे पर रातकर मेरे पास आओ। फिर कमरे से बाहर निकलकर उस आदमी से कहो, चलिए साहब बहादुर के पास।' मुहमन न चपरासी क हाथ पर पाच रुपय रख दिए और वह हंड मास्टर की कुर्सी पर जा बठे। मैं दौडता हुआ मुमताज हाउस गया और दारोगा साहब का लम्बर जा गया। चपरासी ने हिदायत के मुताबिक अदर जाकर इतला दी और बाहर निकलकर दारोगा साहब स कहा, चलो साहब बहादुर के पास।

दारोगा साहब न हेड मास्टर को सलाम किया और जेब से किताना की फेहरिस्त और पाच सौ के नाट निकालकर हेड मास्टर की मेज पर रख दिए और पूछा 'हुजूर! इस रकम म कोई कमी-वेशी ता नही होगी?' हेड मास्टर न कहा 'बेल, यह रकम एरन्त बराबर है। अच्छा, खान साहब स हमारा सलाम बालना—अब आप जाइए।'

दारोगा उम्मीद अली सलाम करके मरे साथ बाहर निकल आए।

अलीगढ़ म बडी धूम धाम स हर साल नुमायश हुआ करती थी। एक रात का जब हम पशावरी पराठे कबाब और खारजे की चटनी खाकर निकले त हमारी चडाल चौकडी एक चाकू डुरी बेचनेवाल की दुकान के सामने जा खडी हुई। नुमायश की तज राशनी म छुरिया और चाकू ऐसे जगमग हो रहे थे कि मरा जी चाहा मैं उह बन्दर सीने म लगा ल। मैंने पठान दुकानदार से पूछा तो उसने कहा एक रुपया चार आना। मुहमन ने कहा, नहा दस आना। पठान बोला नाइ एक रुपया चार आना। खुशी चाहे टेक (Take), खुशी चाहे तो न टेक।

इन आवाजा को सुनकर कालिज क दूसरे लडके भी उसी तरफ आ गए और घट के घट लग गए दुकान के सामने। मुहसन ने कहा 'दस आना, दस आना।' पठान ने फिर वही जबाब लिया, एक रुपया चार आना। खुशी चाहे टेक, खुशी चाहे न टेक। यह सुनकर मुहसन चिढ़ गए और तमाम लडका स इशारा करके कहा 'गाजियो, बन्ने, टूट पडो और लूट लो माले गनी मत को। यह दावते-आम सुनकर टूट पडे लडके छुरिया चाकूआ पर। पठान झपटा। लडका ने उम दबाच लिया और लुटने लगी दुकान धडा धड। पठान न पुलिस! पुलिस! पुलिस! चिल्लाना शुरू कर दिया। पुलिसवाले थपट पडे। हमने छुरिया तान ली। थ ठिठक गए। इतने म एक शामत का मारा अग्रेज पुलिस अफसर भाटर साइकिल पर बठा इधर आ गया। जब उसने भाटर साइकिल स एक पर तीचे उतारकर हम डाटना शुरू किया ता टूट पडे हम



सब उसपर । और इतना पीग कि वह बहोश होकर गिर पड़ा । हम सब के सब माले गनीमत लिए और खुशी चाह टप, खुशी चाह न टप' के नार लगात वहा से भागकर कालिज में आ गए ।

एक राज मरे एक लगनबी दास्त और मर दास्त प्रिंस मिर्जा आलमगीर कदर का भाई जहागीर कदर हमारे पाम आया फरियाली बनकर । वहन लगा, शबीर साहब एक फस्ट र्थर फूल लडका फजल इलाही है । वह साला अपने हुस्न पर इस कदर मगरूर है कि सीधे मुह बात ही नहीं करता । पुटठे पर हाथ ही नहा रखने दता । तुम्हारी पार्टी माशाअल्लाह बड़ी तगडी है । उम नीचा दिखाओ ता मैं तुम्हारा गुलाम हा जाऊ ।

हमारी पार्टी लगर-लगोटे बसकर जहागीर कदर की मदद के वास्त आमाग हो गई । इतवार के दिन जहागीर कदर का दूल्हा बनाने और हार फूल दुपट्टा नकली दाढी और ढोलक लेकर हम दस-पंद्रह लडके बरातिया की तरह बच्ची पाक पहुंचकर फजल इलाही के कमरे में मुबारकवाद मुबारक वात मुबारकवाद के नारा के साथ दराना घुस पड़े । फजल इलाही ने, जिसके मुतालिक 'सारी दुनिया एक तरफ फजल इलाही एक तरफ का गलगला हर तरफ बुल्द था तबेरिया पर बल डालकर कहा 'मैंने तो आप लोगा को नहीं बुलाया था ? जलील ने कहा 'दुल्हनें भी किसीको बुलाया करती हैं जना ? हम जहागीर कदर दूल्हा से तुम्हारा निकाह पढाने आए हैं ।'

उस लडके ने काशिश का भाग निकलने की । हमारे साथिया न उसे पकड़ लिया दुपट्टा उसके सर पर डाग दिया । जहागीर कदर को हार फूल पहनाए जलील ने जब से नकली दाढी निकालकर मुह पर लगा ली और काजी बनकर उस लौट का जहागीर कदर से निकाह पढा दिया । साथिया ने ढोलक बजा-बजाकर नीचे स्वरा में शादियाने गाने शुरू कर लिए । बरामदे में मला-सा लग गया और हर तरफ कटेकहे गूजने लगे ।

इतने में किसीने यह देखकर कि हंड मास्टर राउंड लगाता चला आ रहा है, हमें आगाह कर लिया । हम सब डरे हुए हिरनो की मानिंद भाग खड़े हुए—और दूल्हा मिया अभी उठ ही रहे थे कि हंड मास्टर सर पर आ पड्चा । फजल इलाही ने उससे फरियाद की । उसने जहागीर कदर से पूछा 'तुम कौन हो ?' जहागीर कदर की जवान से धबराहट में निकल गया 'Sir I am bridegroom (जनाब मैं दूल्हा हूँ ।) हंड मास्टर ने बेल मिस्टर ब्राइडग्रूम बेल मिस्टर ब्राइडग्रूम वह-वहकर उस बंता पर घर लिया ।

बराती ता साफ बचकर निकल गए और बैचारे ब्राइडग्रूम साहब पिट गए । इस वाक्य के एक हफ्त के जदर हम तीना लडका यागी मुहसनुल्लाह खा अबदुल जलाल खा जोर भाग चलकर हसरते-जोश मलीहावाती बननवाले शबीर हुसन खा को भी स्कूठ से निकाल लिया गया—

बहुत बे-आबरू होकर तरे कूचे से हम निकले ।

## मेरी जवानी तक का हिन्दुस्तान

मेरे हालत के साथ साथ मर उम हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक और सामाजिक हालात भी सुन लीजिए, जिन्होंने मुझे प्रभावित किया और साचे में ढाला था।

तहजीबी एतबार में उस वक्त हिन्दुस्तान दाराहे पर खड़ा साच रहा था कि मशरिकीयत (पूर्वीयत) पर कायम रहे या मगरिवीयत (पश्चिमीयत) की ओर मुड़ जाए। मुन्त उस वक्त खालिस मशरिकी 'नीम मशरिकी' और 'मगरिवी —तीन गिरोहा में बटा हुआ था।

खालिस मशरिकी गिरोह की अकमरीयत थी नीम मशरिकी गिरोह की सान्नात कम थी आर मगरिवी गिरोह अकरीयत (थोड़ी गिनती) में था।

खालिम मशरिकी गिरोह के चेहरा पर लावी या खशखशी दालिया थी और सरा पर पट्टा, पट्टा पर अम्मामे, दस्तारें शिमले या दोपल्ली और चौकानी टापिया, पाव में गितले और सलीमशाही जूत बड़े पाइचा के पायजाम या औरेवी घुटन अवायें-अवायें अगरे दगले, कघा और कमरा पर बड़े-बड़े हमाल चिक्कन के कुत्ते, रई की सन्धिया और हाथा में खाके शफा की तस्वीहें जगुलिया में फिरोज की अगूठिया, हाला और शाम लगी जगें।

नीम-मशरिकी गिराह दाने मुडाता गैरवानिया चुन्त पायजामे पम्प जूत इस्नामाल करता और जेबा में घडिया रखता था, जिनकी जगैरें दोना जेबा के दरम्मान लटकती रहती थी।

और मगरिवी गिरोह सूट-बूट और हैट में गक रहता था। लेकिन दादी के साथ मूछें नहीं मुडाना था।

नवाब साहब की बेगम हा या बरिस्टर साहब की बेटर हाफ (Better Half) दाना बड़ी सस्ती के साथ पदों की पावद थी। डाली और पालकी के सिवा कोई बीबी घर में बाहर कदम नहीं रखती थी। और ता और औरता की आवाजें और उनका बज्ज भी पर्नानशीन था। यानी कोई बीबी इस बदर जार से नहा बाग्नी थी कि मदनि तक उसकी आवाज जा सके। और जब बाई औरत पालकी में सवार होती थी ता पत्थर का टुकड़ा या सिंग पालकी में रख दी जाती थी ताकि बहारा का उसके जिम्म का सही अन्जान न हा सके। बाविया ता बीविया, मामाए जसीलें और लीडिया तक पदों की पात्र था।

जनाने में आने-जानवाले बाहर के बच्चा से भी जगकि के दम-न्यारह घर में के हा जात थे पदा गुरू कर लिया जाता था। और ता और वाप दादा नाना बाचा पूषा के सामन भी औरतें मरा पर पन्तू टावर जाया बग्नी थी और किसी औरत की यह मजाल नहा थी कि वह अपन बजुगों की

मौजूदगी में अपने बच्चे को गोद में ले ले।

जानाने मकान की पिंजा को पवित्र रखने का यहाँ तक खयाल किया जाता था कि किसी तरकारीवाली को यह इजाजत नहीं थी कि वह लम्बी लम्बी तरकारिया जैसे लौकी, तुरई केले चचेड़े वगैरह को टुकड़े-टुकड़े किए बगरसालम हालत में अन्दर ले जाए इसलिए कि सूरत के लिहाज से इन तरकारिया को 'अश्लील' तरकारी खयाल किया जाता था।

अपने लडकपन का एक वाक्या बयान करता हूँ। मलीहाबाद के एक लडके की शांता में नाव हो रहा था कि वालाखाने से एक औरत चाकर इधर देखन लगी और साहबाने महफिल में से एक साहब ने उसे बंदूक मार दी। साहबे-खाना देगा के हलके में छड़ थे कि उहाने गोली चलन की आवाज मुनी और दौड़े हुए महफिल में आए। गाली मारनेवाले का साहब ने उनसे कहा 'भाई आपकी बीवी ऊपर से जान रही थी। मुझसे यह बह्याई बरदास्त नहीं हुई मैं गोली मार दी। साहबे-खाना ने उसकी पीठ ठाकर कहा 'बहुत अच्छा किया आपने। वह तुरत अन्दर चले गए। थोड़ी देर में एक लाश पीघते हुए आए और कहा भाइयो देख लीजिए मेरी बीवी नहीं लौडी जान रही थी। अल्लाह ने मेरी आवर और भरी जान दाना चीजें बचा ली।

सियासी एतबार से उस बकन सनाटा छपा हुआ था। पौ फटन में बहुत देर थी। रात में दो या तीन बजे का वक़्त था। लागा की अक्सरीमत घरीटे ले रही थी। कुछ विस्तर पर पड़ करबट ले और कुनमना रह थ और बहुत थोड़ लाग निलन और गाखर के गजर मुनकर बेगार हो गए थ और धीम स्वरा में आजागी के चर्चे कर रहे थे। भारत माता चौकना हाकर और इधर उधर दखर लि ही लि में सोच रही थी—

अज कुजामी आय इ आवाश-दास्त

(मुन यह दास्त की आवाज कहा से मुनाई पड़ रही है ?)

फिरगो के वान तव भा व आवाजें पहुच रही था लेकिन उमरा गरर कह रहा था कि, यह हवा भरे चिरागा का बुजा सनती नहीं।

लकिन महामा गाधी जिम वकन लगानी बाघरर मगान में बूट पड़ता पौ फट गई और हर तरफ से ये आवाजें आन लगा कि तन मा तप्ता—  
आजागी या मौन।

गाधी की आधा न हूनमन के ओगान उगा लि। हूनमन यह गाघरर हाय मगन लगी कि हमन मुगमाना के एक फिरक का दूगरे फिरक और हिंआ के एक फिरक का दूगरे फिरक और फिर समूच हिंआ और मुगमाना का एक दूगरे मगनन दिन के मिगिन में जा लागे गया पानी की तरफ घटा गया व बसार गया और मार मगमाना और हिंदू मिगन आज हमन मुकाबल के वामन ला गए। मग अमान निहाया मगमाना है। वगैरे दस्त लिपा जाय म भजनन कितन का ?

आखिरकार हुकूमत ने एक मसूबा तयार कर लिया। पुलिम और फौज के हल्के म विगुल बजा लिया। एक तरफ जेला का दरवाजे खोल दिए गए लाठिया बरसन और गालिया चलन लगी और दूसरी तरफ पकड़ बुलवा लिया गया हिन्दुआ और मुसलमाना का दीनी रहनुमाजा यानी महामहोपाध्याया और शम्सुल उलेमाआ को जिन्हें हिन्दू मुस्लिम फिमान् बरपा कर देने के लिए बरमा न धर बठे बज्जीफे मिल रहे थे और बुरी तरह फटकारा गया उन्हें कि उन्होंने ऐसी गफ्तान क्या बरती कि हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद का फितना बरपा हो गया।

और इसके साथ-साथ पुकारा गया उन तमाम नवाबा राईट आनररोग, खानबहादुरा, रायबहादुरा रईसा, ताजरा, सेठा, मूदखोरा जमींदारा जागीर-दारा तातबुकेदारा और देशी रियासता के राजे-नवाबा को जिन्हें हुकूमत साडा की तरह पाये थी कि ए पिठओ। बाग्रेम की तरफ अपनी तोपा के मुह मोड दो और आज्ञानी के दीवाना पर अपन कुत्ते छोड दो।

अब क्या था, हर तरफ पकड़ धकड़ का तूफान बरपा हुआ जेलें भरी जाने लगा मूलिया खना कर दी गई और हर तरफ से गुलगुले बुलद होन लग कि खाक म मिलानर रख ले अग्रेख बहादुर के गदारा का। यहा तक कि आग चलनर जगियानवाला बाग की जमीन खून म डूब गई और तडप-तडपकर ठन्ने हाने लगी लाश देगमकता का।

## राष्ट्रीय आंदोलन से लगाव

यह घटना शायद १९१८ की है कि सबसे पहले मुहम्मद मुस्तकीम न मुझे गांधीजी की शरूसीयत और तहरीके-आजादी की अहमीयत से आगाह करके कांग्रेस के सालाना इजलास में शरीक होने के वास्तु अहमदाबाद भेजा था। शाम के बख्त अहमदाबाद पहुँचा। एक कम्प में जाकर ठहर गया। घना माँग था खाना खाने से गया। पिछले पहर यह सपना देख ही रहा था कि मैं तहत-मुल्मान पर बड़ा उड रहा हूँ कि मेरा कम्प ताना से गूजन लगा। जाध घुल गई घड़ी देखी। सवा चार का बखत था। उठकर बाहर जा गया।

देखा कि मर कम्पा के शहर पर सलोनी-सी गुलाबी राशनी बरस रही है और सबड़ा सुन्दर गुजराती लडकियाँ पतली-पतली बमरा में सुन्न पट्टियाँ बांधे और हाथा में शमए उठाए बीबी तराने गा रही है और पूरी दुनिया छम छम नाच रही है।

मैं सुबह होत मौलाना अबुलकलाम आजाद के पास पहुँचा। उन्होंने हसकर कहा 'मगीहायात में जा लीया आपन सुनाया था, आज तब उसका मजा ल रहा हूँ।'

### महात्मा गांधी से पहली मुलाकात

मौलाना आजाद के साथ गांधीजी से मिला। उनकी मुगल न मर गोंय बांध के मुग पर तलाक से घण्टे मार लिया। मर लि म उम बख्त य वान था कि इम कतर टूट हुए जिम्म और म कतर रिगड म कतर का जाग्मा दुनिया में कत हा क्या खरता है? हिट्लरान का जादानी और गांधी? मर मुग और ममूर का दाग? तिराशा न मुग दार लिया।

लखिन जय विभिन्न समस्याओं पर उद्दान अपना खदान याग तो उादी राय और उनका लख की परिपक्वता और दुन्ता न यकीन लिया लिया कि हिट्लरान का जिम मने मजान का इतदार था कत जा गया है। अब हमारा लि बरूर जाणम। गांधीजी के पाग पतिन मातायात का मातरडाग निजय लदमी मर गुसाण का बठी था। उम बख्त तब मैंन उगाग दुन्न लया त। था। मर लि कतर उर और म माच म कत गया कि अरर मरर हुगर क माच उनका। तानी हा ताना ता बीन मी कयामा आ ताना। हम मर लखन है। आजादी के बांध भी हम मुता का तल लखन और मर दुमर का भयाग रदग।

उन म मौलाना मुहम्मद अग मौलाना शौकत न। मौलाना आजाद, मुहम्मद और पतिन नरर आ ग। नरर न मुझे कत लग लिया और मुग

वह जमाना याद आ गया जब मैं लडकपन में अपने बाप के साथ उनके बाप के मकान में ठहरा और वहाँ सबसे पहले उन्हें देखा था। उस वक़्त वह भी ब्यामत थे और मैं भी।

इसके बाद हम सब पडाल जान के लिए बाहर आए। अल्लाह-अल्लाह का हिन्दू मुस्लिम इतहास का वह जागा खराश वह कोमरा-गंगा की मौजें दोश-वन्श। आम्ना में वे इराक़े के हाकत गरदाय व भूरमाआ व गरजन शवाय व गुजरानी वालटियर लडकिया व जाशीय गीन वह पीत की रीन वह उमगा का जोर वह तरगा का शार, वह जियाया की सजधज वह नारा की गूज-गरज, वह तमलाआ व तूफान व ली दन अरमान—एसा मातूम हा रहा था कि हिन्दुस्तान की जमीन आसमाना की तरफ हुमन रही ह। हर तरफ एक विजली है कि लपक रही है। फिरगी खडे सीना कूट रहे हैं टुकूमत व गरर के शीगे छनाछन टूट रहे हैं। तूफान बनकर आ रहा ह स्वराज और हिन्दुस्तान के नग सर नोजवाना व क़त्मा की तरफ बहता चला आ रहा है बरतानिया का ताज।

कांग्रेस पडात में कम्म रखा लागा व जागी-खरोश का दखा और खून मेर यत्न में सीन करोड भील प्रनिमण की रफार में गरदिश करने लागा।

### गिलाफन कमेटी का इजलास

रात के वक्त जब मिगफत कमेटी के इजलास में शरीक होने के लिए पडात व पीछे से गुजरन लागा (जहा राशनी और आमना रफन कम थी) तो मैंने एक वाटियर लडकी का दीवानाबार वामा ल लिया बार म् वामा लत ही पडाल से आवाश बुन्द हुई— नसरे मिन अल्लाह व फतह करीब।

मैंने इस नार का बहुत अच्छा शगुन समया। थोड़ी तर वात खिलाफन में पडात में आ गया। देखा कि मौगना हमरत माहानी और मत्मा गाधी व दरम्यान बनी रम्मानशी हा रही ह। एक तरफ गाधीजी और उनके दूसरे साथी इस बात पर अडे हैं कि अभी ब्रिटिश राज व भीतर स्वराज का भाग की जाए और दूसरी तरफ फकत मौगना हमरत माहानी हैं जो मुकम्मिल आजात का प्रस्ताव पाम कराना चाह रहे हैं।

हजरत हमरत माहानी का सयन लाय-लाय समचाया। लेकिन वह नहा मान और मोक्ष स्टज की जाए चल पडे अपना मुकम्मिल आजाती का प्रस्ताव लेकर। स्टज ऊचा था और हमरत डिगन क् व आत्मी थ। मैंने सत्रा दकर उह स्टन पर पडुचा लिया और जब उहान अपना प्रस्ताव पज किया ता पडाल में हगामा बरपा हो गया। मैं इस हगामे से ऊपर उस वाटियर लडकी के पास पहुच गया जो पडाल के पीछे मेरा इतरार कर रही थी।

जब मैं अम्तजाद में लौटन लागा ता छोट गदश (जिनका शिफ आग आणा) न कहा भाई वशीर हसन का मुझे आज धरे शरीफ की जियारत

करा दो। एस मौके रोज रोज नही आएंगे। मैं उनकी बात मजूर कर गी। अजमेर स दो चार स्टेशन पहल ही डिस्टट सिगनल डाउन न होने से गाडी एक जगह रुक गई। मैं देखी कि एक बला की हसीन लडकी सामन छडी हुई ह। उसके हुस्न न मजूर कर दिया कि उस पास स जाकर दखू। मैं गाडी स उतरपर उसक नजदीक पहुच गया और इम बदर मत्सुग्ध हुआ कि गाडी रेंगन लगी। छोटे दादा ने गला फाट फाडकर जावाज दो।

मैंने पुकारकर कहा आप जाए, अजमेर के वेंटिंग रुम म ठहर जाए। मैं दूसरी गाडी स आ जाऊंगा। दूसरी गाडी से शाम के बख्त अजमेर पहुच गया। जब खाना खाकर लटने लग तो छोट दादा न कहा भाई शबीर हुसन खा जाओ जियारत कर जाए। मैंने कहा आप जाए। मैं राजा साहब का मेहमान हू और जब तक खुद मेजवान बुलान नही जाएंगे मैं नही जाऊंगा। छोट दादा ने मुझे इस तरह धूरकर देखा जस म कुफ बक रहा हू और मुह बनाकर दर गाह चल गए।

रस्तूर के मूताविक कोई चार बज मरी आख खुली। नहा धारर गरबानी पहनी जाए चाहा कि जुगनू को जगानर टहलने निकल जाऊ। लकिन दस्तूर के गिलाफ नीद का एक ऐमा गटरा झाका जाया कि जूता और शेरबानी उतारे बगर मैं चारपाई पर लटा और सा गया। इसी आलम म यह सपना देखा कि एक मर्ते-बुजुग मरे सिरहान छडे बडी दिलदारी से मुसकरा रहे है। मैंने नाम पूछा ता उहने सस्तह कहा मरा नाम है मुहीउददीन और मरागान की हैसियत स आपनो बुलान जाया हू। शन आपकी पूरी हो गई। अब तो आइएगा ना ?

मेरी आख खुल गई। छोटे दादा का जगाकर सपना मुनाया। उहे हैरत हुई। कहन लग भाई शबीर हमन खा जाप तो छुरे रस्तम निकल। इमक बान हम दोना दरगाह चल गए।

अजमेर स पलटकर जय रतनऊ पहुचा ता गलगला सुना कि टगोर आए हैं। उनस मिलन गया। उहान मुझे सर स पाव तर देखन के बान अग्रजी म पूछा क्या यह बात सच है कि मैं एक नोजवान शायर के चहरे का दख रहा हू ? मैंने सर बुकाकर अग्रेशा म जबाब दिया 'शायद' उहने मरा नाम पूछा। जब मैंने अपना तख्तूम बनाया ता उहने बडे तपाक म हाथ मिलाया और कहा यह अजीब इतफाक है कि कल हा सरोजिनी नाथनू न आपनी एन नरम तनू महर (मूर्खोत्थ) का अनुवा मुनाया और आज आपस मुग कान हा गई। आपकी नरम लाजबान है।

इमक बान उहने बनाया कि मरे बाप फारसी के बड स्त्रीर थ और शीवान हाकिम उनेक मिरहान रखा रहता था।

जब मैं रस्तम हान लगा ता उहने कहा 'क्या यह मुमकिन नहा कि आप शानि निकनन भाकर कुछ रास के लिए मेरे साथ रह और हाकिम की

स्मिथ स मुझे बखूबी आगाह कर दें ?" मैंने बड़ी चुशी के साथ उनकी दावत बतूल कर ली और जुगनू खिन्मतगार को लेकर वहा पहुंच गया और पढ़ने के लिए बहुत सी किताब भी साथ ले गया ।

वहा की ितंगी बड़ी साफ थी । लेकिन गोश्त वहा नहीं खाया जा सकता था । इसकी तकलीफ जरूर थी । फिर भी जुगनू चारी छिप गोश्त का इतना काम कर दिया करता था ।

लडन और लडकिया के मेलजोल के मामले में टगोर कितने विशाल हून्य थे इसका अंदाजा हम घटना से किया जा सकता है कि एक दिन किमी बूटे प्रापसर न आकर जब एक लडकी और एक लडके के बीच हृद से ज्यादा सम्बन्ध की शिवायन की तो उन्होंने उससे पूछा, 'यह सूरत जत्र में पदा हुई है ? जत्र उम प्रोफेसर ने बताया कि इसमें जत्र को कोई दखल नहीं, ता टैगोर ने कहकहा मारकर कहा तो फिर इसमें एतराज की बात ही क्या है कुदरत के तकाजा पर बंद बाधना मानव-स्वभाव के खिलाफ ना इनाफी ही नहीं, बगावत भी है । (यह जान मुनकर मैं भी लडकिया के साथ छुटकर मिलने जुलन गया ।)

मैं चाहूँ सूफीवाद के दायरे से निकलकर भौतिक चिंतन की आर आहिस्नगी से बढ रहा था पर इसके बावजूद टगोर की शायरी मुझे बहुत प्रभावित किया करती थी । मैं उनके अनुवाद पढ़-पढ़कर सर धुनता था । अब भी मेरे दिल में यह धार है कि कभी कभी मूफियाना शायरी पर मैं झूम उठता हूँ । कारण इसका शायद यह है कि शायर किसी मजिल में भी सुबक और खुरदरा फलसफी नहीं बन सकता । अगर मैं बगाली जवान से चाकिफ होता तो टगोर की शायरी का बगालिया की तरह समझ सकता । लेकिन मुझे इसका बहद अप्सोम है कि मैंने उनकी शायरी का अपेक्षा अनुवादों के माध्यम से पढा और बगालिया की तरह समझ नहीं सता ।

टगोर विशाल हून्य त्रिनाप्रिय भले हमसे ज्यादा बतवल्लुफ, भावुक और हुस्नपरस्त इसान थे ।

लेकिन एक चीज उनमें ऐसी थी जो मेरे दिल में घटका करती थी और वह थी उनकी दिखावे की आदत । मैंने हमेशा इस बात को बुरी नजर से देखा कि जब कोई विदगी उनसे मिलने जाता था तो उसके आन से पहले वह बा सवरकर एक खास मुकाम पर बठ जात थे । धूपदान उनके पीछे सुलगा दिया जाता था और वह रूपवती कयाजा का अपन इद गिद खडा करके या इटरयू दिया करत थे कि आनवाले को यह गुमान हान लग कि मैं किसी रहस्यमय दबला को देख रहा हूँ ।



## एक सपना

यह १९२२ का जिन है कि एक दिन शाम को यत्न जय में 'कामे-जय' में बैठा हुआ सामने की फूली हुई लालिमा की तरफ दृष्टांत कर रहा था ता मरी बीबी न मुझसे कहा कि तिन रात तुम्हें सही वाता वा घुन लगा रहनी है। भूल से भी अपन गाव ग्राम की तरफ नहा गत। राजा हमन को तुमन मिलेकर बना दिया है। वह एगा दुद मचाए हुए हैं कि अन्तःहृत्त जोर बना ले। दोना हाथा म लूट रहे हैं तुम्हारी रियाया वा। हर तरफ माथा लूट मची हुई है गाव-ग्राम वा न हिमाय है न रिताय और जय तुम हिमाय मागत हो वह वाता के तीत उडान लगत हैं और जवानी हिमाय बनाने उन्टे कुछ तुम्हारे ही जिम्म निवाल देत है। तुम्हें दस हजार दरद बीम हजार अपनी जेय म रख लेत ह। यह कागज वा नात्र आविर चन्गी बन तन। मैंन कहा 'अशरफजहा अब मैं खुद ही काम करूंगा। उहान तुनकरर कहा अरे तुम इस काबिल हान तो फिर रोना क्या होता? तुम तो अपनी जायन्त वा एक बडा हिस्सा जोर लाख डेढ लाख रुपये नकत आछें वन्त करन अपन बडे भया की नजर कर चुक हा। जा कुछ बचा तुचा रह गया है उस भी किसी की भेंट चडा दागे। डाक व तीन पात रह जाएंग। लडका वा याह हा सकया न लडक की पढाइ।

मैंन कहा अशरफजहा इतना लिल छोटा न करा। मरे पास जा कुछ बच रहा है वह भी पुना व फजल स इस कन्तर है कि हम-तुम बडे आराम के साथ निदगा बसर कर सकत है। उहान बिगडकर कहा 'सना अपन ही वार म सावत हो। अरे यह ता सोचा कि हमारे बच्चा का हथ क्या होगा? मैं पूछती ह क्या हमारे बच्चे अपन वाप दाता वा भ्रम कायम रख सकने?

बीबी वा य बातें सुनकर म सनाट म आ गया। लिल न कहा कहनी तो ठीक है। वह पहला दिन था कि यह सोचने ग्या अपनी आमन्नी और अपनी जायन्तद कस वनाऊ? जब खात कुछ समय म न जाया तो लिल उदास हा गया और चेहरे पर बडी बरसी बरसन लगी।

दूसरे कमरे म आकर अपने बच्चा के भविष्य पर गौर करने लगा। इतने म खुदा जाने यकायक क्या लहर जाई कि मैं नात' कहन ग्या।

म कि तिर नलाल से हिल गइ बरम काफिरी  
रेखाए-खाफ बन गया खन-बुतान जात्रिरी।

नात कहकर खाता पाया निस्तर पर लटा और लिफ आफकर सो

गया। नात सर मे गूजने लगी। बीबी के खर्राटा ने मरे पपाटे वोझल कर दिए। पारान की हवाआ ने लोरी दी और दो चार करवटें बदलकर सा गया।

पिछले पहर एक अनाखा सपना दखा—सच्चा सपना या मरी कल्पनाआ का जाल। मैं क्या फँसला कर? यह दुनिया बड़ी विचित्र और रहस्यमय है।

हा तो, यह सपना देखा कि एक चमकदार चेहरे क बुजुग मेरे सामन खडे हैं और चाद उनकी परिजमा कर रहा है। मैं उनकी तरफ निगाह उठाई, आखें चुधिया गईं। बार बार आखें मली, गौर से उह दखा। पल-भर मे हाफिजा जाग उठा। मैं पहचानकर उनके कदमा पर गिर गया और मुह मलन लगा उनके जूत पर। उहानि हाथा का सहारा देकर मुये उठा लिया। मैं रात हुए पूठा, क्या आप वही मरे रसूल ह जिहान अपना दीदार लडकपन भ मुझे दिखाया था। यह सुनकर वह मुसकराए और इरशात फरमाया, 'हा मैं वही तुम्हारे पहेले ख्वाब का मुहम्मद ह। यह सुनत ही मैं उनके कदमा पर गिरकर और उनके जूत स मुह रगड रगडकर रोने लगा।

मरे मुहम्मद न फरमाया 'उठ खडे हो।' मैं हाथ बाधकर उनके स्वरू खडा हो गया। उहान कहा 'तुम हसन के लिए बने हो, रीत क्या हो?' और मरी पाइती की जानिब इशारा करके हुक्म दिया कि तुम उस शम्म के पास चले जाओ। मैं उधर निगाह उठाई तो देखा कि एक बादशाह सर चुकाए और हाथ बाधे खडा हुआ है। मैं कहा 'ए मेरे रसूल यह कौन ह?' उहान इरशाद फरमाया निजामे त्कन है। तुम्ह दस बरम तक उसके जेरे साया रहना है।

यह सुनकर मेरा दिल त्तम तरह घडकन लगा कि उसकी घडकना न आख खुल गई और रात राने मेरी हिचकिया बध गइ।

जी भरकर रो चुका ता बिस्तर स उठा। मुह हाथ घोन लगा। मुह पर ना चार छपकके जार जोर न मारे ता ह्वास बजा हा गण। ह्वास बजा होत ही एक जसीम आश्चय न मुये जा घेरा। सर पकडकर सोचन लगा कि मैंने गेमी उसर जमीन पर मरान बनाया है, जहा दूर तक वाग नहीं है। जोर ता जोर अभी तक इस मकान का फूल के गमला से भी नहा सजाया। इसक वावजूत एक निराली खुशनु मेरा इहाता किण हुए है और खुशनु भी गसी कि इत ब्राफ फूल भी उसका मुकाबला नहीं कर सकते। आखिर यह तिलिम्म क्या ? यह स्वाग के असर का जादू है या सचमुच की खुशनु है? यह खयाल कर्त मने बीबी का जपाया कि दखू वह भी खुशनु महसूस करती हैं कि नटा।

बीबी आखें मलनी हुई उठी पूछा 'टहान जा रहे हा?'

मैंने कहा और क्या नोकर ही इस बात क हैं। जल्दी ग मर गिपाई घना दा। बीबी न उठकर कुल्लिया का पानदान खाग और द्रम ही टहान चुने की चमची उठाई, बिगटकर मुये देखा और पूछा, 'मध-मध दन'



## निजाम की नौकरी

धमभीरु बीबी मेरे पीछे पड़ गई कि तुम को रमूल अल्लाह ने हुक्म दिया है दबन जान का जाओ और जल्दी जाओ।

बीबी बचारी को तो मैंन खट स धमभीरु कह लिया लेकिन अपने गरेवान म मुह डालकर यह बात नहीं सोची कि उस वक्त मैं भी कौन सा बुकरात-आजम था। मैं खुद इस बगारत क इम्तहान के लिए हैदराबाद जाना चाहता था। यानी बीबी क दिल म ही नहीं मेरे दिल म भी चोर था जा रग लाए बगर न रह सका।

यह स्पष्ट कर दना भी जान्ती है कि दबन का सफर खाली रोजी ही का मसला नहीं था बल्कि मेरी एक रोमानी गुथी भी ऐसी थी जो हैदराबाद जाए बगर खुल ही नहीं सकती थी।

हैदराबाद जाने की बात मरे दिल म ठन चुकी थी मगर सोचता था कि वहा मुझ पूछेगा कौन ? न एम० ए० हू न सत्तल फाजिला। ले-देकर मरी सिफ एक निताब रुहे-अदब छपकर लोकप्रिय हा चुकी थी। मगर एक टुट्टटू कितान स हाता क्या है ? ब्यक्तित्व तो बनता है एक जुग बीत जाने और सालहा-साल खूने जिगर धूकन के बाद।

धर उस्मानिया यूनिवर्सिटी के प्रोफसर वहीदुल्लान साहब सलीम स पत्र ब्यवहार करके और महाराजा किशनप्रसाद के नाम हजरत इन्वाला मौलाना अबुल माजिद दरियावाणी, हजरत अब्दर इलाहवादी और मौलाना मुल्मान मुदबी से सिफारिशी खत हासिल करके मैं १९२४ के शुरू म हैदराबाद पहुच गया।

वहा मैं सवन पहले महाराजा किशनप्रसाद स मिला। मुझे देखते ही उन्होंने कहा, जास साहब, आपका मजमूए-नलाम रुहे-अदब देखकर मैंने तमन्ना की थी कि अल्लाह इस दरवश सिफत रईसजादे स मिलाए। सो मरी वह तमन्ना आज पूरी हा गई। मैंने वे सिफारिशी खत पेश किए। उट पढकर वह कुछ सोचन लग और मुझ अलग ले जाकर कहा, 'जोस साहब यह बात अपने तब रघिएगा कि सरकार आजकल मुझस नाराज है। अगर आप मरे सामाने म तशरीफ लात तो मैं उसी दिन आपका इतराम कर देता। बहरहाल मैं फायनास मिनिस्टर अब्दर हैदरी क नाम अभी खत लिख देना हू। वह मुझे बहुत मानत हैं। मुझ उम्मीद है कि वह आपकी खिन्मत म कोताही नहा करेग। यह कहत ही बाई तीन सप्ते वा लम्बा चौडा खत लिखकर मरे हवाल कर लिया और उसी वक्त फोन करके उन्होंने हैदरी स मरी जामरल्स सिफारिशी भी की। साय ही सर राय मसऊल का भी फोन पर हिशयत कर दी कि

यह मुग़ अपा साथ फिर हैरी ग मिंगा दें । राय मसऊ मुग़ हैरी ग पाग ले गए और कहा कि हमारा बीम ब यह एत उभरत हुए जापर है । हमारा फर्स है कि हम इसी होगी अगवाद् करे । आपन दाग हूतग चबाना १ भी इसी जबरान्ग गिफारिश की है और मगराजा १ भा यह गा आरती भजा है । हैरी साह्य १ गा पढ़ारकता दाब मुतागिग महाराजा मुग़ फान भी गर चुन है । फिर मरी तरफ मुह करव हैरी माह्य १ कता 'आप आदग जुमरात ब' तिन मुह दम यज मर पाग आ जादगा में आरता सरवार म मिला दूगा । १

अभी जुमरात म दो तिन बागी ध कि हैरी साह्य १ मुग़ चुग भजा । राय मसऊ भी कहा मौजूद ध । निहाया तफीग राय विलाद् और इधर-उधर की बाते करव उहाने मुग़ उा काभान का बडल निया जा शायरा ने उनक गिताय सर की मुवारयात ब तोर पर बहुर उनरी गिम्तन म पेज तिए थे । मैं यह बतआन पड चुता ता हैरी न कहा, 'जाग साह्य आप भा एक बतता कर दें ।

एक तरफ तो लख बतता की बतता मुनवर में भना गया और दूसरी तरफ चूरि में फिरगी हुकूमन स बजार या मरे चेहरे का रग बल गया ।

हैरी साह्य न मुग़म पूछा कि आप मचाया इस कटर सीरियस क्या हा गए । मैंने कहा आप घुरा न मानें तो बहू कि फिरगी जिस शम्भ को विताय देता है उस पर मा की गाली पड जाती है । यह गुनवर राय मसऊ और हैरी चिराग-या होवर घडे हो गए मुग़ तनहा छोडकर दूगरे कमरे म चले गए और मैं अपने ठिठाने पर लौ आया ।

जब यह बात सुनी तो नवाब मेहनीयारजग मरे पास आए और कहा कि मैं आपको अपने वालिद अमादुऊ मलिक के पास ल जाना चाहता हू । मरे वालिद सिफारिश के मामले म इस बदर सम्न है कि जब मैं कम्ब्रिज से इम्तहान पास करवे आया था तो उहाने मेरी सिफारिश तब करने स इतकार कर निया था । बहरहाल मैं आपको उाके पास लिड चलता हू हरबद मुफिरुल स दो फीसदी उम्मीन है । लेकिन अगर उहाने सिफारिश कर दी तो हैदरी साह्य की लाय सिफारिशा पर भारी होगी ।

उनके साथ बहा पहुचा तो देखा कि एक जस्ती पवासी बरस के बजुग बरामदे की बडी सी जाराम कुर्सी पर दराज है और उनके चेहरे पर विद्वत्ता और दृढ चरित्र की आभा बरस रही है । महनी साह्य ने परिचय दिया । दिल चस्पी की एक धारा भी उनके चेहरे पर नहा दीडी । मरे दिल पर जबरदस्त

१ हैरी साह्य क बाद स मस बडा वशा हुँ धा । मगर वह जो बहूवत है कि बचरी ने दूध दिया तो वह भी मापनी भरा । भुक्ते उनके लहज से बडी तकलीफ हुँ थी । वह बकरिया की तरह मैं मैं कर रहे थ और मैं तिल ही तिल म कह रहा था कि अल्लाह ने रोजगार की सूरत निकाली मगर एक बचरी की मासपत ।

घाट लगी। लेकिन पी गया। मेरी अहमियत जाहिर करने के लिए मेहदी साहब न कहा, "अन्ना, यह जोश साहब हुस्सामुलदौला तह बरजग नवाब फकीर मुहम्मद खा 'गवय्या' के पोत है।' यह मुनवर वह चौक पड़े और कहने लगे 'गुमाली हिन्दुस्तान का ऐसा वीन मा बाशिदा है जो इनके दादा के नाम म बाकिफ न हो। लेकिन इनकी जात म भी कोई जोहर है ?" मेहदी साहब ने कहा 'यह बहुत अच्छे शायर हैं। आप इजाजत दें तो जोश साहब कुछ मुनाए।"

उन्होंने कहा 'अच्छा।' मेहदी साहब ने भुभम कहा, जोश साहब, इरशाद। और जब मैंने मुनददस के तीन चार बंद मुनाए ता वह उठकर बैठ गए और कहने लगे, 'इम नौजवान म तो अनीस की रह बाल रही है— यह उम्र और इम कदर पुष्पगी। मैं ता समझता था कि आजकल के नौजवानों की तरह यह भी आय-बाय शाय कहत हूंगे। मगर इनके बलाम म खानी भी है और मानी भी। महेनी, खत लिखने का कागज लाआ।" मेहदी की बाछें खिल गईं। जल्दी से अदर जाकर कागज और बलम ले आए। आराम कुर्मी के दाना हत्या पर एक तख्ता रख लिया। नवाब अमादुल मलिक ने पूरे एक सप्ते का सिफारिशी खत लिखा और कहा कि मेहदी, तुम यह खत सर अभीनजग के हवाले करके मेरी तरफ स कह दना कि सरकार के स्वयं पेश कर दें।

नवाब अमादुल मलिक के भवान से गेस्ट-हाउस आया। छोटे दाना ने तार दिया। तार खोलकर पढ़ा तो मालूम हुआ कि मेरी बीबी परमा शाम की गाड़ी स हैरवाब आ रही हैं। मैं हैरान हा गया कि आखिर यह माजरा क्या है। मुगजमन ता दरकनार, मैंने ता अभी तक निराम को देखा भी नहीं और बीबी हैं कि चली आ रही हैं।

तीसरे दिन मेरी बीबी दाना बच्चा और अपन मामू को साथ लिए हैरवाब आ गई और गेस्ट-हाऊम पहुंचते ही गिगडकर बोली, 'मैं यहां दमनिए आइ हू कि तुम्हारे दोना बच्चे तुम्हारे हवाले कर दू और छुट अपनी हीर की अपुगी बुचनकर घा लू और इम दुनिया स सिधार जाऊ।' यह मुनत ही मेरे होश उड गए और घबराकर पूछा 'आरफजहा, मुग के वाला जन्दी बनाओ कि आखिर वान क्या है। उन्होंने रोने हुए कहा, 'मामू को बुगकर पूछ लो।"

मामू न जेव स एक तार निकाला। मैंने तार पढ़ा तो मालूम हुआ कि तिनो जग्गह के बन्दे न उनके पाम यह तार भेजा है कि तुम्हारे शीहर दूमरी शादी कर रहे हैं। तुरल हैरवाब पहुंच जाइए। मैंने कहा "आरफ-जहा, यह तार बिनकुट झूठा है। बीबी न कहा कि अगर यह तार झूठा और तुम सच्चे हा तो अपन बच्चा के बाजू परडकर कसम घा लो कि तुम दूमरा निवाह नहीं कर रहे हा। जब मैंने बड़े बच्चे के माय बगम घा ली ता उनका बेहरा बहा हुआ।

इतन म छाटे गग हगत हुए आण और मेरी बीबी के दिव पर अपनी

परमाही का मिता विठान की गातिर बन् भाई शरीर हमन या की बीबी, यह तार मैं निया था। मैं बुरा मानकर कहा, छोटे याग, आपका हरगिज गमा नहीं करता चाहिए था। उठाने कहा 'मरे भाई बुरा न माना। मुझ यह बन् हा सतना था कि तुम्हारा घर विगड और मैं बठा तमाग दयना रह। मैंने कहा आप कती बाँ बर रह हैं मरा घर विगड बन् रहा था ? उठाने कहा यह शोक यादी बात याग करा जो एव मडनी का पयाम लखर तुम्हारे पास आए थ। बीबी न विगडकर मुग दया और कहा ला जय ता बात घुन गई। हाय तुम कस याग हो कि तुमन अपन दाना बन्ना की बाहें पतडकर झूठी बसम या ली।

मैंने शल्लाकर बन्, अपन याचा का झूठी बसम यानवाक बगाई पर मैं हजार लानत भेजना हू। अब पूरी बात मुझ मुन ला। यहा एन बहून बड जागीरदार हैं। उनकी साहबजाती न घुना जान मुझ कम दय निया और वह मुझपर आशिक हा गइ। अपनी साहिबा क हाथ गत भेजा कि मरी मा न मरे बाप को इम बात पर खी बर लिया है कि वह आपन मरी शादी कर द। कल अद्या क मुसाहब शौक साहब आएग आपके पास। चुनाच दूसरे रोज ही शौक साहब ने आकर मुझने यह कहा कि अगर आप साहबजाती स निवाह करने पर जामाना हा तो आपके रहने क लिए एक कोठी और एक कार का इतजाम कर दिया जाएगा। आपके घर का तमाम खच जागीर स अग हागा और पद्रह सौ रुपय महीना जेब खच भी आपको निया जाएगा। बीबी न बडी घबराहट के साथ बात काटकर पूछा 'और फिर तुमने क्या जवाब निया ? मैंने कहा कि मैंने यह जवाब दिया कि शौक साहब मरी शादी हो चुकी है। मैं दा बच्चा का बाप हू। हम मिया-बीबी को एक दूसरे स बहद मुहतरत है और मैं गवारा नहीं कर सकता कि उनपर सौत लाऊ। इसके बाद छोट दादा स कहा क्या साहब, मैंने आपसे यही बात कही थी या कुछ और ? छोटे दादा न कहा 'नहीं यही बात कही थी। मैंने कहा जब आपको यह मालूम हो चुका था तो आपने मेरी बीबी को तार क्या दे दिया ?' छोटे दादा न कहा 'मरे भाई जादमी को बदलते देर नहीं लगती। मैंने सोचा कि तुम्हारी बीबी को बुलाकर तुम पर मुसल्लत कर दू।

यह बात सुनकर मरी बीबी के लिस का काटा निकल गया। कहने लगी कि उस भडुवे शौक को अब कभी अपन घर म न आने देना। अली की तग टूटे उस निगोडे पर। मेरा लाख का घर खाक करने आया था मुआ।

एक रोज मैं इस बात पर गौर कर रहा था कि नवाब अमादुल मलिक के खत को भी लगभग एक महीना गुजर चुका है। उकिन निजाम ने अब तक मुझ तलब नहो किया है। शायद वह तीर भी खता कर गया कि उसी आन दरवाज पर माटर आ गई जन जन करती, और बरामदे म ताली बजने लगी ठन ठन।

बाहर आया तो देखा कादिर नवाज़जग खड़े हैं। मुझे देखते ही उन्होंने कहा 'मुबारक हो जाश साहब, सरकार न आपका याद फरमाया है। अभी तयार हो जाइए।'

किंग काठी की काई लगी काली-काली दीवारा जौर उसके शाहाना फाटक व बोसीदा पर्तों पर इवत स निगाह डालता हुआ जब महल-सरा के अंदर पहुंचा तो यह हमरतनाक तमाशा देखा कि वहां सज्जे का फश है न क्यारिया फूला के पीधे है न सरू व चिनार—सूखा रूखा सेहन है और उस बुझे-बुझे सेहन में हज़ारा चीज निहायत बेक़ायदगी व साथ इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। सामने एक निहायत छोटा-सा तीन सीढ़िया का बरामन्दा है। बरामन्दे में एक व पालिश छाटी सी कुर्सी पर एक अघेड और खुश्क चेहरे का दुबला पतला आदमी भले और पक्क लगे कपड़े पहने अकड़ा हुआ बठा है और उसकी कपड़े की बोसीदा तुर्की टोपी के किनारा पर मल की एक चौड़ी तह जमी हुई है। उसके सामने तीस चालीस रईस और अहलकार दस्तारो बकलास लगाए ऊधी मुर्गाबिया की मानद हाथ जोड़े सर झुकाए खड़े हुए हैं और उनके पीछे बहूत स चीज के नाकारा बक्स पड़े हुए हैं।

मेरी नज़र कबूल करके उन्होंने अपने दस्त-बस्ता हाजिरीन स कहा— 'इहे पठानत (पहचानत) हो! अमादुलमलिक ने लिखा है कि यह फकीर मुहम्मद खा गबय्या के पात है। अगर अबध की सलतनत बरबाद न हो जाती तो यह दकन क्या आत? आधे मुगलमाना का अबध सभाल लता, आधे मुगलमाना का दकन!'

इसके बाद निज़ाम न अपने उस्ताद हज़रत जलील मानिकपुरी को मुत्वातिव करके कहा 'उस्ताद इनके यानगान स तुम तो खूब बाकिफ हागे। उस्ताद न हाथ जाडकर कहा खुदावद इनके वालिद नवाव वशीर अहमद खा ने उस वक्त मेरी इमदाद की थी जबकि मेरे उस्ताद अमीर मेनाइ के इतकाल के बाद कोई मेरा सरपरस्त बाकी नहीं रहा था।' जलील साहब की इस शराफत पर मेरी आँखें डगडवा गई। निज़ाम ने कहा 'उस्ताद तुम और जोश दोनों बड़े शरीफ आत्मी हो। तुमने सबके सामने यह बात वक्षिशक कह दी कि उनके वालिद न तुम्हारी मन्द की थी। और तुम्हारा यह एतराफ मुनकर जोश साहब की आखा में आमू आ गए। मुझे तुम दोनों की यह बात बहुत पसंद आई।' फिर मुझसे मुत्वातिव होकर निज़ाम ने कहा 'अमादुल मलिक ने यह भी लिखा है कि नौजवान होने के बावजूद तुम्हारी शायरी में उस्ताद की-सी पुस्तगी पाई जाती है। अपनी कोई चीज मुनाओ।

मैंने मतला सुनाया—

मिला जो मोवा तो रोक दूंगा जंगल रोड़े हिमाव तेरा  
पढ़ूंगा रहमन का वह कमीना कि हंस पड़ेगा अनाव तेरा।

निज़ाम व चेहरे पर पमनीन्गी का रंग दौड़ गया।



वहा और जब मैं न यह नी र पड़ा—

जब पहलाडी की टूट जाती पल्लव तो क्या अग वाप उठना

अगर मैं लिल पर न रोत लना तमाम जात शवाय तरा ।

तो निजाम न झूमतर वहा, बहुत अला ' बहुत अछा ' बहुत अच्छा ' और तमाम हाजिरीत जार-जार म दात दन लग । मरा गजल व दम्नाम (अन) पर निजाम न वहा उम्नात जलील हाव तबर बना रत कि बूढे होतर यह तुम्हार दर्जे व हा जाएगा ।

इसक वात उहानि पूछा जाग, तुम्हारी शांती हा चुकी है ?' मैं वहा मरी शांती हो चुकी है और मरी बीवी यहा आ भी चुकी है । ' यहा आ चुकी है ? उहान हेरत स कहा आर परमाया तुम्हारी मुलाजिमन म पहल वह यहा क्या चली आइ ' अगर तुमका मुलाजिमत न मिल सरी तो उनरा यहा आना बरार हा जाण्णा ।

मैं वहा सरकार मेरी बीवी का इस बात का यकीन है कि एमा हा ही नही सतता कि मुझे यहा मुलाजिमत न मिल ।

निजाम ने पूछा, 'तुम्हारी बीवी को इस बात का यकीन क्या था ? मैं चुप हो गया । साबन लगा कि उस स्वाब का भाजरा कह या न कह ।

मेरे इस असमजस का दखर निजाम ने कहा 'बोलो जी बोलत क्या नहा ?

इस मौके पर नवाब मेहदीयार जग हाय जोडकर खडे हो गए और चूकि मैं उनस अपना स्वाब बयान कर चुका था उन्हनि कहा खुदावद की एजाजत हो तो फिावी इसका सबब बयान कर दे । और जब मेहनी साहब न मेरा तमाम स्वाब बयान कर दिया तो निजाम की जाखा म आसू भर आए और कहा तो यह बोला कि सरकार दोआलम ने जोश की मेरे सुपुद फरमाया है । वह अपने दोना हाय अपन सीन पर रखकर चुक गए और तमाम दरवार पर गहरी खामोशी छा गई ।

एक हफ्ते क बाद उस्मानिया यूनिवर्सिटी के शोबाए दारल तरजुमा के नासिम (अनुवाद विभाग क निदेशक) इनायतुला साहब न जा मौलवी जवा उल्लाह साहब के परजत और अकबर हैदरी व राय मसऊत के परस्तार होने के कारण मेरे बरुवाह वन चुक थे, मुझे बुलाकर कहा "जोश साहब, मुबारक हो । यह लीजिए शाही फरमान । सरकार ने पार्लिटिकल इकानामी के अनुवादक की हैसियत स आपका तकरर (विमुक्त) फरमण है ।

मैंने कहा कि पार्लिटिकल इकानामी स मरा कोई तातनुक नही । उन्हाने खुश हाकर कहा तो फिर आप इनकार लिख दें । मैंने फरमान के हाशिया पर यट लिख दिया कि सरकारे वाला-बतार का वहद गुत्रिया । लेकिन चूकि पार्लिटिकल इकानामी मरा सब्जेक्ट नही रही है, इसलिए मुझे अफसोस है कि मैं इस काम को अच्छी तरह नहा कर सकूगा । अलबता अगर जग्रजी

अन्व के तरजुमे का काम मेरे मुपुद किया जाए तो उसे बड़ी खूबी के साथ अजाम दे सकूंगा।

इनायतुल्ला ने कहा कि अंग्रेजी अदब तो अंग्रेजी ही म पनाया जाता है, इसलिए उसके तरजुम की जरूरत ही नहीं है। आप यह श्वारत काट दें। मैंने कहा, क्या मजायका है, रहने दीजिए। काटूंगा तो बदनुमाई पदा होगी।

इनायतुल्ला ने कहा 'नाजिमे शाबा की हैसियत से मेरा यह फज है कि मैं आपकी इतरात के नीचे यह नोट लिख दू कि अंग्रेजी अदब सीधा अंग्रेजी ही म पनाया जाता है, उसका तरजुमा बंकार होगा, आपकी कोई एतराज तो नहीं होगा?' मैंने कहा—'बड़े शौक से लिख दें, आप।

उसके चौथे पाचवें दिन इनायतुल्ला खुद मेरे पास आए और कहने लग, 'जोश साहब, मुबारक हो। सरकार ने अंग्रेजी अदब के मुतरज्जम की हैमियत से आपका तकरर फरमा दिया है। यह लीजिए फरमान और लिख दीजिए इसपर अपनी मजूरी।

फरमान म लिखा हुआ था कि हरबद इस नय जाहदे की जरूरत नहीं है लेकिन अभी जास मलीहावादी का मुतरज्जम अंग्रेजी अदब के ओहदे पर फौरन तकरर किया जाए और जब उह तरक्की मिा जाए तो इस ओहदे का ताड दिया जाए। मैंने गुनिये के साथ इस फरमान पर दस्तखत कर दिए।

गुनिये की नजर लेकर पहुंचा। एक नजर अपनी तरफ से और दो बीबी-बच्चा की तरफ से पेश की। निजाम ने कहा 'अभी क्या है मैं तुम्हें इतना दूंगा कि घर म रखन की जगह बाकी नहीं रहेगी। मैं बीबिया हूँ तुम्हारी?' मैंने कहा 'मेरी तो सिफ एक ही बीबी है। उन्हाने कहा, 'मैंने तो सुना है कि अबध के तालुकेदारान के बन्त-सी बीबिया होती हैं।' मैंने कहा सरकारे वाला, पहली बात तो यह है कि हम मिया-बीबी एक दूसरे से बेहल मुहब्बत करत हैं और दूसरी बात यह है कि मेरी बीबी भी मेरी ही तरह पठान नस्ल की हैं और फिर वह बेचारी कई बरस से दिल के दौरे के रोग से मुब्तला हैं। अगर मैं दूसरी शांती कर लूंगा तो उनकी पठनीली और उनका रोग दोना मित्रकर उह हलाक कर डालेगा।

निजाम न राग का हाल सुना तो पूछा, 'कब स है?' मैंने कहा 'चार पाच बरस स है। पूछा 'निम किमका इलाज करा चुके हो?' मैंने उन डाक्टरा के नाम बना दिए। फिर सवाल किया, 'अब तक इलाज पर किस बदर रपया बरबाद कर चुके हो?' मैंने कहा 'कम से कम पंद्रह-बीस हजार तो उजाड चुका हूँ लेकिन मज है कि जान का नाम ही नहीं लेता।' निजाम ने सीधे होकर बड़े गब के साथ कहा कि मैं डाक्टरों और तिव्व म इस बदर दस्तगाह (दगता) रखता हूँ कि हरबद मैं बाकायला मतब नहीं करता, लेकिन

बड़े डाक्टरों और तबीबा के लवा नहीं खुलते हैं मेरे सामने ।' यह कहकर वह अंदर गए और दो चार मिनट के बाद आकर चोत्रदार का आवाज दी कि ले ये पाच रुपये ईमा मिया के बाजार के दवाखाने से गावड़वा और खमीरा मरवरीद ले जा । जय दोना दवाए आ गई तो उन्हें मरे हवाके वरत हुए इरशाद फरमाया कि ये दवाय सुबह और शाम अपनी बीबी को खिलाऊ-पिलाऊ । किसी दिन नागा न हान दू । और ऐन मर्ग 'के तिन आकर बताऊ कि मेरी बीबी कसी है ।

पन्द्रह-बीस राज के बाद ऐन मर्ग के दिन किता बाठी गया । दा नजर पेश की । जशरफिया का देखकर उनक चेहरे पर सुर्खी दौड़ गई । पूछा यह दूसरी नजर किसकी तरफ से है ? मैंने कहा कि मेरी बीबी की तरफ से । उन्होंने कहा बताओ मरी दवाआ का असर ?" मैंने सफ़द भूठ से काम लेकर कहा, सरकार दवाआ न तो जादू का असर किया । ऐसा मालूम होता है कि उन्हें कभी रोग था ही नहीं । यह सुनते ही उनक चेहरे और उनके तमाम बदन में खुशी की लहर दौड़ गई और चोत्रदार को हुक्म दिया कि फला-फला डाक्टरों और तबीबा को फौरन हाजिर कर दा ।

जब तमाम नामी तबीबा और डाक्टर हाजिर होकर नजरें पेश कर चुके तो उन्होंने हुक्म दिया कि तमाम तबीबा भरे दाहिने तरफ और तमाम डाक्टर मेरे बाई तरफ सफे बाधर घड़ हो जाए । जय हुक्म की तामील हो गई तो कातवाल शहर बेंटराम रडडी को उन सफा के दरम्यान खड़ा कर लिया गया ।

ऐन उस वक्त जयसि हकीम और डाक्टर उनकी तरफ इस उम्मीद के साथ देख रहे थे कि आज हम सब पर कोई न कोई नवाजिश जहर की जाणी निजाम ने बडबनर उनसे कहा देखा यह जाय मलीहा मली तुम्हारे सामने घड़ हुए हैं । यह बचारे अपनी बीबी के इलाज में पन्द्रह-बीस हजार रुपये तुम बर्दान्त मस्खरा का चटा चुके हैं । लेकिन तुम इन्हें तदुस्त नहीं कर सक । मैंने दा दवायें दी और बीस दिन के अंतर उनकी बीबी का मज सायब हो गया । जय ए साला अगर तुम मरे सामने हजारात का दावा करोगे तो मैं तुम्हारी और फकत यही नहीं मैं तुम सबकी मर चला दूंगा और उस रेल में बठकर घनाघन करता मनमाड तन चला जाऊंगा ।

निजाम की जमान से य अखाल गालिया मुनकर उन सब रोगने घड़ हो गए । उनक गलमुच्छ और लम्बी-लम्बी ललिया हवा में फुरफुरान लगा । डाक्टरों का घनी मूछा की घड़ी घाचा पर भरी नाचन लगा जितन के कौन उनका सग पर वाव-बाव करत लग और उतनी शूकी पत्रा के नीचे ला-ला-मह के बरत छगगे लगान नजर आन लग ।

उनका यह हासन दखर एसा मालूम हुआ कि जय बाद बहुत भारी पयरे किमी पगड से टपकर ललिया में आ गिरा हा और धियर पानी में

यबापक भूचाल था गया हा ।

दारुल तरजुमा—यह मुकाम दफ्तर कम और गमल तफरीह ज्यांग था । हम तमाम लाग (सयद अन्दुल मादूदी के जलावा) राज हाशिमि साहब फरीनागानी के कमर म जमा हाकर गप्पे उडान जार शायरी किया करत थे । मैंन बहा तकरीमन डेड बरस काम किया और जब अल्लामा अनीन्दर साहब तत्रानवाई का पशन मिल गई ता नवाब अकबरग्यार जग की कोशिश स मुये तरक्की मिल गई । मेरा आह्ला ताड लिया गया जोर में अल्लामा तत्रानवाइ की जाह मगीर-अदब के जाहद पर काम करन लगा । मेरी यह बडी जन्वी नमकहरामी होगी अगर मैं यह स्वीकार न करू कि अनुवाद विभाग म रहन स मुये बहद इल्मी फायदा हुआ । खामतौर पर अल्लामा अमाणी अल्लामा तत्रानवाइ और मिजा मुहम्मद हादी रमवा की सगत म मैंने बहुत कुछ सीखा और मुयम अध्ययन की सही लगन पदा हुई । शदा के सही उच्चारण और उपयुक्त प्रयोग का जो पौधा मर बाप और मरी दादी न भरे बजूद की सर-जमी पर लगाया था अगर तत्रानवाई मिजा मुहम्मद हाणी और अमाणी की दस बरस की सोह्यन का मौता मुये न मिलता, वह कभी न फूलता फ्यता ।

मिजा मुहम्मद हादी साहब मेरे पडोसी थे । मैं दबन आकर फिर उनसे पढने लगा और इस बार फारसी के साथ उनसे अग्रेजी अदब और फिलसफे (दशन) का भी बाक़ायत सबक लेना गुरू कर दिया । हरबद १९१८ से मैं शराब क लुफ म आगाह हो चुका था इसलिए कभी-कभी किसी दावत मे तो पी लेता था लेकिन तनम्बाह स खरीदकर कभी नहा पीता था । इसलिए मुये यह फुरसत थी कि रोज रात को ग्यारह-बारह बजे तक पढा करता था ।

## हैदराबाद से निकाले जाना

हैदराबाद के सर पर जागीरदारी और महसूलाग का गिद्ध दूग मार रण था। हर तरफ दरगारी गाडिया के जाग रिद्ध हुए थे। निजाम के मुगाह्य हरबद लिए पड़े नहा थे। एरिन दग कटर कड़े एग ट्यारी मग्गरे मोग्गी मिरासी एगग्गी गुन्नामग्गी मग्गात भातामार छट ताहमनकार, बाती चाली म दग कटर तारो मग्गाव और नबाय के दग दर्जा मिजाज-शनाय थे नि उह अगुनिया पर नबाय चापग्गी के तग पर रोडिया परान अपन को उभारत हरीफा को गिरान और मा-बन्न को गलिया एगग्ग और शरवत की तरह पी जान बाता के तान उडान ओर उन तोता को अपन आता की भवा पर पिछात और उनस जनीजी भवा के नार लगवान थे।

जित तरह सापबाल बागुरिया पर नागा था नबाय के, एत तरह यह मस्वर भी अपन नम लहजा की गाडिया म अपनी आग्रा के घूमन हुए मस्वर डेगा के पहिए लगात और जरनी गलत बात को सच बर दन की छातिर अपन सधे हुए चहरा के मुह म लगाम लगाकर अपनी मजिल मरसू की जानिब हवाते ओर निजाम की अपन रास्ता पर चलान थे। बड हाकिमा और जागीरदारा से जगर पिण्ड जात ता सर करगार उह पिन्वाकर निजलवा दत और उनक घरा म बाडू फिरवा गिया करत थे।

उनकी जवानें एसी रेंगती हुई नागिन था जिनस ओर ता जीर शाहजाद तग महफूज नही थे।

मैने गलत-बदली के नाम से निजाम के खिलाफ एक नरम बही थी जिसका जित आग आएगा। दरअसल वही नरम मरे वहा स निराके जान का सबब बन गई। लेकिन दस नरम की पुशत पर जो और असबाव भी नाम कर रहे थे उनका किसी को बलम नहा है। इसलिए मुनासिब मालूम होना है कि उन असबाव को भी बयान कर दू।

मुझ बमबलन घर फूक तमाशा देखनेवाले की यह आदत है चाहे उसे हुनर समझा जाए या एव, कि मैं अबाम के बदमा पर सर बुवा देने की इतहाई शराफत और सत्ताधारिया के तहत के स्वरु गदन जरा भी नीची करने को कमीनगी समथता हू और मीर तककी मीर की मानद—

सर बसूसे फद नही आता

हैफ बदे हुए खुदा न हुए

का नारा लगाता रहता हू।

अपनी इस आदत के साथ जब मैं निजाम के स्वरु सरापाइकसार (सदेह विनम्रता) बनकर जाता, उह सरकार कहता और उनकी जवान से अपने

मुनाज्जिद 'तुम मुनता था तो मेरे दिल पर एमी चोट लगनी थी कि त्रिल्लिया उठना था। जमान से तो कुछ नहीं कहना था लेकिन मर चेहर का बदला हुआ रंग और मेरे चोट खाए दिमाग की बरकी लहरें निजाम के दिल पर इम तरह अमर किया करती थीं जिस तरह मदान में सानेवाले पर शबनम गिरती है और उस कुछ भी खबर नहीं हानी कि मेरे सर म यह घमक क्या हो रही है ?

अपन पाश-पाश गरूर के साय जद घर आना था तो बीबी के सामन अपनी इस बदरज्जती का रोना रोया करता था और वह भी इस अनावधानी के साय कि नौकर चाकर सत्र मुन लिया करत थे।

मुझे मुनलिक यह मालूम नहीं था कि निजाम की खुफिया पुलिस का घर-घर म इम तरह जाल फला हुआ है कि कोई उमकी जद में बचकर निकल ही नहीं सक्ता। सिफ घर के नौकर चाकर या मामायें ही नहीं सौदा बचन-वालिया तक खुफिया पुलिस म भर्ती थी।

मुझे इम बात का पता क्याकर चला, वह भी मुन लीजिए। एक राज नवाब कादिरयार जग बडा खीफनाक चेहरा बनाए मेरे पास आए और कहा जाश साहब आप अपन महत्त म जिम बात का रोना रोया करत हैं सरकार-वाला तक वह बात पढूच गई है और मुने इम बात की बड़ी खुशी और इतहाई हैरत है कि यह बात मुनकर सरकार न मुमकराकर इरशाद फरमाया कि जोश बडा मगरर आदमी ह। मुलाजमन कर रहा ह मगर उसके दिमाग स वृए-बमारन अभी तक नहीं निकली। मुनता हू वह खुश स भी गुन्ताबिया किया करता है। लेकिन क्या कर सफरे-बायनान (हजरत मुहम्मद) ने इम शकम का मेरे सुपुद फरमाया है।

निजाम का मागिरह बगरह पर नमाम शायर कसीद पश किया करत थे, लेकिन मैं कभी कसीद नहीं कहा। एक मागिरह के मौके पर एन रिमाक स सम्पाक ने मेरी एक बहागिया नज्म कसीद बनाकर छाप दी जिमना यह मतल था—

उठी वह घटा रंग सामानिया कर

गोहरवारिया कर गुनजफशानिया कर।

इस नज्म म सालगिरह की जानिव कोई जरा सा भी इशारा या निजाम की तारीफ म कोई एक ने र भी नहीं था। लेकिन मेरे इस मक्ता पर शाही अताब नाजल हो गया—

कभी 'जोश के जोश की मदह' फरमा

कभी गुलरुखा की शनाखानिया कर।

निजाम इस घोखे म पड गए कि इम कत का रुख उनकी तरफ है और दूसरे ही दिन फरमान निकाला गया कि मालूम हाता है यह कसीदा जोश ने

१ पूत बरमा २ तारीक प्रगता ३ कभी मुल्लर चेहरेवाला का प्रहसि-बोल कर।

विश्वी राम बहन (शराफत का नाम) कहा है। उन्हें चाहिए कि यह एग्रे अरगग पर सरकार की मान न दिया करें। अगर यह आत्मगर्भा कर्मों का अन्धा नहीं होगा।

इस घटना का वास्तविक कारण एक रोज नराम महनीपारजग बहूत घराण का मरे पास जाण आर कहा 'बहा गजब हा गया। होण मित्रामी न सरकार-आगी तब यह मरर पन्ना दा \* कि आपरा शास्त्रानी न गहर ताल्लुवान है और उतान यह भा त्ता है कि मन्त्र मजिस का शाह जानी जाण का रास रहा थी और जाण उच्च कर रह थ उग यका पन्ने क पाछ म मैन खुन् गुना था कि शास्त्रानी न वड प्यार क रहने म उनम परमाया था कि अगर तुम इस बहन नया ग्याग ता मैं तुम्ह मार डालूंगी।

निजाम क लिल म थ मय वाने मात्रूम और ना मात्रूम तरीक स अभी उठ ही रही थी कि मैंने यह नरम जिसना जिन कर चुका हू जागीरदार और बजीरा की भरी महफिज म गुना दी और तमाम महफिज पर एक दृश्यनना सनाटा छा गया। नभाव निजामनजग बजीरे गियामत न मरे वान म कहा—

बुल्हाडी मार ली आपने अपन पाव पर ? एक मुलाजिम सरकारे-आली की हैमियत से ऐसी नरम आपना कहना ही नहीं चाहिए थी और वह भी दी थी तो फिर यह चाहिए था कि इस सात पन्नों म छिपाकर रखत। हद कर दी आपने नाआववत अदेशी की। मर मैं तो इसपर कोई कारवाई नहीं करूंगा। खुफिया पुलिसवाला न यह नरम लिख ली है। मकीन रखिए कल तक यह किंग बोठी पहुच जाएगी। उस नरम के चद ने र सुन लीजिए। (यह नरम मरे किसी सक्लन म छप चुकी है।)

इलाही अगर है यही रोजगार  
कि सीने रह अहले दिल के फिगार'  
रनायत' को हासिल हा सरदारिया  
शराफत करे बफश बरदारिया'  
सरे-बरम जुहल' आए अहले-नजर  
बशकल गुलामान जरीं कमर'  
हुनर हो और इस दर्जा बेआवरू  
तुफूवर तू ए चखें-गरदा तुफू'

दसरे ही दिन वह नरम निजाम तक पहुच गई। कोई दूसरा ऐसी जबरनस्त गुस्ताखाना नाम लिखता तो बीबी बच्चा समत बोल्हू म वेर दिया जाता। लेकिन उनकी शराफत देखिए कि उन्होंने वड खुफियानौर पर मेरे हमनिवाला और हमप्याला दोस्त आगाजानी नामय कागवाल को मरे पास भेजा कि वह

१ चतनी २ बमीना ३ जन सी. करे ४ भजे भट्टाचाप ५ सुपाग चरिन नमरा म मुनहरी पेटियां बाध गलामा की तरह खड हा ६ ए आसमान गुजपर सानत है जानत है।

मुझे अपन हमराह किंग कोठी ले आए। आगा न मुझसे कहा, 'मुझे इस बात पर बड़ी हैरत है कि हरबद आपने इस बदर सख्त नरम कही है, फिर भी निजाम आपके खिलाफ किसी किस्म की कारवाई पसंद नहीं करता है। और उतान यह इरशाद फरमाया है कि अगर जोश मुझमें माफी तलब करके इस बान का वाता कर लें कि वह जाबदा मरे खिलाफ कुछ नहीं कहेंगे तो मैं उन्हें तिल स माफ कर दूंगा। इसलिए अभी अभी मेरे साथ चलिए।' मैंने कहा

आगा माफी मागन पर मैं तयार नहीं हूँ। वह यह सुनकर दग रह गए। मुझमें कुछ नहीं कहा, जनान दरवाजे पर जाकर आवाज दी, भाभी जरा एक बान मुन लीजिए। जब मेरी बीबी पट की आड म जाकर खड़ी हो गई तो उन्होंने कहा भाभी आपके शौहर नामदार सरकार से माफी मागन पर तयार नहीं हूँ। बीबी न आशा म कहा, 'जरा उन्हें बुला लीजिए।' आगा न मुझे पुरारा। मैं पट गया और बाबी न बडे तहे के साथ डाटकर मुझमें कहा— अरे क्या तुम्हारा निमाग चर गया है। आधी से ज्यादा जायदान तवाह करके यहां आए हा। और अभी छ महीन भी नहीं हुए है कि इस आधी जायदान को भी मलीहाबाद जाकर तीन बरस के लिए खजाहसन का ठेके पर दे आए हा और वह सारा रुपया भी बाला-बाला बम्बई जाकर बरबाद कर आए हा। माफी नहीं मागोग तो क्या बान बाडत फिराग ? फिर यह भी तो साचो कि लडके-लडकिया का लिखाना-पठाना और उनकी शादिया करना है। जाओ, इमा घटी जाओ और सरकार से माफी माग लो। नहीं तो मुझमें बुरा कोइ नहीं होगा। मुन रहे हो तुम ?'

मैंने कहा 'अगरफजहा यह बात मच है कि हम तुम से डरते हैं। मगर यह भी मुन लो कि इस बदर नहीं डरते हैं कि भीगी विलगी बन जाए और माफी माग आए। यह मुनकर बीबी हक्का बक्का होकर रह गई। दर तक मुझे घूरा और फिर आखें झुका ली। आगाजानी यह कहते हुए चले गए कि जो शम्स खुशुशी पर तुल जाए उम कोइ राक नहीं मकता।

आगा क चल जाने के बाद मैंने डर के मार घर म काम नहीं रखा और दूसर दिन जल्नी जल्नी इस्तीफा लिखनर अपन महकमे के सनेटरी नवाब जुलकर जग के पाम धला गया।

जुलकर न कहा कि जोश साहब आप यह क्या कर रहे हैं ! जजवात म न वहिए अकल से काम लीजिए जाइए सरकार स माफी माग लीजिए। आपको मातूम नहीं कि मुलाजिम की खाल का माटा हाना चाहिए। सरकार मुझे मालिया तक दे चुके है यह आपसे कह रहा हूँ लेकिन मैं पी गया इस्तीफा नहीं लिया। अपनी बान ता कतई इसके उन्टी है। आपन खुद सरकार पर लान-तान की है और इनके बावजूत उन्टे इस्तीफा द रहे हैं।

दर तक वह मुझे समजान रहे दर तक तबराग होनी रही और जब मैं नहीं माना तो उन्होंने गुम्ह म आकर मेरा इस्तीफा किंग कोठी खाना कर लिया।



मेरा इस्तीफा जगत् की आग के मानने निजाम तक पहुँचा गया और निजाम चीख चीखकर कहने लगे 'बड़ा गजब हुआ। जाग मुगल जाग जा रहा है तोग मुगल जीत जा रहा है। नवाब मर अमीनजगल न रहा, तुम्हारे मकीन जीत सकता है? क्या जाग और क्या माह-रगल? जाग क मगल क ता सखडा शामर लखनऊ की गलिया म जूनिया पगमाग फिरत है। निजाम न रहा अमीन तुम बाग की नखारा का नहा समग रह हो। मजा तो तग था कि उनक इस्तीफे का पेशवर हो मैं उह बरतरफ कर दता। लेकिन इग आलम में जब वह खुद इस्तीफा द रह है बाग उलट गई है और मैं हारा जा रहा हू।

नवाब अमीनजगल ने दस्त बस्ता अज निया खुशगल मग स्नीफ की घाना खाल क हवाल फरमा दें फिन्वी अभी मामने को पगट ग्या। निजाम न मेरा इस्तीफा उनकी तरफ फेंक निया। अमीनजगल ने उम उठारर फौरन चार कर निया और हवा म उसक पुज उठारर कहा सरकारे-वाला, अग इस इस्तीफे का बजुत ही बाकी नहीं रहा है। अब सरकार फरमान जारा कर दें। निजाम का चहरा दमक उठा और बहने लगे, 'अमीन तुमल मुने जिता निया। हमारे सक्नेरी को एसा ही साबित (काबिल) होना चाहिए। लिखो फरमान कि जोश मलीहाबाली को मुमालिके महसुसा सरकारे आली मे धारिज निया जाता है। पद्रह दिन क अर-अरर वह रवाना हा जाए और ताहुकम साना यहा बदम न रखें।

फरमान लवर आगाजानी मर पास आए और कहने लगे 'इस फरमान को समल भी? मैंने कहा कि इसम समलने की क्या बात है। उहाने कहा कि मैं सरकारे वाला का मिजाज पहचानता हू। इसलिए फरमान क दो नुक्ल बतान आया हू। पहला नुक्ला तो यह है कि सरकार जग किसी पर जनाय फरमात हैं तो उसे चौबीस घट क अर निखाल दत है। आपको चौबीस घट के एवज पूर पद्रह दिन की माहलत दी गई है और वह इस मकमद स कि आप सूख हाल को ठंडे तिल स समबकर माफी माग लें और यह फरमान वापस ले लिया जाएगा। दूसरा नुक्ला यह है कि इसम ताहुकमे सानी लिखकर आपकी वापसी को नामुमकिन नहीं बनाया गया है। दखिए अब भी कुछ नहीं गया है। अभी मेरे साथ सरकार का विदमत म हाजिर हाकर माफी माग लीजिए। अगर इसी बकत यह फरमान मसूख न कर दिया जाए तो मेरी नाक काट लीजिएगा।

मैंने आगाजानी को गले लगाकर उनका माथा चूम लिया और कहा आप बाकई मेरे पक्के दोस्त हैं लेकिन मैं किसी तरह माफी तलय नहीं करुंगा।

आगा ने सर पकडकर कहा 'भाई राजदठ वालहठ त्रियाहठ तो सुनी थी। आज मालूम हुआ कि चौथी हठ भी होती है जिस शायरहठ कहना

मैंने अंदर जाकर बीबी से कहा, 'अब सामान बांधो। हम यहाँ पंद्रह दिन क्या पड़े रहें, तीन चार दिन में ही क्या न चले जाए?' बीबी ने कहा, 'यह तो साचा जाओगे कैसे? जाने का इमदद भी है? तुम्हारे बहन-बहनार्ई उनके बच्चे हमें लग छोट दादा और दोना नोकर। इतने आदमिया का किराया भाडा कहा से आएगा। फिर तुम्हारी यह जिद भी है कि हम अपनी मोटर और दानो कुत्ते भी साथ ले जाएंग और उह यहा की गलिया म मारा-माशा नहीं फिरते देंगे। इन सबके लिए रुपया कहा से आएगा? इसी दिन के लिए मैं तुमसे कहा करती थी कि रोज दावतें न करो, गोल बे गोल आदमिया को रोज गरावें न पिलाओ इतने अल्ले-तल्ले न करा। अब बताओ क्या करोगे और कैसे जाओग?'

बीबी की बातें सुनकर मैं चकरा गया। मैंने कहा 'फिर अशरफजहा क्या किया जाए?' उन्होंने कहा, 'जाओ और शाहजादे और महाराजा (विश्व प्रसाद) से बज मागो।' मैंने कहा 'मैं बज मागने नहीं जाऊंगा। यह तो इन दादा का फज था कि किसीका मेरे पास भेजकर पुछवाते कि हम इस मौका पर आपकी क्या इमदाद कर सकते हैं। जब उन्होंने अपना फज अदा नहीं किया तो मैं बेगरती लाकर उनके पास क्या जाऊँ।' बीबी ने कहा 'हा मच कहत हो। लेकिन मैं पूछती हूँ कि अब सुबीना क्या किया जाए?' गरज यह कि एक एक करके दिन गुजरने लगे और जान की तारीख करीब से करीबतर आन लगी और कोई तदवीर समय में नहीं आई।

एक रोज इसी बचारीगी के आलम में सर झुकाए वठा था कि हकीम आजाद अतारी न आकर कहा 'कुछ खयाल भी है कि यहाँ से जाने में अब फत्रत चार दिन बाकी रह गए हैं?' मैंने कहा 'आजाद साहब अब इससे सिवा कोई चारा नहीं है कि मैं निकलने के दिन बडे इत्मीनान से अपने फाटक के सामने आगम-कुर्सी पर बठ जाऊँ और निजाम की ना फरमानी के जुम में अपने को गिरफ्तार कराके जेल चला जाऊँ। लेकिन मेरे बाल-बच्चे क्या करेंगे?'

आजाद ने कहा, गिरफ्तार हा आपके दुश्मन। मैं ऐसी तदवीर निकाल-कर आया हूँ जो पट पड ही नहीं सकती। आपको दस बात का इल्म नहीं कि खानदान-आसफिया की यह एक पुरानी रवायत है कि शाही मातूवो का आजावन बजीफा दिया जाता है। आप भी मातूव हैं आपको भी बजीफा दिया जाएगा। इसलिए आप अल्लाह का नाम लेकर इम मजूमन की दरख्वास्त लेकर अक्बर हैदरी के पास जाए कि आपको खजानाए-सरकारे-आली से पाच हजार रुपय की रकम बतौर बज द दी जाए और उस रकम को बजीफे में स विस्ता में बाट लिया जाए।

मैंने कहा 'तदवीर तो आपकी माकूल है, लेकिन क्या मुह लेकर हैदरी के पास जाऊँ। उहे तो विताव के मामले में जलील कर चुका हूँ।' आजाद ने कहा "इसमें क्या होता है? आप हैदरी से तो बज नहीं माग रह हैं। बज

तो सरकारी खजाने से मिलेगा।" मैंने कहा, "बहुत अच्छा। मैं तैयार हूँ। लेकिन दरखास्त लिखना तो मुझे आता नहीं।" आज्ञादा ने अपनी जेब से टार्डपुन्ना दरखास्त निकालकर मेरे हवाले कर दी और कहा, "इसी प्याले से मैं आप के पास लस होकर आया था कि दरखास्त लिखना आपका बम का रोग नहीं।"

अपने मिजाज के खिलाफ लाया बोडे मार मारकर मैं हैदरी के पास गया। उन्होंने बड़ी नमी के साथ पूछा, "जोश साहब मैं आपकी क्या विदमत्त कर सकता हूँ? मैंने कहा आप मुझ पर दो इनायतें कर सकते हैं। पहली इनायत तो यह होगी कि आप मेरी इस कज की दरखास्त का कबूल करवा लें। यह मुमकिन नहीं है तो फिर यह दूसरी इनायत करें कि मुझे नाफरमानी के जुममे गिरफ्तार कराकर जेल भिजवा दें।"

उन्होंने मेरी दरखास्त अपने हाथ में लेते हुए कहा आप गिरफ्तारी की बात न कहें। अगर आपकी गिरफ्तार कर लिया तो डिस्ट्रिक्टर की हिस्ट्री हैदराबाद को कभी माफ नहीं कर सकेगी।

दरखास्त पढ़कर वह दाढ़ी खुजलाने लगे। मैंने कहा हैदरी साहब आप अपने दिमाग पर बोल न डालें। मैं हर मुसीबत के लिए बखुशी तैयार हूँ। उन्होंने कहा "जोश साहब यह फायनेंस का मामला है। इसमें पांच छ महीने लगेंगे। मैंने कहा 'मुझे तो सिर्फ चार दिन की फुरसत है।'

वह सर झुकाकर साचन लग। अपनी खशाखशी दाढ़ी खुजलाई ऐनक साफ करके दोबारा लगाई और आखिरकार गदन के एक फसलानुन शटके के साथ मेरी दरखास्त मजूर करके उसपर दस्तखत कर दिए। दूसरे ही दिन मुझे पांच हजार मिल गए।

जाता है आसमा लिए कूचे से यार के

आता है जी भरा दरो दीवार देखकर।

कैसे बताऊँ कि हैदराबाद से खानगी के वक्त मेरे दिल का क्या आलम था। एक तरफ गमे दौरा (दुनिया का गम) और एक तरफ गमे जाना (प्रेयसी का गम)। मेरे रोजगार की शमज बुझकर धुजा दे रही थी और मेरे इश्क का चाद गहनाकर उदासी बरसा रहा था। बीबी रेल के डबे में उदास बठी थी और महतूवा वेस्टिंग रुम में पछाड़ें खा रही थी और मेरा यह आलम था कि बार बार बीबी की नजर बचाकर धटिंग रुम जाता महतूवा को गले लगाकर रोता और असू पाछर बाहर जाता और सय अली जन्तर मयद अबुलखर मोडूदी और सय अबुलआला मारदी से जा मुझे स्वसत करन आए थे बात करन लगता था।

मैं इसी आलम में था कि नवाब जुलकरजग आ गए और एक कागज मेरी तरफ बगकर कहा 'यह मेरे नाम का शाही फरमान है इसे पढ़ लीजिए। फरमान जन्तर अन्तर याद नहीं लेकिन मतलब यह था कि जोश मलीहाबादी आज हिंदुस्तान जा रहे हैं। उनसे कह दो कि वह अपना कलम को मेरे खिलाफ

इस्तमाल न करें। अगर भाषी पर तयार हा ता अब भी गुजाएग वाड़ी है। मैंने कहा, नवाब साहब, आला हजरत की विमन म मेरा गुक्रिया अता कर-क बंद दीजिए कि मैं उनसे हिनायत पर अमर बन्या, अकिन माफ़ी तयार करत पर आमादा नहा ह।' इतन म रउ रेंगन लगी। मैं दौडकर मवार दू गया। सबसे सलाम लिया। मेरी महबूबा बरिग मस म निकर आर। उमन आमुआ से डरडबाइ आवा क साथ मुझे रखसती मराम लिया। मराम करक लडखडा गई। मैंन आखा ही आखों म उम गते मराम लिया और मारी की रफ्तार तेज हा गई।

## दर-व-दर

शासी पहुँचकर मैं वीथी को अपने इरादे से आगाह किया तो उन्होंने कहा, 'अच्छा यह भी करके देख लो।' वह बड़ी उदासी के साथ मलीहाबाद की तरफ रवाना हो गई और मैं रियासत दतिया जाने के लिए चासी स्टेशन पर उतर गया।

दतिया पहुँचकर काजी सर अजीजुद्दीन को मैंने अपनी सारी दास्तां सुना दी। उन्होंने कहा— जोश साहब आप शक्ती हुकूमत का बोझ उठाने के लिए बने ही नहीं। अल्लाहनाला ने आपको बहुत बड़ा जोहर अता फरमाया कि आप आगरे को अपना हेड-क्वार्टर बनाकर वहाँ से एक हफ्तवार अववार निकालना शुरू कर दें। पर्चे का नाम रखिए 'सलतनत। आगरे में आपको रहने की दुशवारी इसलिए नहीं होगी कि वहाँ आपके नाना का आलीशान महल मौजूद है।

मैंने कहा 'काजी साहब राय तो बहुत अच्छी है, मगर किस बूते पर अववार निकालें?' उन्होंने कहा, "आप रियासत दतिया के बूते पर अववार निकालें। किलहल रियासत आपका साठे चार सौ रुपये हफ्ता के हिसाब से सोलह सौ रुपये महीना देगी और अगले साल के बजट में यह खर्च दुगुनी कर दी जाएगी। मजूर है आपका? अर्थात् क्या चाहे दो आँखें। मैंने उसी इस तजवीज को फौरन मजूर कर लिया। उन्होंने कहा 'आप अल्लाह का नाम लेकर यह काम शुरू कर दीजिए। मैं दूसरी रियासतों से भी आपका इम्प्लान्टिङ्ग दूंगा।' काजी साहब की इस बात से मेरा दिल बाग-बाग हो गया और मैं रात को आराम से सो गया। सुबह जब उठे साथ नाश्ता करने बंटा तो उन्होंने पूछा, 'जाश साहब आपको अववार की पारिष्की क्या होगी?' मैंने कहा— 'आप फरमाए।' उन्होंने कहा 'श्री ब्रिटिश' मेरा चहरा मलगजा सा हासर रह गया। कासी भाप गए। उन्होंने बड़े बलबल के साथ मेज पर धुगा मार कर कहा 'जाश साहब ब्रिटिश एम्पायर एक नमन है और बहुत बनी नमन। अगर हुकूमत घुग्ना-न घामना वाली न रही तो मरी यह बात मान घुग्ना-न गुन लीजिए कि हिंदू हम कच्चा चमड़ा टाँगा। वह आपका जीना दूभर कर देगा। गाय आप की मनिया चर लेंगी। आप गाय पर हाथ उठाएंगे तो कम से कम आपका हाथ ताड़ टाला जाएगा और यह भी मुमकिन है कि आप काट कर टाँ जाएँ। हिंदू आपका घुग्ना न हाँगा मरगा। आपका एम० ए० लडका पर हिंदू मद्रिग का तरबाह भी टालगी। फरमाइए, क्या आप इसपर तयार हैं?' मैंने कहा 'राजा साहब आप मर बज्रुग हैं और यह भा मानना है कि आप मुझे पूरना फरना मरना चाहते हैं। मैं आपका इस हम्परी का

गुनिया अदा नहा कर सकेता। लेकिन इस क्या करूँ कि मुझे अंग्रेजी हुकूमत में नफरत है। मेरी बात काटकर उन्होंने कहा 'आप अपने दोस्त जवाहरलाल के बहकाव में आ गए। देखिए यह आपकी रोजी और तमाम मुसलमानों की भाँई का सबाल है आप फमले में जल्दी न कीजिए।'

लेकिन जब उनके बार-बार समानान के बाद भी मैं फिरगी की हिमायत के लिए आमाना न हुआ तो उन्होंने भापूस होकर कहा, अगर आप ब्रिटिश हुकूमत की मुन्वालिफ्त करेंगे तो मुझे अफसोस है कि रियासत आपका हाथ नहीं बढ़ा सकेगी। और अगर मैं रियासत से आपकी इमदाद करूँगा तो मेरी प्राइममिनिस्टरी ही खत्म हो जाएगी।'

मैंने कहा, काजी साहब, मैं आपका बहद शुक्रगुजार हूँ। आपने तो दिल से यह चाहा था कि मेरी जिदगी सुधर जाए लेकिन मेरे मित्राज न सारा खेल विगाड़कर रख दिया। खना आपकी नहीं मेरी है।

धौलपुर आया तो धौलपुर के सबसे बड़े जागीरदार और अपने सगे मामू की हवली के एवज अपने पुराने दोस्त सरदार रूपसिंह के यहाँ ठहरा।

मैंने अपनी रुदाँ मुनाई और कहा महाराजा के पास आया हूँ। शायद वह कोन मुन्वाजमत दें। रूपसिंह ने कहा, 'महाराजा बड़ा पापी है। मुझे उसमें कोई उम्मीद नहीं। जब तक तुम्हारी कोई भूरत न निकल तुम मेरे ही साथ रहो। मलोहावाद जाकर भाभी को बुला लाओ। नवाब साहब (मेरे मामू) के बाड़े की हवली में उहाँ ठहराओ। जब तक कोई बदौवस्त न हो जाए मैं पाँच सौ रुपये महोना तुम्हारा देता रूँगा। जब अच्छे दिन आए तो अना कर दना।'

मैंने कहा, 'मैं तुम्हारा बहद शुक्रगुजार हूँ कि मेरे बिना कहे तुम मेरी इमदाद पर आमाना हो गए। रूपसिंह ने मेरी बात काटकर कहा, यह कौन-सी अनोखी बात है? क्या हम दोनों पुराने दाम्त नहीं हैं? क्या हममें कोई गुरियत है? मैं राजपूत हूँ तुम पठान। तुम मुसलमान राजपूत हो मैं हिन्दू पठान।

मैंने कहा 'भाई रूपसिंह मैं सोचकर जबाब दूँगा। रूपसिंह ने कहा, साचकर जबाब देनेवाले की ऐसा-तसी। अभी-अभी जबाब दो बरमा छानी पर चढ़कर गला दवा दूँगा। मैंने हसकर कहा 'एनी हील-जोल काहे की। जरा सोच ता लेन दो। यह मुनत ही रूपसिंह ने जस्त लगाई। मुझे फण पर गिरा दिया और जार-जोर से मेरा गला दवा-दवाकर कहन लग कि मजूर है कि नहा या मार डालूँ? मैंने कहा 'मजूर, मजूर ऐ जलम मजर। मेरी बाधा में गुनिया के आमू बहन लगे। मैंने तार दकर धीवी को धौलपुर बुला लिया। वह छोटे दादा और सखाबत बजफर का साथ लेकर आ गई। मैं भी रूपसिंह के बाड़े से उठकर मामू के बाड़े आ गया और उनकी खाली हवली में रहन लगा। कई बार महाराजा धौलपुर से मिला। हर बार उन्होंने मुन्वाजमत का

## दर-ब-दर

झासी पहुँचकर मैंने बीबी को अपने इराते से आगाह किया तो उन्होंने कहा 'अच्छा यह भी करके देख लो।' वह बड़ी उदासा के साथ मलीहानाद की तरफ खाना हो गई और मैं रियासत दतिया जान के लिए धासी स्टेशन पर उतर गया।

दतिया पहुँचकर काजी सर अजीजुद्दीन को मैंने अपनी सारी दास्तान सुना दी। उन्होंने कहा—“जोश साहब, आप शकसी हुकूमत का बोझ उठाने के लिए बने ही नहीं। अल्लाहताला न आपको बहुत बड़ा जाँहर अता फरमाया कि आप आगरे को अपना हेड-क्वार्टर बनाकर वहाँ से एक हफ्तवार अखबार निकालना शुरू कर दें। पत्र का नाम रखिए 'सलतनत'। आगरे में आपको रहने की दुशवारी इसलिए नहीं होगी कि वहाँ आपके नाना का आलीशान महल मौजूद है।

मैंने कहा 'काजी साहब राय तो बहुत अच्छी है मगर किस बूते पर अखबार निकालूँ?' उन्होंने कहा 'आप रियासत दतिया के बूते पर अखबार निकालें। फिलहाल रियासत आपको साठे चार सौ रुपये हफ्ता के हिसाब से सोलह सौ रुपये महीना देगी और अगले साल के बजट में यह रकम दुगुनी कर दी जाएगी। मजूर है आपको? अर्थात् क्या चाहे दो आँखें। मैंने उनकी इस तजवीज को फौरन मजूर कर लिया। उन्होंने कहा 'आप अल्लाह का नाम लेकर यह काम शुरू कर दीजिए। मैं दूसरी रियासतों से भी आपको इम्तदाद दिला दूँगा।' काजी साहब की इस बात से मेरा दिल बाग बाग हो गया और मैं रात को आराम से सो गया। सुबह जब उनके साथ नाश्ता करने बठा तो उन्होंने पूछा, 'जोश साहब आपके अखबार की पालिसी क्या होगी?' मैंने कहा—'आप फरमाए। उन्होंने कहा 'प्रो ब्रिटिश।' मेरा चेहरा मलगजा सा होकर रह गया। काजी भाप गए। उन्होंने बड़े बलबले के साथ भेज पर घूसा मार कर कहा 'जोश साहब ब्रिटिश एम्पायर एक नेमत है और बहुत बड़ी नेमत। अगर हुकूमत खुदान खास्ता बाकी न रही तो मरी यह बात कान खोलकर सुन लीजिए कि हिंदू हम कच्चा चवा डालेगा। वह आपका जीना दूभर कर देगा। माम आप की खेतिया चर लगी। आप गाय पर हाथ उठाएंगे तो कम से कम आपका हाथ तोड़ डाला जाएगा और यह भी मुमकिन है कि आप कत्ल कर डाले जाएँ। हिंदू आपके खून से होली खेलेगा। आपके एम० ए० लडको पर हिंदू मट्रिक को तरजीह दी जाएगी। फरमाइए, क्या आप इसपर तयार हैं?' मैंने कहा 'काजी साहब, आप मेरे बजुब है और यह भी मानता हूँ कि आप मुझे फूँता फलना देखना चाहते हैं। मैं आपकी इस हमदर्दी का

गुनिया अना नहीं कर सकता। लेकिन इने क्या करूँ कि मुझे अंग्रेजी हुकूमत स नफरत है। मेरी बात काटकर उन्होंने कहा, 'आप अपने दोस्त जवाहरलाल के बहवाव म आ गए। देखिए यह आपकी रोजी और तमाम मुसलमाना की भलाई का सवाल है, आप फमले म जल्दी न कीजिए।'

लेकिन जब उनके बार-बार समझाने के बाद भी मैं फिरगी की हिमायत के लिए आमाणा न हुआ तो उन्होंने मामूम होकर कहा, 'अगर आप ब्रिटिश हुकूमन की मुन्नालिफ्त करेंगे तो मुझे अफमोस है कि रियासत आपका हाथ नहीं बटा सकेगी। और अगर मैं रियासत से आपकी इमनाद करूंगा तो मेरी प्राइममिनिस्टरी ही खत्म हा जाएगी।'

मैंने कहा, काजी साहब मैं आपका बेहद गुनगुजार हूँ। आपने ता दिल स यह चाहा था कि मेरी जिन्गी सुधर जाए लेकिन मेर मिजाज न सारा खेल बिगाटकर रख दिया। सता आपकी नहीं मेरी है।'

धौलपुर आया तो धौलपुर के सबसे बड़े जागीरदार और अपने सगे मामू की हवली क एकड़ अपने पुराने दोस्त सरदार रूपासिंह के यहा छहरा।

मैंने अपनी रुदाद सुनाई और कहा, "महाराजा के पास आया हूँ। शायद वह कोई मुलाजमत दे दें।" रूपासिंह ने कहा महाराजा बडा पापी है। मुझे उसम कोई उम्मीद नहा। जब तर तुम्हारी कोई सूख न निक्ले, तुम मेरे ही साथ रहो। मलीहाजाद जाकर भाभी को बुला लाओ। नवाब साहब (मेरे मामू) क बाडे की हवली म उन्हें ठहराओ। जब तक कोई यदोबस्त न हो जाए मैं पाव मौ रूप महीना तुमको देना रहूंगा। जब अच्छे दिन आए तो जदा कर दना।'

मैंने कहा 'मैं तुम्हारा बहद गुनगुजार हूँ कि मेरे बिना कह तुम मेरी इमनाद पर आमाणा हो गए। रूपासिंह ने मेरी बात काटकर कहा यह कौन-सी अनोखी बात ह ? क्या हम दोना पुरान दास्त नहीं हैं ? क्या हमम कोई एरियत है ? मैं राजपूत हूँ तुम पठान। तुम मुसलमान राजपूत हो मैं हिन्दू पठान।

मैंने कहा 'भाई रूपासिंह मैं साबकर जवाब दूंगा। रूपासिंह न कहा, सोचकर जवाब दनवाले की एसी-तंती। अभी-अभी जवाब दो बरना छाती पर चढ़कर गला दवा दूंगा। मैंने हसकर कहा "एमी हील-जोल काहे का। जरा माव तो लेन दा। यह मुनत ही रूपासिंह न जस्त लगाई। मुझे फश पर गिरा लिया और जार-जार से मेरा गला दवा-दवाकर बहने लगे कि मजूर है कि नहीं मा मार डालू ? मैंने कहा 'मजूर, मजूर ऐ जलिम मजूर। मेरी जाखा स मुकिए के आभू बहन लग। मैंने तार देकर धीवी को धौलपुर बुला लिया। वह छोटे दाना और सखावत ब जफर का साथ लेकर आ गद। मैं भी रूपासिंह क बाडे से उठकर मामू के बाडे आ गया और उनकी चाली हवली म रहने लगा। बद् बार महाराजा धौलपुर स भिगा। हर बार उन्होंने मुलाजमत का





## रिसाला 'कलीम'

लिल्ली पहुंचा तो मिसेज नायडू बरस पड़ी, कहने लगी, "जरा उसका नाम तो बताइए, जिमने आपको यह खबर दी कि सरोजनी मर चुकी है।" मैंने हैरान हांकर पूछा, 'यह आप क्या कह रही है?' उन्होंने कहा 'यह मैं इसलिए कह रही हूँ कि अगर आप मुझे ज़िंदा समझत तो सीधे मेरे पास आकर अपनी विपदा कहत। अपनी बात जारी रखत हुए उन्होंने कहा कि अगर घाप मुझे न लिखत तो यह पता ही न चलता कि आप धौलपुर में अपने क़िसा दास्ता रूपासिंह के पाम ठहरे हुए हैं।

मैंने क्षमा-याचना के लिए लंब खोले ही थे कि उन्होंने कहा, मैं आपके टम्ब्रामट (मिज़ाज) से वाकिफ हूँ, कुछ न कहिए। मेरे सोने के कमरे में जाइए। तक्रिए के नीचे एक बड़ा सा लिफाफा रखा हुआ है, उस खाले बगैर अपनी जेब में रख लीजिए। जरा सभाल कर रन्ध्रिणा ताकि गिर न जाए। अब आपका काम यह होगा कि लिल्ली से एक नीम अदवी और नीम सियासी रिसाला निकालें और क़िसी रियासत की तरफ मुडकर भी नहीं देखेंगे। मैं इश्तहार भी लिला दूगी।

मैं रिसाले का नाम काबे बुलद रखना चाहता था। मेरे पोस्त जुल्फ़-वार अली बुखारी ने राय दी कि यह नाम मुश्किल है मैं रिसाले का नाम कलीम रखूँ। मैंने यह राय मान ली।

रिसाला निकालना तिजारती मामला है। मेरी सात पीढ़ी भी तिजारत से वाकिफ न थी। इसलिए गुरू गुरू ही मैं बहुत सा रुपया बरबाद हा गया। इसक साथ मेरे लिल्ली के दोस्ता न मुझे घेर लिया। रोज़ दोनलें खुलने और दावतें उडन लगा। कातिबा, कापज़वाला लाक़साजाने और छापखाने वाला ने भी यह समझकर कि मैं घामड आदमी हूँ मुझे दोना हाथा मे लूटना गुरू कर दिया जिसका नतीजा यह निकला कि अभी दूसरा पचा छपा नहीं था कि तमाम रुपया तर मर हो गया। शम आई कि मिसेज नायडू से यह बात कम बहू और सोचने लगा कि अब क्या किया जाए। अभी कोई बात समझ में नहीं आई थी कि बीमार पड गया। बुखार इस क़दर तज़ जाया कि ह्वाम गुम हो गए और नजला इन क़दर शदीद हुआ कि तमाम सीना रुधकर रह गया। साम भी रु रुधकर आन लगी और मैं समया कि अब बच नहीं सकूंगा।

मैं पनहपुरी के ब्राऊन होटल में ठहरा हुआ था। एक पच्चे पर मैं मिसेज नायडू और जवाहरलाल का नाम लिखा और बराहता हुआ नीच आया। मन्जर का वह पर्चा दकर कहा अगर मैं मर जाऊ तो फौरन इन दोना का खबर कर दीजिएगा। मनेजर बहू खबरया। बहू दौगा हुआ गया और डाक्टर

सयद नासिर जास को जिनका मतव वहा स दस काम पर था अपन साथ ले जाया । डाक्टर साहब पहल से मुझे जानत थे । मरे सीने का मुआइना किया और मतव जाकर अपन आन्धी क हाथ दवाए भेज दी ।

दवाए पीकर अभी लगे हुआ अपनी बरसी पर गौर और अपनी मीन की आमद का इतजार कर रहा था नि आहट महसूस हुई । पंडित शिवनारायण, जिनका छापाखाना होटल से मिला हुआ था और जिह मतलबी फरीदावादी मुजस मिला चुके थे कम्मे म दाखिल हुए । मीन कहा 'आइए शिवनारायण साहब अपसोस कि मैं उठ नही सकता । आप मरे सिरहान बठ जाए । मिजाज पुरमी के बाद उहान कहा जोश साहब मुझे लदाजा हो गया है कि आप रिमाला नही निकाल सकते । मैं कारोवारी आन्धी हू मेरा अपना छापाखाना है इसलिए अगर आप पसंद करें तो मैं अपना पचास फीसदी हिस्सेदार हो जाऊं । कलम अपना चंगा और रुपया मैं लगाऊंगा । जब तक रिमाला चलने न लगे पाच सौ रुपय महीना आपका पेगगी देता रूहा । मुझे और क्या चाहिए था उनकी यह तजवीज फौरन मजूर कर ली ।

दो चार दिन के अंदर प० शिवनारायण न होटल क सामने ही दा कमरा और खुले सेहन का पलैट दफतर और मेरी रिहायश के वास्त किराय पर ल लिया । मैं होटल स वहा उठ जाया ।

कुछ रोज के बाद जो मैंने उनस कहा कि म अपनी बीबी का भी वहा ले आना चाहता हू तो उहाने करोल्पाग म एक कोठी किराये पर लेकर उस फर्नीचर से जारास्ता कर लिया । मैं धौलपुर जाकर बीबी का ल जाया जिससे यह कोठी जावा हो गई । कलीम अच्छा खासा चलन लगा माकूल आमन्नी हान लगी । मरी नजमा क न मबलन भी छप गए । हैरावाद से जताबी बज्जीफा भी जारी हो गया और जिन्गी बन से गुजरन लगी ।

साल दा साल जाराम स गुजरने के बाद मेरी जिदगी फिर एक सक्त की जानिव मुड गई । एक रोज शाम क वक्त शिवनारायण पुरुष चेहरे के साथ आए और कलीम स अपनी दस्तारकारी का ऐलान करके कह लिया कि कल से आप अपना पचास सभालें ।

यह सच है कि शिवनारायण न अपने भाइया क दवाव म आतर यह बात की थी मगर उनका यह इखलाकी फज था कि वह मुझ कम स काम तीन महीन का नोटिस दत । त्रिन उहान मिफ वारह घंटे का नोटिस कर अहदगी अख्यार कर ली । मैं मीना अपन पत्नी मन्मूअली या जामर् के पाम पहवा और कलीम का बाराजार उनस मुपु कर लिया । त्रिन जय एक महीन क बाद उहान कलीम की जामन्नी क मिफ नद्व रुपय मर हरा किए ता मैं दग रह गया । मैं मुरवत म कुछ कह न मता ।

जय और वार्ड मूरत नजर न आद ता मैं मिस्टर पणिसर का मन लिया और उहाने तार भ्रवकर मुझे पत्निया बुग लिया और महाराजा पत्निया

भूपेंद्रसिंह से मिलवाकर मेरा वजीफा मुकरर करा दिया। अब दिल्ली आकर मैं महमूदअली खा से रिसाला निकाल लिया और करोलबाग से दरियागज उठ आया। एक कोठी 'आदित्य भवन' विराये पर लेकर खुद रिसाला निकालने लगा। हकीम आजाद अंसारी मेरा हाथ बटान लग और हैरत ह कि मरी वीवी भी कलीम के कारोबार में मेरी मदद करने लगी। कलीम साज मज्जा और विषय वस्तु दोनों हैसियतो से दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने लगा।

मैंने उमी जमान में अपनी चचेरी बहन के बटे अल्ताफ अहमद खा से अपनी बनी सईदा की धूम धाम से शादी भी कर दी।

कलीम की तरक्की ने मेरे बहुत से दुश्मन भी पैदा कर लिए थे। ऐसा क्या न होता ? फिरगी हुकूमत से बगावत सरमाएनारी का विरोध समाजवादा का प्रचार और कांग्रेस की तरफदारी। नतीजा यह कि कांग्रेस के गुलामी परस्त मुस्लिफोन मुस्लिम लीग के खिताब-यापता मुजाहिदीन और हुकूमत के टुकड़ा और वजीफा पर पढ़नेवाले हुकूमत और उल्माए-कराम लगर-लगेट बाधकर जबाडे में उतर आए। उधर पट्टे में थी और इधर मैं अकेला।

जाए दिन मेरे खिलाफ कुफ के पत्रवे निकला करते और कत्ल की धमकिया के गुमनाम खत आया करते थे। खुफिया पुलिस साथ की मानिद मेरे पीछे लगी रहनी थी। वीवी चिल्लाती रहती थी कि जगे मुह अवेर टहलना छोड़ दो। न जाने कौन जधेरे में पीछे से आकर छुरी मार दे। लेकिन मैं हर रोज तारा की छाव में एक मोटा सा डंडा लेकर जमुना के किनारे बडे इत्मी नान से टहल करता था कि आखिर मैं भी आफरीदी पठान हू तो चार को मारकर मरूंगा।

## फिरगी राजनीति के दो रुख

सात तीन या चार बरग तब वलीम को कामयाबी से चलाकर और ए ऐसे रोमानी रोग मफमरर जिसन मरे हवास छीन लिए, मैं शिल्ली की जिन्गी तजरर मलीहावात् चंग गया। चूनि मैं रिसाऊ क काम का नहा रहा था मैंन अपन दामात् जनाफ जहमत् को मनजर बना लिया। तस्नि जब दख कि वह बिल्कुल निपटटू है तो मन वलीम बत् करक मजात् अली सरला और सिन्नहसन की दरह्वास्त पर उस उन लोगा क रिसात् नया अत्प म मिला दिया जो अत्र वलीम व नया अदब के नाम क माय लगनऊ स निकलने लगा।

बहुत हैं कि बत्त सबसे बडा भरहम है। मलीहावात् आकर छ-सात महीन के बाद मेरे दिल का जल्म बडी हुत् तक भर गया।

दीवी तुल गइ आमा क बाग लगवान पर और ऐसी तुल गइ कि घाना-पीना दूभर कर दिया। हर जान यह रट लग गई कि बाग लगवाओ और जब तक बागा म कलम न लग जाए कलम न उठाओ। मैंन उसी जमाने म एक तबील डामाई नरम हर्फे आखिर गुरु की थी। उहात वह नरम भा नही कहने दी।

तब आकर मैं मातादीन पटवारी को बुलाया। उसने कहा मजले भया अब कानून बदल गया है। आप किसी काश्तकार को बत्खल करके उसस जमीन नही निकाल सकत। और जब जमीन नही निकल सकगी तो बाग कैसे लभेगा ?

मातादीन को बात सुनकर मैं बाग-बाग हो गया कि चलो एक मुसीबत कट गई। मैं खुशी खुशी दीवी के पास गया और झूठ भूठ का गमगीन चेहरा बनाकर पटवारी की बात दोहरा दी। लेकिन दीवी निराश नही हुइ। मुझे और पटवारी को साथ लेकर गाव गइ। थाने के सामने काश्तकारा को जमा करक पटवारी से कहा पूछो काश्तकारा से कि मजले भया ने क्या तुम पर कभी जुल्म ढाया है ? तुम पर लगान बसूली करने म कभी सत्नी की है, तुमसे कभी बगार लिया है ? और जब मातादीन ने ये तमाम सवाल किए तो हर तरफ स आवाज जाने लगी—नाही नाही नाही कभू नाही। फिर दीवी न कहा 'मातादीन पूछो अगर भया बाग लगवान के लिए तुमसे थोडी थोडी जमीन मागें ता क्या तुम नही दाग ? सारी रियाया ने एकजवान होकर कहा—दीवा दीवा अमू-अमू दीवा गले गले दीवा।

इसक बाद मातादीन न इस्तीफे निकाले और काश्तकारा ने घडाघड अगूठ लगाना शुरू कर लिए। जब तमाम इस्तीफे मुश्मिल हा गए तो दीवी ने मुझसे

कहा अब तुम इनका गुन्रिया अना कर दो। जब मैं शुन्रिया अदा करने खाडा हुआ तो तमाम काशनकार राने लन—भया हम तो तुम्हारी पनही हैं, अस न करी (भया हम तुम्हारी जूती हैं ऐसा न करो)।

वीवी ने मिठाई तकमीम की और रिआया ने मचल भया की जय के नारे लगाए। दो-तीन महीन के अदर आम के वाग लग गए और वीवी निहाल हो गई।

यह सच है कि मलीहाबाद म बहद शांति थी सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य, जमीनागज के मंदान की खालिस हवाए वौर की खुशबू कोयल की कू-कू और पपीहे की पीहू थी और लिखने पत्ने की फुरसत। लेकिन जब शाम को शराब पान की इबादत शुरू करता था तो दोस्ता को आखें दूढ़ने लगती थी और चूकि—

जाहिल की नमाज हा कि मकश की शराब  
दाना का मज्जा है वाजमाअत साकी।

इम तनहाई से तग आकर मैं शायद १९४१ म फिर लखनऊ आकर रहने लगा। एक रोज जब मैं अपनी बनारसी वाग के फाटव के सामनेवाली कोठी म बटा लखनऊ के गवनर की तकरीर रेडियो पर सुन रहा था जिमम हिन्दुस्तानिया स अपीन की गई थी कि वे इसानियन के मुस्तकविल को बचाने की खातिर जग म ब्रिटेन की मदद पर कभरबस्ता हो जाए उस वक्त मैंने अपनी नजम इस्ट इंडिया कम्पनी के फरखदा से खिताब पत्रह मिनट म कह डाली थी।

इम नजम का छपना था कि आग लग गई। लोग जुलूस बना-बनाकर निकल और उम गली-गली गात फिरन लगे। आगे-आगे के लोग होने थे और पीछे-पीछे पुलिस।

मेरी यह नजम जब वलिन रेडियो से ब्राडकास्ट हुई तो मेरी सभ्य निगरानी होन लगी और मेरी कोठी से मिली हुई दूसरी कोठी म एक सी० आइ० डी० इस्पेक्टर मेरी तिन रात की निगरानी के वास्त आकर रहने लगा। एक तिन मह पहर के वक्त पुलिस ने मेरी कोठी पर धावा बोल दिया और एक हिंदू इस्पेक्टर की सरकरानी म दस-पत्रह कास्टेबल आ धमके मेरी खाना तलाशी के लिए। इस्पेक्टर से मैंने कहा जनाव मेरा घर खुला हुआ है। आप शौक से एक एक कोना छान डालें। इस्पेक्टर न सरगोशी के अदाज म कहा, मैं जापको एमी उम्मा नजम लिखन पर मुबारकवाला देता हू। मैं आपके घर की तलाशी नहा लूंगा और मिफ जाना की कारवाई करके चला जाऊंगा। मैंने कहा पुलिस म रहकर आप इम कदर शरीफ हैं बडे ताज्जुब की बात है। उसने कहा मैं अपने वच्चा का पेट पालने के लिए मजबूरन नौकरी करता हू। मगर मैंन जमीर नही बचा है भरा दिल आप लागा क साथ है। वह एन मज पर सर मुवाकर जान की खानापूरी के वास्त कुठ लिखने लगा। इस्पेक्टर की मशगूलियत से फायला उठाकर एक मुमलमान हेड कास्टेबल न मेरी टाइमपीस

उठाकर जब म रखा ली । चारी उगा की मैं समान मर मुता लिया ।

जात्रा की कारवाँ मुस्लिम करक जब इम्पारन मगमत हात लगा मैं उसारा मुनिया अग किया । हिंदू की शराफत जोर मुगलमान की बमीनगी दरदर मुने जना पगौना आ गया—

कार्ड हू हा नहीं इस एहताराम-आत्मीयन की  
बनी करता है दुश्मन और हम शर्माए जान हैं । ✓

मैंने इस घटना पर एक नज़म कहकर छपावा दी जा छान ही जग कर ली गई । चूँकि वह नज़म मर किसी सग्रह म नही है इसलिए यहाँ तक लिए देता हू—

जिसस उम्मीदा म मिजली आग जरमाना म है  
ऐ हुकूमत क्या वह श इस मज क खाना म है ?

वद पानी म सपीन से रही है किसलिए ?

तू मिरे घर की तलाशी ले रही है किसलिए ?

घर म दरवेशा के क्या रखा हुआ है वदनिहाद । ✓

आ मिरे दिल की तलाशी ले कि बर जाए मुराद ।

जिसक जन्म दहशतें पुरहौल तूफाना की है

जिसम गलता जाधिया-अधे वयावाना की है

जिसक जन्म नाग हैं ऐ दुश्मने हिंदोस्ता

गर जिसम हाकत है कौघती है विजलिया

छून्ती है जिससे नज़ें जफसरो-औरग की

जिसम हू गूजी हुई जावाज त ले जग की

जिसके अन्दर आग है मुनिया पे छा जाए वा आग

तारे दीजल का पसीना जिससे जा जाए वद आग ।

मौन जिसमे देखती हू मुह उस आईन का दर

मरे घर की देखती क्या हू मिरे सीन को देख । ✓

इसके बाद मैंने आगाई साहब के इमामवाडे म एक मुसद्दस पना हुसन और इनकलाव के नाम स जिसे सुनने के लिए पूरा अदवा लखनऊ टूट पडा था इमामवाड म तिल करने को भी जगह न थी । लखनऊ क तमाम शायर तमाम उस्ताद यहाँ तक कि मौलाना सफी भी तशरीफ लाए जोर मजलिस म सिफ लिया ही नही जहले सुनत और हिंदू भी शरीक हुए थ ।

चूँकि इस मुसद्दस म रोने-पीटने पर जार दन क वजाय हुसन क चरिय जोर बलिदान पर जमल करने की बात बिल्कुल पहली बार कही गई थी इसलिए जहल मजलिस न जामतोर पर जोर जहल सियामत न खासतोर पर बार-बार खडे हारर इस जोशो खराश के साथ दाद दी थी कि उनकी आवाजा के धपेडा से मच म जुम्बिया पदा हो गई और ऐमा मानूम हो रहा था कि श्रोता

अपन अरा शेरवान फाउण्ड मदान नग म कूद पडगे ।

हुकूमत के कान तक यह गलगग पडुवा ता उमन शिपा खान माह्रा खान बहादुरा और 'सरा को तत्र बरके यह हिनायन की कि व एमी कोई तत्रवीर तिकाल कि इस मुमद्स का बसर दूर हा नाग । अपन आका वा हुकम मुनकर उहाने मशविरा किया और व तमाम लखनऊ क मद्रसे बडे मुज्तहमद सयत नासिरहुसेन साहब किवला की विदमन म हाजिर हुए और उनसे कहा कि अहले मजलिम न जामतीर पर और वानीए मजलिम हकीम साहब आलम न खासतीर पर हमार दीन की तौहान की न और मग्ने हुसन पर जाश जमे शरावी को बिठाकर मबर की तजलील की है । मलिए आप उस मजलिम के वानिल होन का फतवा सात्र परमा द ।

किरला व कावा न मुमे बुलवा भेजा और चायताशी व वाद अपने वाइ तरफ एक मुसल्ला विछवाकर इरशाद फरमाया कि जोश साहब जहमन न हो ता मुमद्से पर बठकर अपना वह मुसद्स मुना द जा आपने आगाई साहब क इमामवाडे म पला था तो हुकूमत के एजटा की सफा म एक खलवली और बौखगहल पदा हो गई थी । और जग में वह मुसद्दम पत्रकर अपनी जाह वापस आ गया तो उहान सरकारपरस्ता की टोली की तरफ देखकर इरशाद फरमाया कि आप हजरत न वह हनीम मुवारक मुनी हागी, जिमका मतलब ह कि जब तुम मुत्र (नग) म हो ता नमाज के करीब न फरको । इसम यह वान साबित हो जाती ह कि पीनेवाला का हाश क जालम म नमाज पडन से राना नही गया है और इसमे यह नतीजा निकलना है कि अगर कोई शगम नग क आलम म नही है तो वह मबर हुसन पर भा बठ सकता है और मस्जिद म दाखिल हाकर नमाज भी पढ सकता ह ।

यह सुनत ही सरकारपरस्ता का रग फर हा गया ।

इम मुसद्स का अंग्रेजी अनुवात् जब मिस्टर मारिस मशारे-गवनर के मुलाहिने मे गुजरा तो उहान मुझे बुला भेजा और बटे मुखियाणा अदाजम कहा मैंने जब आपकी नज्म हुसन और इनकलाव का अनुवाद पला तो आपक वार म यह राय कायम की कि आप हक क परस्तार और वातिल क दुश्मन ह । और अत्र मे आपने यह सवाल ररता हू कि मुसोलिना और हिटलर दोना इम कम्न यज्ञा का पाट अना कर रह है या नही ? जब मैंने कहा कि बशक आप सच कह रहे हैं ता उहान दूसरा सवाल किया कि अगर मैं मे आपसे दरवास्त कर कि आप इन यज्ञादा क खिलाफ आन इडिया रडिया से हर ह्पन एक नज्म ब्राडकास्ट करत रहे (जिमक मुआवित्त म यू० पी० सर वार आपका आठ सा रपद महीना आनररियम निया करगी) तो आप इस आफर का कबूल नही कर गे ?

मैंने वह मिस्टर मारिस में किसी ऑनरेरियम क वगर आपके इरशाद का मान लेता मगर क्या कर अपन उसूल स मजबूर हू । कायम न इम ज



म आपना हाथ घटान की जो शर्तें पेश की थी आपनी हुक्मत ने उह नही माना ।' मारिस ने मरी बात काटकर कहा ' मैं आपसे हुक्मत के तवाज की दरवास्त नही कर रहा हूँ मैं सिफ इतना चाहता हूँ कि आप मुसालिनी जीर हिटलर को बनकाव कर । मैंने कहा "अगर मैं ऐसा करूंगा ता इसका जो ग्राड टोटल निक्लेगा वह आपकी हुक्मत की मुवाफिकत ही होगा ।

मारिस यह सुनकर कुछ देर के लिए तो खामोश हा गए । फिर अपनी ऐनक की ताल साफ करके वह बड़े बलबले के साथ खडे हा गए । मैं समया वह मुझपर हमला करेगे । म भी जवाबी हमल के वास्त खडा हा गया ।

लेकिन वह मरे करीब आए और मरी पीठ ठाकर कहन लगे बडरफुल यगभन ! आपके इनकार न मरे दिल म आपकी इच्छत कामम कर दी । आप अपन बाप की मानद बडे जादमी हैं । आपको देखकर मैंने अपनी इस राय म तब्तीली कर ली है कि हि दुस्तान की जमीन करेक्टर पदा नही करती । अगर आपको कभी मरी जरूरत पडे तो मुचे याद कर लीजिएगा । यह कहकर वह मुच बरामदे तक रुखसत करन आए और बराबर मुसकरात रहे ।

## कुछ दिन फिल्मी दुनिया मे

उम्मीन अमठवी जीर सागर निजामी को साथ लेकर जब मैं एक मुशायर में शरीक होने बम्बई गया तो उसके दूसरे ही दिन शाम के वक्त शालीमार पिकवस पूना के मालिक जहमद साहब बने (सज्जाद जहीर) के घर आए (हम लाग वही ठहर हुए थे) और हम लोग का क्लाम सुनने के बाद वह बने मिया को हमरे कमरे में उठाकर ले गए। दर तक बातें करने के बाद जब खसत हो गए तो बने मिया ने मुझसे कहा कि अहमद साहब आपसे और सागर साहब का अपने साथ रखना चाहते हैं। आप दोनों पर कोई पाबंदी नहीं होगी। सिर्फ गान लिख दिया कीजिएगा। आपका मुआवजा ग्यारह मी तक और सागर का मुआवजा साढ़े पाच सौ तक हाजिर किया जाएगा। मैंने कहा यह पीने का वक्त है। इस वक्त इन बातों का मौका नहीं बल जवाब दूंगा। सुबह को सागर ने मुझसे कहा कि अगर आप यह शत लगा दें कि मरा और सागर का मुआवजा बिल्कुल बराबर होगा तो चूक अहमद साहब की यह तमन्ना है कि आप उनके वहां काम करें इसलिए, वह इस शत को मान लगे और मेरी जिंदगी बन जाएगी।

मैंने बने से कहा कि मेरी यह शत है कि सागर को मेरे बराबर मुआवजा दिया जाए। अगर अहमद साहब इसे कबूल नहीं करेगा तो मैं उनकी यह पेशकश नामजूर कर दूंगा।

अहमद साहब ने न चाहत हुए भी यह शत कबूल कर ली। थोड़े दिन के बाद हम लोग पूना आ गए और शकर सेठ राठ के 'ताहिर पलम' में रहने लगे।

मैंने अपने दिल्ली के रहनेवाले पंजाबी दास्त मालिक हबीब जहमद जीर अपने दक्कनी दोस्त हबीबुल्ला रशदी का भी शालीमार में मुलाजिम रखा दिया था। वृत्तचक्र के भी अहमद साहब पूना खींच लाए थे वंचारा जवा मग शाम तिवाड़ी हमीन वट ब्रजभूषण और भारतभूषण भी शालीमार में काम कर रहे थे। मेरे पुरान फौजी दास्त मनन खा रामपुरी भी तंगील हाकर पूना आ चुके थे और पूना के नय दास्त कूददूस घड़ीवाले जीर मुम्मद नसीद भी ऐसे दिलचस्प निकले कि रात की अक्सर नशिस्तें उनके घर पर हुआ करती थी। एक अच्छी-खासी खडाल चौकी की सूरत निकल आई थी।

वहां मेरे एक लखपती दास्त और भी थे मोलाडीना जो तमाम वक्त शराब पीत और दिल खोकर लागा की इमलत किया करते थे। एक खास सिलसिले में उहां मरी भी मन्द की थी, जिसे मैं भुला नहीं सकूंगा।

वहीं सागर साहब का मुरादाबाद की एक साहबजादी से कलमी मुआ-

शका भी चल रहा था और कुछ रोज़ के बाद वह साहजगती तऱहिर पलम म दुल्हन बनकर जा गई थी ।

पून का हर दिन ईन और हर रात शबरात थी । हर आठवें त्सर्वे दिन में बम्बई जानर किसी क जास्वान जमाल पर सजदारेजी भी कर आता था । लकिन अहमद साहब की गलत जमली ने दा-डाई साल क अटर वह सारा तिलिस्म तोड दिया । वह चुपचाप पाकिस्तान की तरफ उडान कर गए और हम सब लोगा के हाथा के तोते उड गए । वह सारा खेल मिट्टी म मिल गया ।

पूना छोडकर मैं बम्बई आ गया और बने क खाली घर म रहने लगा । उस घर के एक कोने मे मुमताज हुसेन, जो आजकल कराची के किसी कालिज म उदू के उस्ताद है, भी रहत थे जहा सईया के बच्चा और उनम रोज़ कार्ड न बोई पगडा हुआ करतऱ था । इसलिये मैं अपने एक बन्धुल्लुफ मिलनेवाल मिस्टर जदुलअजीज रामपुरी के जक सक्लि बाल खाली पलट म उठ आया । उस जमाने म फिल्मी बाजार ठठा पडा हुआ था । सागर हर दूसर तीसर दिन भरे पास आते और हम एक-दूसर से पूछा करत थे कि खा साहब जब हागा क्या ?

मैं इसी जालम म एक रोज़ शाम के बक्त शगल कर रहा था कि बाजार म यकायक क्यामत का एक हगामा गुरू हो गया और हर तरफ स मारो मारा की जावाज्ज जाने लगी । मैं बरामद म जाकर सक्ने लगा कि दख मामला क्या ह । इतने म किसी ने जोर जोर स मरे पत्र का दरवाजा खटखटाना गुरू कर दिया । मैंन भरी सोडे की बानल हाथ म लर दरवाजा खोल दिया । दरवाजा खुलत ही एव जानी पहचानी मूरत क हिन्दू न बडी पबराहट क साथ बहा मिस्टर जाश आप यहा से फोरन किसा मुस्लिम मुटल्ले म च्छे जाए । किसी न महात्मा गाधी का गोली मार नी है । हि टुआ का पयाल है कि यह काम किसी मुसलमान का है । मैं अपन बाल बच्चा और बानल का लेकर अपनी बडी की सहला रिफत क मकान म जा मिडी बाजार म था चला गया । वहा पहुचा ता रेडिया पर जवाहरलाल का यह ऐलान सुना कि महात्मा गाधी का एक हिन्दू मरहठे गाइस न गांठी मारकर हलाक कर लिया है । अगर जवाहरलाल इस ऐलान म पाच मिनट की भा दर कर दत ता लाखा मुसलमाना का बत्ल कर दिया जाता । दूसर दिन मैं अपन पत्र म जा गया । जिनगी तगदस्ता म गुजरन लगी । एक दिन मैंन दखा कि बीबी बहू उतास बठी है । पूछा क्या ज्ञात है । वहा लगा मरे पाम जा रपया था जय वह मुत्रिया भर रही है । जन्गी काइ सुनीता करा नही ता, खुता न कर, धडाधड फान हान लगि ।

बीबी की इस उतासी पर मरा दिल भर आया । दूमर कमर म लटकर सा गया । जय आख खुनी ता दखा कि मरा नामा जन्ताक एक अन्गर

गिए आ रहा हूँ। उसने जख्खवार देकर कहा "मामू, सरकारे हिन्दू का अपने रिमाले 'आजकल' क गिए एनीटर की जरूरत है। आपके वाम्त यह बहुतरीन मौका है। आप फौरन दरखास्त खाना कर दें और प० जवाहरलाल नेहरू के पास उसकी नकल भेज लें।" मैंने कहा, 'वेदा दरखास्त तुम लिख लो मैं दस्तावेज कर दूंगा। दामाद थोड़ी देर में दरखास्त लिखकर आ गया और वह दिल्ली भेज दी गई।

इसके दूसर-तीसरे दिन इत्फाक से प० जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम दाना बम्बई जा गए। मैंने इन एक अच्छा शगुन समझा और सीधा गवर्नमेंट हाउस पहुंच गया। मातूम हुआ कि पंडित जी और मौलाना वही बाहर गए हुए हैं और एक घंटे में पलट आएंगे।

जो मैं आया कुवर महाराजसिंह से क्या न मिल लू और खाली बैठकर इंतजार क्यों करूँ। पर्चे पर अपना नाम लिखकर भेजा। उन्होंने फौरन बुला लिया और पूछा 'खा साहब आप यहाँ क्या? मैंने कहा, 'मैं तो आजकल बम्बई ही में रहता हूँ। उन्होंने कहा 'और फिर भी मुझसे कभी नहीं मिले?' मैंने कहा 'मैं इस वक़्त पंडित जी से मिलने आया था। वह मौजूद नहीं, इसलिए आपसे मिलने आ गया हूँ। मगर फौरन ख्याल आया कि मन बड़ी बतुकी बात बड़ी है। यह साचकर मैं झेंप गया। महाराज सिंह बड़े जहीन जान्नी थे भाप गए और मुसकराकर बहने लगे आप पठाना की यही बात तो मुझे बहुत अच्छी लगती है कि जो बात आपके दिल में होनी है वही शरत-से जमान पर आ जानी है। मैंने कहा मैं अपनी बदहवासी की माफी चाहता हूँ। उन्होंने कहा मैं जिस बात की दिल से बंदर करता हूँ आप उसकी माफी चाह रहे हैं। उम्मी बक्त मौलाना आगे आगे और पंडित जी पीछे पीछे उनके कमरे में दाखिल हुए। मौलाना ने फक्त हाथ मिलाया और पंडित जी लपककर भरे गए लग गए और छूटते ही पूछा— जोश साहब आजकल आप क्या कर रहे हैं? मैंने कहा, पंडित जी आजकल के लिए दरखास्त देकर उमका इंतजार कर रहा हूँ। पंडित जी ने मुसकराकर कहा, यह 'आजकल' की उलट फेर मरी समय में नहीं आई। मौलाना आजकल ने लाल बुखन्द बंद कर रखा मातूम होना है कि जाश साहब ने हमारे सरकारी रिस्तर आनकल का जो इश्तहार निकला है उसकी इदारत के वाम्त दरखास्त ली होगी। पंडित जी ने कहा 'ता फिर छठे गज जाय दिल्ली आ जाए मैं बंदाराम्त कर दूंगा।

मौलाना आजाद ने कहा पंडित जी यह महकमा सरकार पटल का है। आप सोच समझकर जाश साहब का दिल्ली बुलाए। पंडित जी ने कहा जाश साहब हमारे कंधे में कंधा भिगाकर ब्रिटिश सरकार में लट चुके हैं। पटल का भी यह धान मातूम होगी और अगर नहीं मातूम होगी ता मैं उन्हें बना दूंगा। आप बड़े शदीनान के साथ दिल्ली आ जाएं।

## हिजरत

आजकल का सम्पादन सभालने के बाद एक राजपन्त जी से मिलन गया, तो उन्होंने पूछा कि अपने महकम के वजीर सरदार पटल से अब तक मिल कि नहीं। मैंने कहा, नहीं, और न मिलने का इरादा ही है। पंडित जी न पूछा, 'क्या?' मैंने अंग्रेजी में जवाब दिया कि उनका चेहरा मुजरिमा का सा है।

पंडित जी ने बड़ा जबरदस्त कहकहा लगाया और फिर मुझसे कहा 'नहीं-नहीं आपको उनसे जरूर मिलना चाहिए। मैं फोन पर अभी आपकी मुलाकात तय किए लेता हूँ।' उन्होंने फोन किया। जवाब आया कि अभी खाना कर दीजिए। मैं उनकी बोली पर पहुँचा। वह धोती बांधे धरामदे में छड़े हुए थे। मैंने हाथ मिलाते ही उनसे कहा 'सरदार साहब मुझे आपसे मिलने का एक खास बजह से बड़ा इशतयाक था। वह बड़े घाघ आदमी थे। खास बजह सुनकर भाप गए और पूछा 'आपको मुझसे मिलने का क्या इशतयाक था?' मैंने कहा, इसलिए कि मैं आपकी बहुत-सी बुराइयाँ सुन चुका हूँ।

वह मुझे कमरे में ले गए। बोलते ही उन्होंने अंग्रेजी में कहा 'आपने यह सुना होगा कि मैं मुसलमानों का दुश्मन हूँ। आप जिन भयंकर स्पष्टवाणी हैं उतना ही मैं भी हूँ। इसलिए आपसे साफ साफ कहना हूँ कि मैं आपके-में उन तमाम मुसलमानों की बड़ी इरजत करता हूँ जिनका ध्यान बाहर से आकर यहाँ आया है। लेकिन मैं उन मुसलमानों को पसंद नहीं करता जिनका तालुक हिन्दू कौम के शूद्र और नीच जाना से था। मुसलमानों की हूबूमन के अमर में आकर उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था। ये लोग अरबों बड़े मुनाम्मद शरीर और फिमानी हैं। और कम गिनती में हान के बावजूद जयान गिनती के हिस्से का दायरे रखना चाहते हैं।

मैंने कहा 'सरदार साहब पहली बात तो यह है कि दुनिया के तमाम इमान एक नाम में हैं। मैं जान पान का बिरतु का पना नया। दूसरी बात यह है कि अगर जाऊँ तो दा-नीन मौ करम पट्ट किमी के परलान का परलान चमार था तो क्या आपका मया है कि उस चमारपन में आज तक काद तनीया नया हा मरी ? वह आज तक चमार ही चय आ रण है ? मय वान का वय पनार दन ही वाय थ कि उनर मययान न आकर वय शपन महाराजा पनियान का यय टानम निया था। वय आ गण है।

सरदार की बा। मैं अभी निरतय था कि मौयाना आठान म मुठभय हा मय। उन्होंने अपना मातर रातर मुग आवाक नी। तय मैं अपनी मातर म उतरर उनका मातर म बठ गया उय न मुगे वय पनार तयरा मे दय कर वय 'जाग मातर आर नीर मययार पय'। मैंने मय मयानिया और मैं

सोचने लगा कि हमन अपने मुल्क को इतनी कुर्बानिया देकर क्या यह दिन देखने के लिए आजाद करवाया था कि अंग्रेज के जाने ही उदू का वेडा गक हो जाए और मुसलमाना के मुह पर हवाइया उडन लगें। वान मे दतिया रियासत के वजीरे-आजम काजी अब्जीजुद्दीन की आवाज आई कि जाश साहब हम न कहत थ कि हिन्दुस्तान आजाद हो गया तो हिन्दू मुसलमाना को तहतेग कर डालेंगे ? इसके साथ ही यह खयाल भी आया कि पाकिस्तान बनानेवालो ने यह क्यों नहा सोचा कि जो मुसलमान हिन्दुस्तान म रह जाएग उनका हथ क्या होगा। वे एक एक मुसलमान को पाकिस्तान क्या नहीं ले गए ? फिर मैंने अपन का इस उम्मीद से तमल्ली दी कि नफरत की उभ्र ज्यादा नहीं होनी। चार दिन म ये तास्सुवान खत्म हो जाएगे और सोशलिस्ट हुकूमत शायम हो जाएगी। फिर य सारी तफरीकें मिट जाएगी और दीनी विरादरी खत्म होकर इसानी विरादरी क दौर की शुरुआत हो जाएगी—

यह एक शब की तडप है सहर तो होने दो  
 वहिश्त सर पे लिए रोजगार गुजरेगा।  
 फिजा क दिल से परअफशा है आरजुए-गुवार  
 जरूर इधर से कोई शहनवार गुजरेगा।

१९५५ म जब एक मुशायरे के सिलसिले म मैं तीसरी बार पाकिस्तान गया तो हरचद उससे पहले भी मेर पुराने दास्त मयद अबूतालिब नक्वी चीफ कमिश्नर कराची मुझे पाकिस्तान आ जान की दावत दे चुके थे लेकिन इस मतवा ता वह पजे झाडकर मेरे पीछे पड गए।

मैं पाकिस्तान आन पर विल्कुल तैयार नहीं था लेकिन साफ इनकार नहीं किया कि नक्वी का दिल न टूट जाए। और यह कहकर टाल दिया कि मैं इस मसले पर गौर करूंगा।

इसी बीच म उन्होंने अपने घर पर मजलिस की। शहर के बडे-बडे लोगा क साथ सिकन्दर मिर्जा को भी बुलाया और सबको मेरा मुसद्दम हुसनो इन कलाब' सुनवाया। उन तमाम लोगा न जिनम सिकन्दर मिर्जा भी शामिल थे, मुयसे आप्रह किया कि मैं पाकिस्तान का वाशिदा बन जाऊ। उनकी दावत पर हरचद मैंने अपने लिख म ता यह कहा कि खुदा की कसम मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगा। लेकिन जबान से यह कहा कि मैं भी यही सोच रहा हू। अब नक्वी का यह तक्रियाकलाम हो गया कि जोश साहब, आधिर आप कब तब साचेंगे ?

इसी बीच म वह एक रोज मद्रापोल आ गए और मुयसे कहा कि सारे काम छोडकर आज आपके पास इसलिए आया हू कि आपसे पाकिस्तान आने का इक्लार कर दम लू।

मैंने कहा नक्वी साहब, आपका मानूम है कि मुझे आपसे किस ब्दर मुहल्यन है। अगर आप मरी जान तक भागें तो हाजिर कर दू। लेकिन

नक्वी साहब न कहा कि दफ्तर 'अरिन व बा' इनकार कर लीजिएगा। मैं चुप हो गया। वह अपना भाषा छोड़कर मरे साफे पर आकर बैठ गए और बस लग 'फरमाएँ आप पाकिस्तान कर जा रहे हैं। अब जो क्या और जायें नीची बरक मैंने कहा नक्वी साहब जब तक पंडित जसाहरगं नहं जिए है मैं पाकिस्तान क्या कर आ सकता हूँ ?

उन्होंने मरे कंधे पर हाथ रखकर पूछा 'और नेहरू व बा' क्या होगा यह भी कभी सावा है ? मैंने कहा 'छुटान कर मैं उनक बा' जिए रहूँ। उन्होंने कहा कि शायद की यह बड़ी बचवली है कि वह जिएगी व मजींग ममंग को भी जजबत की तराजू म तोंग करता है। मैं आपस पूछना हूँ कि अगर नहं साहब आपकी जिदगी म सिधार गए ता फिर हिंदुस्तान म आपका चाहन वाला कौन रहे जाएगा ? आपकी यह नौकरी आपकी यह फरागत व इच्छत क्या उनक बाद खत्म नहीं ही जाएगी ? थोडा देर व वास्त यह भी फज कर लीजिए कि नेहरू व बाद भी हिंदुस्तान आपका सर जाखा पर गिठाए रहेगा लेकिन यह भी ता साचिए कि आपक बा' कहा आपक बच्चा का क्या हथ होगा ? देखिए जोश साहब आपके बाद हिंदुस्तान म आपक बच्चे दर दर मारे फिरने और एक जादमी भी उनके सर पर हाथ नहीं रमेगा। यहा तक तो मैं जाधिक पहनु पर बात कर रहा था। अब जरा तहजीबी पहनु पर भी निगाह डालिए, यह उसस भी क्यादा जानलेवा साबित होगा। जोश साहब, आपके बच्चे उदू भूल जाएंग। हिंती उनका ओटना बिछीना होगी। वे आपक कलाम का तरजुमा हिंदी म पढ़ने। और तहजीबी रवायती और सकाफती (सासुतिक) एतबार स आपकी पूरी नसु म इस कदर जररस्त तनीली आ जाएगी कि आपसे उसका किसी किस्म का भी तालुक बाकी नहीं रहे जाएगा अगर आप कहा न आ गए तो क्या उससे यह मानी नहं हगि कि आप अपनी बत्ती फरागत व इच्छत की कुर्बानगाह पर अपने पूरे खानदान को भेंट चढा देने पर तुले हुए हैं।

उनकी इस तबील जजबती और मतिवी (तकपूण) तकरीर ने मेरा दिल हिला दिया और मेरी आखें खोल दी और मैं सोचने लगा कि मेरे बा' मेरे य नाजा के पाले बच्चे और मेरी यह शांना मिजाज रखनेवाली बीबी क्या करेगी। नक्वी साहब से मैंने कहा आपने मुझे जजोडकर जगा दिया। बेशक मेरी आल औलाद हिंदुस्तान म पतप नहीं सकेगी। नक्वी साहब मुझ चौबीस घण्टे और दे दीजिए कि मैं नस मसल पर एक बार और गौर कर लूँ। कल इसी वक्त आपकी तिममत म हाजिर होकर अपना आखिरी फसला सुना दूंगा।

नक्वा के चले जाने व बाद मैंने नासिर अहमद खा से कहा कि तुमने मुन ली नक्वी साहब की सारी तकरीर अब क्या कहत हा ? नासिर ने कहा कि मुझे उनके एक एक हफ स इत्फाक है। अगर आप यहा न आए ता जिदगी भर

क लिए पछनाएगे। यह कहत ही नामिर मेरे करीब जाकर बठ गए और बड़े बलबले क साथ अगुली हिलात हुए कहने लग 'खा साहब आप कई पुश्ता म मलीहाबाद पर हुकूमत करत चने आ रहे हैं। आपकी रिआया आपक सामन धराती और युव युवकर मलाम करती है। बल उसी दो कोड़ी रिआया के वच्चा आपके वच्चा पर हुकूमत करेग उह धोतिया बधवाएगे और उनके सरा पर चोटिया रखाएग। अग्लाह करे य दिन देखन से पहले हम मर जाए।

सुबह उठकर मैंने इस मसल पर दागरा गौर किया। नहा धोकर नकवी साहब के पास गया और उनस कह लिया कि अज मैं हिजरत पर तयार हा गया हू। नकवी को वाछें खिल गई दौडकर मुझे गल लगा लिया और उसी वक्त रिपुती कमिश्नर का तलब करके हुकम दिया कि जहागीर रोड पर जो एक बहुत बड़ा प्लॉट खाली है उसे जोश साहब क नाम अगट कर दीजिए। उसपर उनका सिनेमा हाल और मकान तयार किया जाएगा। और फग मुकाम पर पचास एकड़ जमीन भी जोश साहब का जलट कर दीजिए वहा उनका बाग लगवाया जाएगा।

जब उनके हुकम की तामील हो गई तो दोना जमीना पर मुने कजा द दिया गया और मेरे चौकानार झापडिया टालकर वहा रहने लगे।

नकवी साहब न कहा आप दिल्ली जाकर इमजेंसी सर्टीफिकेट पर अपने बाग वच्चा का यहा ले आइए। आपके जात ही सिनमा की तामीर का काम गुरू करा दूंगा। साथ ही उहान अपन सश्रेंटरी रवानी साहब को बुलाकर मर मकान की तलाश के लिए कहा। उहाने मिध मुस्लिम हाउसिंग मासा इने मे एक अच्छी सी कोठी मरे हवाले कर दी और मैं दिल्ली परवान कर गया।

दिल्ली पहुचा, मानूम हुआ पंडित जी बाहर गए हुए हैं दा-तीन दिन म आएगे। सीधा मौलाना के पास गया। मौलाना किसी अम्बवार म यह पढ चुके थ कि हिंदुस्तान के एक शायर पर पाकिस्तान डारे डाल रहा है। उहान छूटत ही मुझन कहा 'शायद आप ही वह शायर है जिस पर पाकिस्तान डोरे डाल रहा है?' मैंने कहा 'जी हा मौलाना मैं वही शायर हू।' मैंने अपनी सारी कहानी बयान कर दी, नकवी साहब की तकरीर के एक एक लफज को दोहरा दिया और फिर उनस पूछा 'अब आपकी क्या राय है मौलाना?'

उहोने चांद सवाल करके जब मामल के हर पट्टू को समझ लिया तब कहा, आपका हिजरत कर जाना हरबंद हमारे वास्त पनेमानी थ सरगरानी का वाइस होगा लेकिन जहा तक आपक वच्चा के मुस्तकबिल का सवाल है, मरी राय है कि आप हिजरत कर जाए। नकवी ने यह सच कहा है कि नहक क वाद यहा आपका कोई पूछनवाला नहीं रहेगा। आप ता आप, खुद मुने काई नहीं पूछेगा। मैं हर मामले को मतिबी तौर पर देखने का आनी हू।



लेकिन जवाहरलाल शर्मा जड़याती आदमी हैं वह आपकी हिजरत पर किसी तरह आमादा नहा हगि ।

तीसरे दिन यह सुनकर कि पंडित जी आ रह हैं मैं पालम के हवाई अड्डे पर पहुंच गया । वह उतरे तो मैंने उनस कहा कि मुझे आपस एक जहरी बात कहना है और आज ही । उन्होंने कहा, तो फिर अभी मरे साथ चलिए । जब उनक घर जाकर मैंने अपना कुल भाजरा बयान कर लिया और यह भी बना दिया कि मौलाना जाजाद की इस बारे म क्या राय है ता चेहरे पर तीव्र पीडा के चिन्ह प्रकट हुए और कहा जाश साहब आपने मुग बडी मुश्किल म डाल लिया है । अगर हिन्दू की तगदिलाना हुवलवननी यह मूरत हाल पना न कर देती तो आपके दिल म बतन छोडन का कभी खयाल ही पदा न हाता, लेकिन यह मामला बहुत नाजुक है । मुग साचन क लिए दो दिन का वक्त दीजिए । मैं छुद भी गौर करूंगा और मौलाना से भी राय लूंगा ।

दो दिन के बाद जब मैं पहुंचा तो मैंने उनक दिल माह लेनेवाल चहरे पर वह शगुपतगी देखी जो किसी जेहनी गिरह के मुल्का लन क वाल पदा हुआ करती है । उहाने बडे उल्लास के साथ निगाह ऊपर उठाई, एक मृदु मुस्कान होठा पर मचलने लगी और उहाने कहा जोश साहब आपके मामले का एसा अच्छा हल निवाल लिया है कि जिसे आप भी पमद करग । क्यों साहब यही बात ह न कि अपन बच्चा का आर्थिक और सांस्कृतिक भविष्य सवारने के लिए पाकिस्तान जाना चाहत हैं ? मैंने कहा 'जी हा इसने सिवा और कोई बात नहीं है । उहाने कहा तो फिर आप ऐसा कर कि अपने बच्चा को पाकिस्तानी बना दें लेकिन आप यही रहे और हर साल पूरे चार महीने पाकिस्तान म रहकर आप उद् की खिदमत कर आया करें । भारत सरकार आपको हर साल पूरी तनदवाह के साथ चार महीने की छुटटी दे दिया करेगी ।

पंडित जी की इस तजवीज पर मैं उछल पडा । मैंने कहा 'यह तजवीज मुझे दिल स मजूर है । इस तरह साप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी । पंडित जी मरी मजरी स बेहद खुश होकर मेरे गले लग गए ।

दूसरे ही दिन अखबारवाला ने मुझे घेर लिया । मैंने वह तमाम मामला जो मरे और पंडित जी के दरम्यान हुआ था, बयान कर लिया और तीसरे ही रोज मेरा इटरव्यू हिन्दुस्तान के तमाम अग्रेजी और उद् अखबारा म छप गया ।

## पाकिस्तानी शहरीयत

मैं पाकिस्तान आया तो नकवी साहब ने मेरी खुशी पर पानी फेर दिया। उन्होंने कहा कि यह क्या कर हो सकता है कि आप पाकिस्तानी वाशिंग न वनें और यहाँ जमीन का अलाटमट आपके नाम हो जाए। हम आपको बच्चे आप की निस्वन मप्यार हैं। जब आप ही हमारे न बन सकेंगे तो हमारे वास्त नामुमकिन हो जाएगा कि हम आपके वाम्ते सिनमा बनवाए या बाग लगवाए। हमके अलावा यह सूरत हाल आपको वही का भी न रहन दगी। पाकिस्तानी आपका हिन्दुस्तानी समझगे और हिन्दुस्तानी आपमें इसलिए बदगुमा हो जाएंगे कि आपका पूरा खानदान पाकिस्तानी बन चुका है और खुद आप भी चार महीने पाकिस्तान म रहेंगे। जाण साह्य दो किशितया म पाव रखकर दरिया को पार नही किया जा सकता। आपका भ्रम दोना मुन्ता से उठ जाएगा। मेरे दिल को नकवी की इस बात स बडा धक्का लगा। लेकिन चूकि बात था वावन तोले पाव रत्ती की इसलिए तक के सामन हथियार डाल गिए और मैं पाकिस्तानी बन गया।

मेरे पाकिस्तानी बनत ही एक क्यामत का गुलगुला बरपा हो गया। पूरे पाकिस्तान म और शहर कराची म तो इस कन्डर बलबला उठा, गोया क्यामत का सूर<sup>१</sup> फूक दिया गया है। तमाम छोटे-बड़े उद् अग्रेजी अखबारा के लखकर छम ठाककर मदान म आ गए। तमाम अदीब शायर और कानूनसाजो न अपन-अपने कलमा की तलवारें म्यान से निकालकर मेरे खिलाफ मजमून-बत और कानूनों की भरमार कर दी।

हर तरफ मडिया का-सा एक गुलगुला बुन्द हो गया कि दोहाइ सरकार की मुगल-आजम यानी अबूतालिब नकवी न जोश को आधा पाकिस्तान काटकर दे दिया। मुस्तलिफ टोलिया म बटे हुए लोग मेरे खिलाफ इकट्ठे हो गए। बहाधियो बरलिया देवदियो कानूनिया मुन्तिया भार शीर्इआ ने अपनी चौन्ह सौ बरस की नफरता को यकसर भुला दिया। तबरा<sup>२</sup> और मदह सहारा<sup>३</sup> के दरम्यान तरह मसालहत पढ गई और मेरे खिलाफ मुत्तहिनातीर पर ऐलान-जग फरमा दिया—

मैं चमन म क्या गया भोया दविस्ता खिल गया। ✓

१ इस्लाम के मुताबिक क्यामत के दिन सूर यानी त्रिगुल बजगा और तमाम मने कन्डा से उठ धके होंगे।

२ हजरत मन्मन् को त्रिन लोग ने दखा था उनमें हजरत अला व अतावा कआ बाकी सबरी बुराई करते हैं इन्हे तबरा कहत हैं। इमीम शयभा का भा तबरा कहा जाता है। हजरत मन्मन् को त्रिहोने देखा उनकी शारीरकरता याना मुन्ती।

भरा पाठिकात् आता म्या मारूम हुआ गाया बाद जबरन टारू बाम  
 क गजा पर टू पडा है या काम'य अर्थात् या क मरु म कू पडा है और  
 तमाम बगरी बगाले हाय अर्थात् हाय अर्थात् क नारे लय गभार भाग  
 रही है । यह तमाम शर य तमाम मरुत' य तमाम धमार और य गारा  
 गुण'या तय ह'मय क वात नर पुमी ता मर मसाय' य तथी माय' म  
 तवार ल'य पर लिया । जिम वम मी क वात देया ति मुय याग और  
 गिमा भी जमात नार तथी साय' ल' य वरा मुनाय' म पिर' म' है ता  
 मी पुा' स बाग और गिमा क ल'य वाग क' ल'य ।

उम तमान म गी'गी मुहम्म' ज'पी माय' प्रभात मरी थ । तया साह्य  
 ती उनय ग'य' हा गई । तथी न गिर'र मिडा क थ' पूा पर प्र'ान मरा  
 न टार ली थी । गिर'र मिडा त उारी म' म मू' माड लिया और  
 उारी बमि'रारी म'म क'र ली गई । उन' पनन न मरी बमर तोड दी ।  
 मी द'र का र'हा त उधर का ।

मिन माया हि'मुस्तान प'य' जाऊ मरु न द'जाऊा नही ली । मी ल'य  
 न पूछा ति या साह्य अब क्या हागा ? ल'य त क'—हि'मा त हार ।

लोणा त राय दी कि मी हु'म'त स आयात नियात का लाइम ल'र  
 व्यापार शुरू क'र दू । मुय गा'नी की समय म यह बात नही आई ति मी  
 निजारत क अहल' ल'हा । मिन लीड'ता शुरू क'र लिया । इस दौ' धूप म जि'गी  
 ज'जीरन हो गई । रोज़ गुरह का घर स नि'लता दाप'र का प'लता घोड़ी  
 ल'र आराम क'रक पिर बाहर नि'त' जाता और शाम का घापस आता था ।

भरा आलम उस गा'वा' क उ'म (पताया) का सा हो गया था जो  
 मुहरम के जमाने म उठया जाता नाल-ताशा की तरबड-तरबड झय्यम  
 झय्यम की गूज म हर मरान क च'तरे पर र'या जाता और इसी तरह दिन  
 भर क'र क'र राट'र फिर उसी तरबड तरबड और झय्यम पय्यम के साथ  
 मरान म ल'र र'य लिया जाता है । इस दौड धूप म सु'न के प'जलो करम से  
 कुछ हाय तो आया नही अ'रता डायरेक्टरा से'र'रिया और ब'जीरा के ऐसे  
 दो दो कौडी क न'धरे एस आछे ठसे और इस क'र गरशरी'ना गडडा  
 भीरपन दसे कि आ'मी का क'र न'जरा से गिर गया । यह फसला क'रना  
 पडा कि इस कौम म किसी साह्ये कलम की कोई गुजाइश नही है और हर  
 अ'ीब और शायर को चाहिए कि वह सु'नुशी करमा के । यह सच है कि बाऊ  
 औकात हि'दू हु'काम भी न'धरे लियाते है लेकिन जल्लाह हो अब'र यह  
 मुसलमान जब ह'ड वा'स्टेवल' हो जाता है तो हामान क फिरऊन बन जाता है  
 और हु'कूमत की ग'दी पर ब'ठ'र सिल'मतगारा और फरीवाला के ल'के भी  
 अपने को ब'सर क दारा समझन' लयते है । अल्लाह बोना के दर पर ल'वाला  
 को न ल' जाए । अब मरी मुसल्लल ना'मिया की फहरिस्त मुलाहिजा  
 फरमाइए—

१ जहागीर रोड का मिनमा-प्लॉट और बाग लगाने की जमीन खुद मीने वापस कर दी।

२ एक सामाद्री का सिनेमा-प्लॉट नीलाम में मेरे नाम छूटा, कीमत अग न कर सका इसलिए निकल गया।

३ वास्तुकारी के लिए हाशिमि भाहब डिपुटी कमिश्नर कराची ने पचास एक जमीन दी अन्नाफ गौहर साहब न उमे जग्न कर लिया।

४ साइकिन रिक्शावा के परमिट मिठे निरख गिर गया—परमिट हवा में उड़ गए।

५ कोर्ट स्टारेज की इजाजत मिल गई। रुपया लगानेवाला को दरखला दिया गया।

६ वाजिद अली शाह कट्टी रोड पर बस देन पर अमादा ये रुपया लगाने-वाला का रोक दिया गया।

७ वीली के पत्ता का लाइसेंस मिल रहा था। लाइसेंस बनवाले के नखरे दरखशन न कर सका। उस बुरा भला कहकर घर आ गया।

८ मिनमा व साज-मामान का दूसरे दिन परमिट मिल रहा था, बजीर को हटा लिया गया।

९ टेक्सटाइल का इजाजतनामा मिलनेवाला था—बजीर बदल गया।

१० प्रेम लगाने का इजाजतनामा लिखकर तैयार हो गया—दस्तखत करने में पहले बजीर को निकाल दिया गया।

११ मछरी की निजारात का परमिट लिख लिया था—मन्त्री का हटा दिया गया।

१२ पेट्रोल पम्प की कोशिश की, अमफल रहा।

१३ एक मकान अलाट हुआ था आज तक कच्चा न मिल सका।

१४ ग्राम विकास विभाग में नौकरी की दरदवास्त दी, मजूर नहीं हुई।

१५ अपनी कित्तवें छपवानी चाहा कोई प्रकाशक तयार नहीं हुआ।

१६ फिरीयर हॉल के एक बाने में रेस्तोरा खुलवान का पक्का वादा किया गया—अफसर का तवादला हो गया।

१७ सिधी अदवी बोर्ड में एक इल्मी काम किया उजरत नहीं मिली।

१८ पुनरावास के एक अफसर ने एक मकान की जमीन अलाग कर दी मगर चलते वक्त बहु खडे नहीं हुए। अगटमट का पुर्जा पाइकर उनके सामने फेंक दिया।

१९ पत्राव के मुख्य मंत्री ब्रजलाल साहब एक कारखान का परमिट दे रहे थे कि उमी रोज फौजी इनकलाग आ गया और उनके मन्त्रिमंडल न गम साड लिया—अगरज—

जिस जगह हमन बनाया घर सडक में आ गया।

इन मसलमल नाकामिया स में चकरा गया। मायूमी और इफ्तगस गहरा

होता पला गया। तबही मादुर जो एक हजार रुपये बौर बंद था व यद इम नरर कम था कि मरा घर चला गई मरता था। इमरिण अनन ए दाग व जरिण म खरर वर रवार नाम मरान मगा।

मी सांगा कि यह बागड की तब वच गा चली। बीबी न कहा कि सारी मने आधी करे। उमरी मने म आरर मराव रान थी। तराज छात्र व बाभरा उम वरर वर गा आरम री गया त्रिगता दूध चुग रिया जाता है। शराव की पन्ना म तत्रा पान म रिया शाम री म घाना रिया करता था। रति बरता म मगा रान आनी था। जी चरान वर रिया उठा रगा था कि शराव की रान बहू जाण। रिया की मने नागिना की मान रंगा रगनी थी और री व दाररे म रिया रान उगा नवर आ था।

गडमडार रितर पर रान आर वररर पर वररर वरना था रति नीद रीगी तरह भी नहा आनी थी और तमाम त्रिम म मुरगी होने लगती थी। घटा सुर-सुर मुराया करता था और रिया की बनी हूद दुम व मान रान रान भर तडपना रना था। मुवह जय रान वनान के वान जाइने के सामने बठना तो अपना बठनारी वर रीग हूआ तनय वाना मुह दया नही जाता था। अपनी शरर देगर रगा मानुम हाना था कि रारि थोड त्रिम के मररीन भाह रिली की जामा मरिज की मोड़िया पर बड दात निवाल निवालर भीग माग रहे हैं।

अगर रिसी रिन कुत्ते की मी मपरी आ भी जाती थी तो इरने बुरे-बुरे और टूटे टूटे रान देघता था कि बार-बार मर स आप सुल जाया करती और घडी की रिन रिक रिल पर घन चलाने लगती थी।

न जाने रितने सनसनते सील, सपाट सूने रूखे पीके डकारते डसते, फुवारते भयानक और भमोडते रवान दख डाले उस जमान म।

उही रिन मुहरावर्नी साहब को प्रधान मंत्री बना रिया गया। मैं इस फिन्न म पड गया कि लाईससा व चकर से निवलकर मैंने अकादमी आफ लेट्रज वर जा मसूदा तयार रिया है उसे मुहरावर्नी साहब की सिदमत म क्यावर पेश करे। जब मैंने अपने एर दोस्त मन्नन रान एडवोकेट से इरके मुतालिक मशबिरा रिया तो उरने कहा कि मरे एर बहूत अच्छे दोस्त महमूदुलहक उस्मानी मुहरावर्नी साहब के सानुलतास जादमी है उनसे कहूगा कि वह आपको मुहरावर्नी साहब स मिला दें। चुनाचे एक रीज मन्नन रान उस्मानी साहब को लेकर मरे घर आ गण और वात तय हो गई। दूसरे ही रिन उस्मानी साहब ने मुने मुहरावर्नी साहब स मिला रिया। उरने मेरी तजबीज की बहुत पसद रिया और बाग फरमाया कि मैं अकादमी कायम करा दूगा।

लेकिन मेरी बदरती देखिए कि दूसरे ही दिन उस्मानी और मुहरावर्नी म

एसा विगाड पना हो गया कि उनका आना जाना बन्द, और मैं ब-आसरा होकर रह गया।

इसके बाद खुन्ना का करना यह हुआ कि वगम शाइस्ता अकराम कराची जा गई और आफनाब अहमद खा प्रधान मंत्री के सचिव बल्कि दायें हाथ बन गए। शूक्ति ये लोना मुझे बहुत पढ़ने से जानत थे इसलिए उन्होंने मेरी बडी मन्द की।

वगम साहवा मुहराबर्दी की रिश्त की बहन थी। उन्होंने मरी कुछ इस तरह बना चलाकर तारीफ की कि मुहराबर्दी माहन, जा खुद भी एक अदबी आत्मी थे, मुन पर बहाने मेहरबान हो गए और मुझे इजाजत दे दी कि मैं जब भी चाहू बिला राक-टाक उनके पास आ जाया करू।

आफनाब अहमद साहब ने भी मुहराबर्दी पर मेरा सिक्का जमाना और मेरा हाथ बटाना शुरू कर दिया और मेरी तजवीज हरकत में आ गई।

इतफाक या मरी खुशकिस्मती कहिए कि उसी दौरान जुवरी साहब शिक्षा सचिव बन गए। वह निहायत पढे लिखे और अदब की कदर करने वाले थे मेरी मदद पर तुल गए। अपनी जबरदस्त सिफारिश के साथ उन्होंने मेरी तजवीज फिनास (वित्त मन्त्रालय) में भेज दी और मुझे मशविरा दिया कि मैं फिनास सत्रेन्री मुमताज हसन साहब से मिल लू।

मुमताज हसन साहब का नाम सुनकर मैं चकरा गया।

इस चकराने के दो सबब थे। एक यह कि १९४२ में दिल्ली के एक मुशायरे में शरीक होने के सिलसिले में हमारे दरम्यान एक नाखुशगवार वाक्या पेश आ चुका था। इसलिए मैं समझना था कि देश के लाभ के किसी भी काम में मेरा साथ नहीं देंगे। दूसरे मैं सुन चुका था कि मुमताज साहब उम सूध के जानी दुश्मन हैं जिन्हें यू० पी० कहते हैं। लेकिन मैं उनमें क्याकर न मिलता। शादी के गुनाह के बाद बाप और नाना बन चुका था, उन सखी पास्ता क्याकर ? इसलिए अपनी औकात पर लानत भेजता हुआ अपने माल पहुँचा। कदम दो दो मन के हो गए। ठडी अगुलिया से अपना नाम लिखकर पर्चा अन्दर भेज दिया।

चपरामी ने आकर कहा कि इस वक्त एक साहब बहा बठे हुए हैं। आप पी० ए० के कमरे में इतजार करें। दिल ने कहा और आओ पाकिस्तान। खून का पूट पिए और पी० ए० के कमरे में जाकर बठ गया। पी० ए० साहब ने तो खडे हुए न हाथ मिलाया, मुझे फिरउन की तरह देखा और काम करने लगे। दिल ने कहा मुबारक हा खा साहब ! पाकिस्तान की तरफ में यह इज्जत-अफ-जार्द। जो चाहा कि कमरे में बाहर निकल जाऊँ। फिर सोचा कि हम तो तारिक की तरह किसी जलाकर आए हैं। अब कहा जा सकत है ?

अभी मुश्किल से छ-सान मिनट इस अज्जाम में गुजरे थे कि क्या देखता हूँ खुद मुमताज हसन साहब मेरे सामने खडे माफी माग रहे हैं। इस घर

मामूली शराफत ने मेरे दिल को उनकी तरफ झुका लिया और बदगुमानी के लिए मैं अपने को दिल ही दिल में मलामत करने लगा।

अपने कमरे में ले जाकर उन्होंने मुझसे कहा कि आपसी ज़रादमी की तजवीज़ बहुत लम्बी चौड़ी है। अगर आप उसे सिर्फ लुग्न (कोश) तक सीमित कर दें तो फिनास उसकी मजूरी दे देगा। मुझे अपनी इस तजवीज़ का भिचाव पर जफ़सोस हुआ लेकिन मैं बेचारा कर ही क्या सकता था। नाचार, इसी शकल का गनीमत समझा। मैंने उनकी बात मान ली। उदू बौड बजूद मैं जा गया। मेरी कई साल की मेहनत ठिकान लगी।

बौड धन गया तो अजुमन तरक्कीए उदू के सदर मौलवी अब्दुलहक को मेम्बर बनने की दावत दी गई। वह मुझे नापसंद करते थे। इसलिए उन्होंने जवाब दिया कि अगर मुझे लुग्न का चीफ़ एडीटर न बनाया गया तो मैं मेम्बरी की दावत को ठुकरा दूंगा।

मुमताज़ हसन साहब ने अब्दुलहक साहब की इस ज़िद पर कुछ मुह बनाया लेकिन कुछ सोचकर मजूर कर लिया। अब क्या था। अब्दुलहक चीफ़ एडीटर हो गए। अजुमने-तरक्कीए उदू के दफ़तर में लुग्न का काम होने लगा। मैंने दौड़ धूप करके बौड के लिए जो इमारत किराये पर ली थी वहा घद कलकर रह गए और मैं। मुमताज़ हसन ने मुझे मुशीरे-अदब का ओहला दे दिया सबसे ज्यादा मेरी तनरवाह मुकरर की। लेकिन अब्दुलहक ने कोई सवा या डेढ़ बरस तक मुझसे कोई काम ही नहीं लिया और मैं दफ़तर में बठा तनरवाह लेता, मक्खिया भारता और यह सोचता कि जिस दफ़तर को मैंने कई साल खून पसीना एक करन के बाद कायम कराया था उसी दफ़तर में मैं तुम किस बाग की मूली हो बनाकर रख दिया गया हू। बेकारी और मुफ्त की तनरवाह दारी से तग आकर मैंने आखिर मुमताज़ साहब को लिखा कि मुझसे लुग्न-नवीसी का काम लिया जाए। जब उन्होंने मुझे इस काम पर लया लिया तो मौलवी अब्दुलहक को इस बदर ताव जा गया कि वह एगटरी और मेम्बरी दोनों से दस्तबंददारी पर जामादा हां गए।

इसके बाद बौड के सेनटरी शानुलहक हकरी का मौलवी अब्दुलहक और शौकत सज़बारी से सहन बिगाड हो गया और गमा गम खनो कित्तवत का सिलसिला छिड गया। मौलवी साहब के इतकाल के बाद लुग्न का काम बौड के दफ़तर में होने लगा और हकरी साहब और सज़बारी साहब में जाहिरी तौर पर समझौता हो गया। लेकिन दिला में नफ़रत बाका रही और इशा अल्लाह ता कयामत रहगी (इसलिए कि यू० पी० वाला और निल्ली वाला की फितरत ही यही है।)

अब हकरी साहब का दिल में मुझसे भी गिरह पडना गुरु हा गई। बर्ताव तो हमारे दरम्यान अज़ीज और बुजुग का ही रहा लेकिन चूकि हमारी साहब का दरपर्दा यह मुतालिबा रहता है कि लोग उनके स्वरूप धुवत रह और मैंने

उनके इस मुतालिबे को सुराज नहीं पहुँचाई। जब वह मुतालिबा मुसल्लम सूखा रहने लगा तो वह सोचने लगे कि मुझे किस तरह जब पहुँचा सकते हैं। आखिरकार अल्लाह न उन्हें वह मौका दे ही दिया।

शायद अगस्त १९६७ में छुट्टी लेकर मैं अपने मलीहाबाद के वाघा के फमले के लिए हिन्दुस्तान गया। इस मामले में इस कदर तूल खींचा कि मुझे वहाँ चार महीने रहना पड़ा। वाघा और मुगायर के सिलसिले में बम्बई पहुँचा तो ज० अमानी किमी अखबार के नुमाइदे का लकर इटरव्यू के लिए आए और मेरा इटरव्यू किसी अग्रेजी अखबार में छप गया। छुट्टी खत्म होने पर जब लाहौर पहुँचा तो मुझमें कहा गया कि मेरे बम्बई के निरीह इटरव्यू को नये-नय मानी पटनाकर वहाँ के अखबारों में खूब उछाला और मुझे पाकिस्तान-दुश्मन ठहरा दिया है। मुझे यह सुनकर अफमास ता ज़रूर हुआ, लेकिन ताज़्जुब निलकुल नहीं। जब हनीस और कुरआन को अपने माँचे में टालन के लिए व्याख्याया द्वारा बन्द दिया जाना है तो मेरा इटरव्यू क्या चीज़ है। लाहौर में अखबारों के सूठ का जवाब देकर जब कराची आया तो हक्की साहब ने बड़े गुम्नाखाना अगाज़ में मुझमें पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया। आखिर इस घरघरीफाना मिलमिग का बन्द कर दन के वाम्त में हक्की को लिख भेजा कि मैं जिस खानदान का सदस्य हूँ और जिस इमत्राज का आत्मी हूँ उस मिजाज का आदमी टूटता सकता है लेकिन लचक नहीं सकता। अगर आप मेरी रोज़ा पर चोट लगान की ठान चुक हैं तो—

निगाह-गम में हालत हाज़ि की और तबाह

अगर यही है दरादा तरा ता तिमिल्लाह

मेरा इस तहरीर का जवाब मैं हक्की ने लिखा कि मेरा नाकरी की मुद्दत अज और नही बढ़ेगी मैं दफ्तर में तात्तुव नोकर घर आ गया और हक्की का घर में घी का चिगाग जलन ग।

लेकिन इस खबर को हक्की साहब ने किमी अखबार में छपने नहीं दिया ताकि उनका पाग न खुलन पाए। जब हिन्दुस्तानी रेडियो ने मेरी बरतरफ़ी का एगन किया तो वहाँ के अखबारों में बनी निडाई का साथ उमकी तरदीद करत हुए उल्लाग में खूठा करार द दिया।

मेरी नाकरी का छूट अज एक मुद्दत गुज़र चुकी है जिस राज में हज़रत हज़ का फज़ल-नरम और हक्की साहब के कलमें फज़ रकम से बरतरफ़ कर दिया गया था, उस रोज़ पूरे दिन न सही बन्द घटता ज़रूर परेशानी रही थी। लेकिन मेरा बीबी की हिम्मत और मेरा मजबूत इरादा न उस बत्ती परेशानी का शाम हान-होन कुहनी की चोट की मानिद भुग दिया था।

अब जब वह सारा मामला रोने धोनेवाले रा चुक और हमनवाल् हम चुने—

एक पुगना वात्रया है खाना बीरानी मरी।



इसके साथ-साथ चूँकि मैं अपने बुजुर्गों और अपनी इज्जत को गवाह बना कर यह कसम खा चुका हूँ कि मर जाऊँगा लेकिन जब सरकारी मुलाजमत का गुनाह नहीं करूँगा यानी 'खाई सो खाई' जब खाऊँ तो राम दुहाई, इस मजिलिस में अपनी पोजीशन साफ कराने का इरादा करूँगा तो मुझे पूरा यकीन है कि मेरे इस अमल को हुकूमत की खुशामद या मुलाजमत की आरजू नहीं समझा जाएगा। इसी बिना पर मैं खुल्लम खुल्ला ऐलान कर देना चाहता हूँ कि १९६७ के आखिर में मेरे खिलाफ जो यह प्रोपगन्डा फरमाया गया था कि मैं पाकिस्तान का दुश्मन या पाकिस्तान का राष्ट्रपति का मुखतलिफ हूँ इतई तीर पर गलत और बेबुनियाद था। हैरत है कि इस मोटी सी बात को कोई नहीं समझ सकता कि मैं पाकिस्तान का दुश्मन होता तो अपनी दौलत अपनी इज्जत अपनी फरागत अपने दोस्त अपने बुजुर्गों की हड्डियाँ से मुह माडकर और अपने नाशबंददार जवाहरलाल नेहरू का दिल तोडकर यहाँ आता क्यों ?

थोड़ी देर के वास्ते अगर यह भी मान लिया जाए कि मुझे लालच खीच कर यहाँ लाया था लेकिन जब नववी और सिकंदर मिर्जा के जवाब के बाद मुझ पर जीना डूबर हो चुका था और मेरी परशानिया का हाल सुनकर जब पंडित जी ने मुझसे कहल्य भेजा था कि मैं पाकिस्तान को छोडकर हिंदुस्तान आ जाऊँ तो उस वक्त मैंने हिंदुस्तान जाने से क्या इनकार कर दिया ?

अब जबकि पाकिस्तान में मैं अपना भक्त भी बनवा चुका हूँ और यही की खाक में दफन हो जाने के लिए भी आमना हूँ तो किसके मुह में इतने दात हैं कि मुझे पाकिस्तान का दुश्मन कहकर अपनी ख्यासत और हिमाकत का ऐलान फरमा दे ।

मैं इस सियासी नफरत से भरे जमान में जब एक मुल्क दूसरे मुल्क का अपने पेट में रख लने पर तुला बटा है बल्कि मुल्क ही नहीं एक मृगा दूसरे मृगे पर छुरी ताने गडा है यह बात किससे कहूँ कि मैं तमाम मानव जाति का दोस्त हूँ और यह कहूँ भी तो यकीन कौन करेगा ? लेकिन मैं अपने सच को इस लीफ से दबा नहीं सकता कि उसे झूठ मयाल किया जाएगा। इसलिए मैं यह कह देना चाहता हूँ कि अब एक मुल्क से मेरे सीन में अबुल इसान हजरत आत्म का तिल घडक रहा है। मैं इस दुनिया के हर करीब-दूर मुल्क को अपना बतन और हर नकाब-इमान को अपना बच्चा समझता हूँ।

जब किसी के घर में जशन हाता है तो मैं समझता हूँ कि वह जशन मर ही घर में हाता है और जब किसी के घर में कोई जनाजा निशाना है तो मैं यह महसूस करता हूँ कि वह जनाजा मरे ही घर से निकल रहा है। सभी इमान एक ही किस्म के उनामर (तत्वा) से बन हैं जिनमें सिर्फ नाम और जिम्म का फरक है। हम दुनिया में गरियन का कहा का नाम ही नया है। अगर किसी में नफरत या दुश्मना बरग ता हमक सिवा और काइ मानी भा नहा हा सकत कि मैं खुद अपना हा जान में नफरत या दुश्मनी कर रहा हूँ —

ऐ दोस्त, दिल भ मर्दे-बदूरत न चाहिए  
अच्छे ता क्या बुरे से भी बहसन न चाहिए  
कहना है कौन फूल से रगवत न चाहिए  
काट मे भी मगर तुझे नफरत न चाहिए  
काट की रग म भी है लहू सजाजार का  
पाला हुआ है वह भी नसीमे-बहार का ।

## कुछ मित्र कुछ रेखाचित्र

---

जोश ने मेरे चद काबिले जिक्र अहवाब' और मरे दौर की चद अजीब हस्तिया शीपका वे अतगत कोई ५२ व्यक्तिया के बारे म लिखा ह । उन सत्रको ज्या का त्या दे देने की गुजायश नही है और उनम से बहुता का हिन्दी पाठना क लिए कोई विशेष महत्त्व भी नटी हैं । इसलिए हमने सिफ उन लोगा को चुन लिया है जिनस या तो हिन्दी पाठन परिचित है या चरित्र अथवा स्वभाव से विशिष्ट और दिलचस्प है । जो लोग विचित्र और दिलचस्प है उनम काजी खुरशीद अहमद, वस्ल विलग्रामी कजू खा और छददू खा उल्लेखनीय हैं । य लोग अपने दौर की नुमाइदा हस्तिया हैं ।

—अनुवादक

## पंडित जवाहर लाल नेहरू

वह अपनी मोहिनी सूरत के आकर्षण अपने रंग की चमक-दमक, अपनी आवाज की मुरझत, अपनी लहजे की कटाई, अपने उच्चारण के मगीन, अपनी मुमकुराहट की मधुता अपनी कुल प्रतिष्ठा, अपने हृदय की असीम विशालता, अपने स्वभाव की अद्वितीय शालीनता और अपने चरित्र की चजोड दृन्ता के एनवार स एक् ऐस इसान थे जा इस घरती पर मदिया के बान पदा होन हैं और जो यह आवाज बुलंद कर सकत हैं—

मत सहल हम सपयो फिरजा है फल्क<sup>१</sup> बरयो  
तव साक के पदों से इसान उभरत हैं ।

उनका अस्तित्व हिन्दुस्तान का गौरव, एशिया की प्रतिष्ठा और समूची मानव जाति का विश्वास है। वह शरीरधारिया की दुनिया के ऐसे सजीव ताजमहल थे जिस शाने-अवध की लालिमा और मुह-बनारस की उषा न इलाहावाद के अयपूण सगम पर छैनिया स तराशकर तामीर किया था।

इससे पहले दान्ती<sup>२</sup> अक्सरा पर उनका जिक्र कर चुका हूँ, इसलिए उनके बारे में जा बातें बयान करने में रह गई हैं सिफ वही बयान करूँगा।

एक बार यह सुनकर कि वह कुम्भ के मले में शरीक होने इलाहावाद गए थे मेरे तन-बदन में आग लग गई। मैं गुस्से में भर उनके पास गया और कहा 'दू ब्रूम'<sup>३</sup>।

उन्होंने बड़ी हैरत से पूछा क्या साहब मैंने वह कौन ऐसी अप्रत्याशित बात की है कि आप मुझमें इतने ब्रूम कह रहे हैं? मैंने कहा पंडित जी आप तो बहुत बड़ चढ़कर यह दावा किया करते थे कि दुनिया के किसी मजहब से भरा कोई ताल्लुक नहीं है और इसके बावजूद सुनता हूँ कि आप कुम्भ के मले में वहम के शांते को हवा देने की खातिर इलाहावाद तशरीफ ले गए थे? उन्होंने कहा कि अगर मैं वहाँ पुजारी की हैमियत से जाता तो आपको हवा था कि मुझ पर एनराज करत लेकिन मैं तो वहाँ पण्डित माइड (जन-स्वभाव) के अध्ययन के लिए गया था। मैंने कहा 'जी नहीं आप वहाँ गए थे अपने बेटे

१ बाममान ।

२ शकलपीयर ने अपने नाटक 'ब्रूतिपत्र माइड' में लिखा है कि सीजर ने जब यह दया कि उसका सबसे बड़ा दायनिक मित्र भी उसका हत्यारा की पक्ति में घडा है तो जमीन उसके पैरों तले से निकल गई। आश्चर्य में भरकर उसने 'दू ब्रूम' कहा और अपनी तलवार फेंक दी यह बयान करत कि जब मेरा एसा अमिल मित्र और सम्भर विचार भी मेरे विरुद्ध हो गया है तो जरूर मुझमें कोई एसा बड़ा दोष होगा जो मेरे राष्ट्र और देश को हानि पहुँचा सकता है। अपने कल हो जाने के लिए यन्त्र प्रकाश दी ।

की खातिर जनमत को प्रभावित करने के लिए।' वह जवाब देने के लिए हाठ हिला ही रहे थे कि डाक्टर काटजू आ गए। पंडित जी ने उनसे कहा, 'मिस्टर काटजू जोश साहब मुझपर ऐतराज कर रहे हैं कि मैं कुम्भ के मेले क्या गया था। काटजू ने कहा यह तो घर मेले की बात है एक दिन मुझे पूजा करते देखकर जोश साहब न मुझसे यहा तक कहा था कि काटजू साहब आप बालिंग हो जाने के बावजूद पूजा करते हैं। जब मैंने इनसे पूछा था कि पूजा करना कोई बुरी बात है? तो इन्होंने कहा था कि यह ऐसी बुरी बात है कि इस दण्ड कर कभी यह भी हो सकता है कि एक विचारशील व्यक्ति के मन पर ऐसी गहरी चोट लग जाए कि वह तुरत तडपकर मर जाए। इसपर पंडित जी ने कहकर कहा था जहा तक पूजा का ताल्लुक है मैं भी जोश साहब का हम-खयाल हूँ।' काटजू का मुह लटककर रह गया था।

देश के बटवारे के तुरत बाद सरदार पटेल ने उस वक्त के दिल्ली के मुसलमान चीफ कमिश्नर को, जो अलौगढ़ के साहबजादा आफताब अहमद खां के बेटे थे, हटाया तो नहीं था पर मौखिक आदेश द्वारा उनके तमाम अह्ल्यारात छीनकर उस वक्त के डिप्युटी कमिश्नर मिस्टर रघावा के सुपुद कर दिए थे और बड़ी धूम धाम के साथ मुसलमान फूट और कल किए जा रहे थे। उस भयानक दौर में अगर जवाहरलाल गुलवर मैदान में न आ जात और खोपना गलिया में घुस घुसकर और हिंदुआ के मुह पर धप्पड़ मार मारकर वह उस आग को न बुझा दत तो दिल्ली में एक भी मुसलमान जिंदा न रहता।

उसी जमाने की एक घटना यह भी है कि दिल्ली के मुहल्ला सूईवाला में हिंदू जब एक मस्जिद के सामने से बाज बजाते हुए गुजर रहे थे और मुसलमानों ने उन्हें मारकर भगा दिया था तो शहर के हिंदू कोनवाल ने चौराहे पर घड होकर मुसलमानों को मा-बहन की गालिया दी थी। जब मुझे इस बात की खबर प्यो गई तो मैंने एक शस्त्राम्म पर लोगो के दस्तगत लिए और उनमें जाकर कहा कि पंडित जी इस गता पर कि मुसलमानों ने कानून गिरनी की थी उनपर मुकदमा तो चलाया जा सता था और उनकी गिरफ्तारिया भी अमल में आई जा सती थी मगर कानवालों को इस बात का कोई हक शामिल नहीं था कि वे तमाम मुसलमानों का चौराहे पर घड होकर गालिया दता।

उन्होंने क्या आपसे पाम शक का मसून है? मैंने कहा मैं अभी क्या न आ रहा हूँ। आप यह शस्त्राम्म मुगलिया करें जिम पर शस्त्रा के भी दस्तगत हैं।

शस्त्राम्म पत्कर वह मुझ में बापत एक आर शस्त्राम्म जनरल पुलिस को उमी बतन पान पर शस्त्राम्म की कि कानवालों का तुम्हें मुकदमा चला उम्मी तहकीकत करा और मुझ पत्कर दो।

उन्हें उन्नीसवांन में बनी मुन्धन था। उन्होंने मुझमें एक शस्त्र कहा था

कि उन् के बारे म मेरी ज्ञाती राय और है और मेरी गवनमट की राय और है। लेकिन मैं गवनमट पर अपनी राय ग्रस्ट (थोपना) नही करना चाहता, इसलिए कि यह मामला डेमोक्रेसी के खिलाफ है।

एक रोज लखनऊ स्टेशन पर उहाने रेलवे अफमरो को बुलाकर बहुत बुरी तरह फटकारकर कहा कि आप लोग न मुझे निरा जाहिल बनाकर रख दिया है। हर तरफ हिन्दी के बोड लगे हुए हैं। कुछ पता नही चलता कि यह खाने का कमरा है या लवेटरी।

एक बार पाकिस्तान से रवसन लेकर मैं जब दिल्ली म उनसे मिला तो उहाने बडे विद्रूप के साथ मुझस कहा था जौन साहब, पाकिस्तान को इस्लाम इस्लामी कलचर और इस्लामी जवान यानी उदू की मुराभा के लिए बनाया गया था, लेकिन अभी कुछ दिन हुए मैं पाकिस्तान गया और वहा यह देखा कि मैं शेरवानी और पायजामा पहन हुए हू लेकिन वहा की गवनमट के तमाम अफमर सौ फीसदी अग्रेजी का लिबास पहने हुए हैं। मुझे अग्रेजी बोली जा रही है और हद यह है कि मुझे अग्रेजी म एड्रेस दिया जा रहा है। मुझे इम सूरते-हाल से बहद सदमा हुआ और मैं समझ गया कि उर्दू-उदू-उदू के जो नारे हिन्दुस्तान म लगाए गए थे वे सारे ऊपरी दिल से और खोखले थे। जब मैं खडा हुआ तो मैं उसका उदू म जवाब दकर सबको हैरान और परेशान कर दिया और यह बात साबित कर दी कि मुझे उनके मुकाबिले म उदू स कही ज्वाला मुहन्वन है। जोग साहब, माफ कीजिए आपन जिस उदू के लिए अपना बतन तज दिया, पाकिस्तान म उसे कोई मुह नही लगाता। और जाइए पाकिस्तान ? मैंने शम से आखें नीची कर ली। उनसे तो कुछ नही कहा, लेकिन उनकी बातें मुनकर मुझे एक घटना याद आ गई। मैंने पाकिस्तान के एक बडे शानदार मिनिस्टर साहब को जब उदू म खत लिखा और उन साहब वहादुर न अग्रेजी म जवाब भेजा ता मैंने जवाबुल-जवाब म यह लिखा था कि जनावे-वाला मैंने आपको अपनी मातरी जवान म खत लिखा था लेकिन आपन उसका जवाब अपनी पित्री (बाप की) जवान म तहरीर फरमाया है—

चू कुफ अज कावा बरखेज्जद कुजा मानद मुसलमानी।

(अगर कावा ही स कुफ उठने लग तो इस्लाम कहा जाए ?)

अब चद घटनाए उनकी अदबनवाजी उनकी ग्रैमामूली शराफत और उनकी बनजीर नाजबरगारी की भी मुन लीजिए।

जब केंद्रीय सरकार के सूचना विभाग म मरी नियुक्ति सरकारी रिमाले 'आजक' म हा गई तो मैंने उन्हें खत लिखा कि मेरे पर्वे के वास्त अपना पशाम जन्द भेज दीजिए। अगर आपने मुस्ती स काम लिया तो मेरी आपसे जपरदस्त जग हो जाएगी। एक हफ्त ब' अदर उनका पशाम आ गया। अरने प्याम के आखिर म उहाने यह भी लिखा था कि मैं जल्दी म प्याम इसलिए भेज रहा हू कि जोग साहब न मुझे घमकी दी थी कि अगर दर हो गई तो वह

मुझसे लड़ पड़ेगे। जब मैं पगाम के शुक्रिय म उट गत लिखा ता दबी जवान म यह शिवायत भी कर दी कि आपन मर गत या जवान तुम अगन हाय स लिखन क एवज सप्रेटरी स लिखनाया है। मर साथ आपरो यह बरतान नहीं करना चाहिए था।

उजरी शराफन दफिन कि मरी इग निरायत पर उहरी तुम अपन हाय स मुझे यह लिखा कि अधिन ब्यस्तता के कारण मैं मन्त्री स मन लिखाने पर मजबूर हा गया। आप मरी इम गलती या माफ करें।

एक बार मैं उनक वहा पहुंचा ता दया कि वह दरवाजे पर छड विन्दी साहब स बातें कर रह है। लकिन जस ही मैंन बरामटे म बन्म रखा और उन स आछें चार दृइ तो वह एन सेबड के अन्दर रूपोज हो गए।

मैंने विदवई साहब स वहा कि मैं तो अब यहा नहीं ठहरगा। आप पडित जी स वह दीजिएगा कि लीडरी और प्राइम मिनिस्टरी को लीडरी और प्राइम मिनिस्टरी तब महदूद रख और उस दूम कन्तर न बटाए कि वह मानार्थी वादशाही से टन्टर लन लग। विदवई साहब ने मुस्करातर पूछा कि आप किस बात पर इस कदर विगड नए है? मैंने कहा अरे आप अभी तो पुन देख चुन हैं कि मेर जात ही वह रूपोश हो गए हैं। मिजाजपुरसी तो बडी चीज ह उहाने मुझसे साहब सलामत तब नहीं की। इतने म जवाहरलाल जा गए। मैं मुह मोडकर खडा हो गया। उहाने कहा जाश साहब मामला क्या है? विदवई साहब ने सारा माजरा बयान कर दिया। वह मेरे करीब आए और मेरे कान म कहा मुझे इस कदर जोर से पेशान आ गया था कि अगर एक मिनट की भी देर होती तो पायजामे ही म निरल जाता। यह उच्च सुनकर मैंने उह गले से लगा लिया।

एक बार कुबर महदसिंह वेदी ने मुझसे कहा कि मेरे बडीर श्री सच्चर ने दिल्ली से मेरा तबादला कर दिया है। मैंने कहा यह श्री सच्चर है या मिस्टर खच्चर? वह हसने लगे, वहा क्या खूब काफिया मिजाया है। तो मैं आपसे यह कहने जाया हू कि आप और बेगम पटौदी दोनों मिलकर पडित जी के पास जाए और मेरा तबादला रकवा दें।

दूसरे ही दिन हम दाना प्रधान मंत्री की कोठी पहुंचे। अपने जाने की इतला की। बेगम पटौदी को तुरत धुला लिया गया और मैं मुह देपता रह गया। जवाहरलाल की इस अशिष्टता पर मुझे बडा ताब आया और यह सोचकर कि मैं वहा से उसी वक्त चला जाऊ कि उनस फिर कभी न मिलू मैं उठा ही था कि उनके सेक्रेटरी शायन प्यारेलाल साहब आ गए। उहाने मेरी तरफ आत उठाकर कहा क्या बात है जाश साहब? इतना पाणी बरस रहा है और आप जायजबूला बने छड है? मैंने उनस सारा माजरा बयान करवा कहा अब मैं यहा नहीं ठहरन वा। सेक्रेटरी न कहा आप सिफ दो मिनट मेरी खातिर ठहर जाए। मैं ठहर गया। वह सीधे उनके कमरे म दाखिल

हो गए। और दो मिनट के अदर-अदर मैंने यह दखा कि वह मुसकराने चले आ रहे हैं। उन्होंने कहा जोश साहब आपके तशरीफ लान की मुझे निसो न इतला नहा दी। आपन किससे इतला दन को कहा था? मैंने कहा, विमला कुमारी जी को।' उन्होंने विमला कुमारी को बुलाकर पूछा कि तुमन मुझे जाश साहब के आने की इतला क्या नहीं दी? विमला कुमारी ने कहा कि लेडीज फस्ट के खयाल स मैंने जोश साहब का नाम नहीं लिया। पंडित जी न पाटकर कहा नानसेंस और मरा हाथ पकड़कर अन्दर ले गए और कहा, 'आप भी महर्द्रसिंह का तवादल रक्वान के छाहिशमद हैं?' मैंने कहा, जी हा। उन्होंने जवाब दिया कि यह डेमात्रेट उसूल के खिलाफ है कि मैं इस मामल म दखल दू। मैंने कहा 'पंडित जी मैं जानता हू कि आपका दिमाग मेड इन इगण्ड है, लेकिन कुछ अपवाल भी जरूरी होत हैं। मैं जानता हू प्राइम मिनिस्टर से किसीक तवादल क मसूख करने का मुतालिबा एसा ही है जैसे हम किसी हाथी स कह कि मज पर से जरा मेरी दियासलाई उठा ला। लेकिन आज तो मैं हाथी से दियासलाई उठवानर दम लूंगा।' वह हसने लग और तवादल मसूख कर लिया।

एक मनवा गर्मी की छुट्टिया मनाने के लिए मैं शिमले गया हुआ था। तीन चार रोज क बाद माजूम हुआ कि पंडित जवाहर लाल भी आ गए हैं। मैंने फोन किया और चर्किस्मनी स रिसीवर उठाया उनके एम नय मंत्रेटरी ने जो लेहजे स मदरानी माजूम हो रहा था। मैंने अपना नाम बताकर कहा कि मैं पंडित जी स मिलना चाहता हू। आप उनसे टादम लेकर मुझे इतला दें। उसने बार-बार मेरा नाम पूछा। मैंने कहा जाश मलीहावादी। लेकिन उसकी समन म नहीं आया। आखिर मैंने मन्लाकर कहा 'जे आ एस एच।' उसने कहा मिस्टर जोश, आपक पर्टीकुलर? मैंने कहा जा शएम मेर पर्टीकुलर नहीं जानता उसे यह हक नहीं है कि हि दुस्तान म रहे। यह मुनकर उमने कहा "ओह ऐसा बोलगा। मैंने कहा 'इससे ज्वाग बालगा। उमने कहा आप होल्ड किए रह हम पंडित जी से पूछकर बताएगा।' दो मिनट क बाद उसने कहा 'पंडित जी एसा बोलता है कि हम यहा मजे करने आया है आप दिल्ली मे मिलो।'

मर तन-बदन म आग लग गई। मैंने बीबी स कहा कि मैं अभी उठ एमा खन लिखूंगा कि निगनी का नाच नाचने लगेंगे। बीबी न कहा कि हमारे सर की कसम अभी खत न लिखो। इस वक्त गुस्स म भर हुए हा। जान क्या-क्या लिख माराग। पानी पाकर थोड़ी देर लेट जाआ।

पानी पीकर मैं लेट तो गया मगर दिल की आग भडकती रही। जाग्र घटे से ज्वाग लट नहीं सवा। बिस्तर पर अगारे दहकन लग। मैं उठ बठा और एना खन लिखा कि अगर उस किम्म का खत किमी घाननर को लिख भेजता ता वह भी तमाम उन्न मुझे माफ न करता।

दूसरे दिन इन्डिया गांधी का फोन आया कि आज तीन बजे सह पहर को



मेरे साथ चाय पीजिए । मैंने कहा 'बन्गी बहा तुम्हारे बाप मौजूद होंगे । मैं उनसे मिलना नहीं चाहता ।' उन्होंने कहा, "मैं पिताजी का अपन कमरे में बुलाऊंगी ही नहीं ।' मैं तयार हो गया ।

शाम को जब बरामदे में पहुँचा तो एक चपरासी ने अन्दर की तरफ इशारा कर दिया । जब मैं उनके कमरे की तरफ बढ़ा तो पड़ित जान पीछे से मेरा हाथ पकड़कर कहा आइए मेरे कमरे में । मैं ठिठककर खड़ा हो गया उन्होंने मेरा हाथ छोड़ा और मुहब्बत के दरवाजे में आकर मैं उनके साथ हा गया ।

उनके कमरे में पहुँचा तो देखा मेरे बुजुर्गों के मिलनवाले सर महाराज सिंह बठे हुए हैं । पड़ित जी ने कहा महाराज यह वही जोश साहब है जिन्होंने मुझे ऐसा गम रात लिखा कि शिमल की ठंडक में भी पसीना आ गया । महाराज सिंह ने कहा 'गनीमत समझिए कि यही तक नीवत आई । इनके बुजुर्गों से आप बाकिफ नहीं । वे जिस पर गम हो जाते हैं उस ठंडा कर दिया करते हैं । पड़ित जी हसने लगे । घण्टी बजाई उस मदरासी सक्करी को बुलाया और उस ही उसने कमरे में आकर कहा वह उसपर बरस पड़े कि तुमने मुझसे पूछे बिना जाश साहब को ऐसा बेहूता जवाब क्यों दिया । मैं अभी तुम्हारा टास्कर किए दे रहा हूँ । कल से तुम मिनिस्टरी आफ कामस में चल जाओ ।

उनका यह बतव देतकर मैं पानी-पानी हो गया और उनकी बेमिसाल रवादारी और शराफत पर निगाह करके मैं उन्हें गले लगाकर रोने लगा ।

अब एक आखिरी घटना और सुन लीजिए ।

उनके इतकाल से चंद महीने पहले मैं हिन्दुस्तान गया और उनसे दरखवास्त की कि आप किसी दिन मेरी जाए-क्याम (निवास स्थान) पर आकर मेरे साथ खाना खाए । हरबंद मैं उनका दिल तोड़कर पाकिस्तान आ गया था, लेकिन इसके बावजूद वह आए खाना खाया और दो घण्टे से ज्यादा बठे रहे । इस बात में उनकी आवाज की कमजोरी और मुसकराहट के फीरेपन से यह अदाजा करके मेरा दिल बठने लगा कि अब वह अपनी जिंदगी के दिन पूरे कर चुके हैं । चुनाचे वही हुआ । मेरे पाकिस्तान वापस आने के दो-तीन महीने बाद वह आसमाने शराफत का आफताब डूब गया और हिन्दुस्तान ही में नहीं सारे एशिया में अधेरा छा गया ।

## सरोजनी नायडू

लहजे म अरगनू वाता म अपम् मदाने-जग म झासी की रानी गोकुल-वन की गाया मधुर वीन बुलबुले हिन्दुस्तान । अगर यह दौर मर्दों म जवाहर लाल और औरता म सरोजनी की सी हस्तिया पदा न करता तो पूरा हिन्दुस्तान नावीना (अधा) हाकर रह जाता ।

मैंने उह सबसे पहले १९२६ के लगभग हैदराबाद दक्कन म देखा था और उनकी शस्त्रीयत की मकनतीसीयत (चुम्बकपन) ने मुझे हमशा के लिए मोह लिया था ।

उनके गले म रगें नही सारंगी के खनकत हुए तार थे । उनके लहजे मे इम कयामत का उतार चढाव था कि उनके सामने रागिनिया पानी भरती थीं और उनके दिला दिमाग के भवन म शायरी की वह सगीतमय लहर उठती थी कि उनके सामने चादनी राता म समुद्र का राग शमिदा होकर रह जाता था ।

हरचद उदू उनकी मादरी जबान नही थी लेकिन हैदराबाद की उदू आवा-हवा ने उन्हें उर्दू और फारसी क मजाक म इस तरह ढाल दिया था कि फकत यही नही कि वह बड़ी खानी के साथ उर्दू बोलती बल्कि बड़ी आमानी क साथ उदू शायरी का समझ लती और अलफाज पकडकर इस तरह दाद देती थी कि उह सं र सुनाकर जी खुश हो जाता था । आज तक याद है मुझे वह रात जब मैंने उन्हें अपनी नरम अगीठी सुनाई थी और वह हिचकिया ल लेकर रोने लगी थी ।

उन्हाने मेरी उस नरम और उसके साथ ही मरी और भी तीस चालीम नरमा का अप्रेञ्ची म बहुत अच्छा अनुवाद किया था । अफसोस कि इम यादगार सरमाये का मेरी लापरवाही ने गुम कर लिया ।

उनकी यू० पी० की गवर्नरी के जमाने म एक बार मैं लखनऊ गया और सुबह के बक्त गवर्नरमट हाउस म फोन किया कि मैं मिसेज नायडू से बात करना चाहता हू । उनके सेक्रेटरी ने मुयम कहा कि आप उनके नाम पंगाम दे दें । मैं पट्टुचा दूंगा । वह खुन वान नही कर सकती । मैं जवाब दिया कि मेरे उनके दरम्यान यह रस्म नही है । मैं रिमीवर उठाए हुए हू आप उनसे जाकर यह कह दें कि वह मुगस वान कर लें । सेक्रेटरी ने कहा, आप अपना पान नम्बर दे दें, मैं षोडी देर म आप को रिग बरूंगा ।

दस मिनट के बाद घटी बजी और सरोजनी का आवाज न मरे वान म रम घोल दिया । उन्होंने पूछा आप कब आए ? मैं जवाब दिया 'अभी आया और सबसे पहले आपसे फोन कर रहा हू । उन्होंने कहा सयम पहल मुने

मिलने जाए यहा आ जाइए । मैं बाथ रूम जा रही हू । अगर जाए मर बाथ-रूम से निकलने से पहले यहा आ जाए तो दो चार मिनट इंतजार करें । एसा न हो कि मुह फ्लावर चले जाए ।'

यह था सरोजनी का इखलाक । जब उन शराफता को खुदबीन लगा लगाकर ढूढ़ता फिरता हू, लेकिन कहीं पता नहीं चला । हाय, विघ्न चल गए व लोग !

जिंदगी के जाखिरी दौर में वह बार बार बीमार पडने लगी और मैं बार बार पूछता था कि इस बार-बार बीमार पडने की वजह क्या है । वह हर बार मुएनल्लिफ सबब बताकर टाल दिया करती थी । लेकिन एक बार जब मैंने जोर देकर बार बार बीमार पडने की वजह पूछी तो वह उदास होकर कहन लगी

जोश साहब जाए नहीं मानते तो मुझे यह कहना पड रहा है कि इमरा सबब है मेरा बुढापा । औरत के मुह से बुढापे का एतराफ सुनकर मेरा दिल गमगीन हो गया । उहाने मेरी उतासी को भापकर कहा आप गमगीन न हा । मेरे बाल तो सफेद हो रहे हैं मगर आप यकीन रख, मेरा दिन अभी तन स्याह है और जब तक दिन स्याह है जवानी बाकी है ।'

## फिराक गोरखपुरी

अपने फिराक को मैं करता (दशका) स जानता और उनकी खटलाकी (मजन शक्ति) का लोहा मानता हूँ। वह डल्म और अदब के ममलो पर जवान खालत है तो लपज और मानी के लाया मोती रोलते हैं और इस अफरात (अधिकता) स कि मुनननाला को अपनी कम दल्मी का एहसास होने लगता है।

वह बला के हुस्नपरस्त और क्यामत के शाहिन्बाज<sup>१</sup> हैं और यही वह खाम खूबी है जो दुनिया के तमाम बड़े फनकारा में पाई जाती है। तथाकथित धम उपस्थाना पर आवाजें कसने हैं और उन कम-तोफीका पर हसते हैं। लेकिन उनकी राता से होशियार। पीने से पहले वह यारे गमगुसार होते हैं और पीने के बाद दुश्मने-खूटवार बन जाते हैं। और बड़े आश्चर्य मिथित दुख के साथ कहना पडता है कि उनका अपनी जीवन-सगिनी के साथ जो बर्ताव है वह मानवता के सीने का एक भयकर घाव है और उनके आनक से तग थाकर उनका बना खुदकुशी कर चुका है।

वह एक दोहरी शम्सीयत के इसान हैं। कभी मसीहाए-दौरा<sup>२</sup> और कभी मूसाए<sup>३</sup>-उज्जा। कभी महकते गुलजार कभी उपी तलवार। जब मैं दिल्ली में रहता था तो एक बार वह मुझसे भी बुरी तरह उलझ पडे थे। उस वक्त अगर मैं अपनी पठनीली का गला न घाट देता तो बडा खूना-खराबा हो जाता। उस रात की सुबह को मैंने उनपर एक नरम कही थी, जिसका सिफ एक गेर याद है—

न अताकर मगर मुझे मावूद  
भूल कर भी शबे-बसाले फिराक

(ऐ खुटा मुझे भूलकर भी फिराक के सग वितानेवाली रात अता न कर।)

पीकर लड पडना और महफिल को दरहम-बरहम<sup>४</sup> कर देना अब उनकी जक बन चुका है। इसलिए उहे बुरा न कहिए, उनपर तरस खाइए और उनकी राता से दामन बचाइए।

एक बार कश्मीर के हाउस-बोट में वह और सागर मेरे साथ ठहरे हुए थे। फिजा निहायत खुशगवार और झील की मौजें नग्मा-वार<sup>५</sup> थी। दौर चलने लगा और दा जाम खाली करके उन्होंने सागर की तरफ इशारा करके मुझसे पूछा, यह सामने कौन बठा हुआ है? मेरा माया टनक गया। मैंने कहा देखो फिराक हमको अपनी गजक न बनाना। वह चुप हो गए। लेकिन चेहरे की

१ महवूद का शौकीन यान आशिक मिजाज

२ अपन बग के मसीहा ३ पीड़ियों का ईसा ४ अस्त-व्यस्त ५ सगीनमय

असीम यत्ना से पता चलने लगा कि रंग पर आने के लिए उनका नशा एशिया रगट रहा है। और अब उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने कहा, 'जोश, तुम बनाओ-न बताओ, मैं देख रहा हूँ कि मेरे सामने सागर बठा हुआ है। मैंने कहा, फिर तुमसे क्या गरज? उन्होंने अपनी गोल आंखों का घुमाकर कहा, "इम लॉड सगरवा का भी खुदा की शान यह दावा है कि मैं शायर हूँ। हालांकि खुदा की बरसम मेरा बटलर इससे अच्छे गे र कहता है।' अब क्या था उनकी आरजू पूरी हो गई। सागर यह सुनत ही जामे से बाहर हो गए और उन दोनों में गुत्थमगुत्था हो गई।

एक बार अली सरदार जाफरी किसी मुशायरे में शरीक होकर इलाहाबाद गए और उनके वहाँ ठहरे। उन्होंने जो खोलकर सरदार की धातिर की धन खिलाया पिलाया। जब मोटर में बसकर दोनों मुशायरे की तरफ खाना हुए तो मुशायरे के फाटक पर खड़े होकर फिराक का जो चाहा कि घोड़ी सी गजक कर लें। यह खयाल आत ही मुशायरे के प्रबंधक से उन्होंने कहा सुन लीजिए जनाब या तो फिराक मुशायरे में शरीक होगा या सरदारवा। प्रबंधक ने लाख लाख समझाया और जली सरदार ने कहा फिराक साहब मैं तो आपका मेहमान हूँ। लेकिन वह नहीं माने। फाटक पर तमाशावा के बट लग गए और वह जली सरदारवा को बुरा भला कहत हुए अपने घर को चले गए। सुबह के वक्त रात के उसी सरदारवा के गले में बाह डालकर मुसकराने लगे।

लेकिन जबके जब मैं दिल्ली गया तो उनके मिजाज की तब्दीली देखकर दंग रह गया। वह दिल्ली में किसी मुशायरे में शरकत के लिए आए और अपने शायर गग के वहाँ ठहरे हुए थे। मैं पहुँचा तो दौड़कर उन्होंने गले लगा लिया। हरबद वह रात के बारह बजे तक बड़े मेरे साथ पीत रहे, लेकिन आखिर तक वह कतई बिगड़े नहीं बल्कि लड़ाई का गोशा निकालने के एकज उन्होंने इतने लतीफ सुनाए कि हसत हसते पेट में बल पड गए। एक स्तीफा आप भी सुन लीजिए।

उन्होंने कहा कि परसों हम सबका एक दास्त न, जा वास्तुवला के जाता हैं, बहुत तडके अपने घर बुलाया और कहा कि वह दिल्ली की एक-एक तारीखी इट से हम आगाह कर देंगे। चूँकि यह जाडे का मौसम है, इसलिए हमने खयाल किया कि उन्होंने सुबह के वक्त बुलाया है इसलिए नाश्ते का इतजाम उहीके घर पर होगा। चुनावे हम लोग तीन मोटरो में बठकर उनके वहाँ पहुँच गए। जब यह देखा कि वहाँ नाश्त का कोई इतजाम नहीं है और वह कुतुब पहुँचने की जल्दी कर रहे हैं तो हम यह सोचकर मुतमईन हो गए कि वहाँ पहुँचकर नाश्ता कराएंगे। लेकिन जब वहाँ भी नाश्त का कोई बंदोबस्त नहीं दखा तो हम परेशान हो गए। वह हम एक जगह से दूसरी और दूसरी से तीसरी जगह लिए फिरते रहे, यहाँ तक कि दापहर के खान का वक्त भी गुजरने लगा और

भूख से हम सबका बुरा हाल हो गया। उस वक्त मुझे शरारत सूझी। इशारे से मजद्वान को एक गोरे में ले जाकर मैंने कहा जनावे-बाला अब तो यही मुनामिब मानूम होता है कि आप भेरे कर दें। उन्होंने बड़ी हैरत से मुझे देखा और कहा, 'फिराक साहब आप ऐसे सजीदा आदमी हाकर मुझसे ऐसी फोहश बात की फरमाइश कर रहे हैं।' मैंने बड़ी सजीदगी से कहा 'जनाव, भूख इस कदर लगी है कि मैं सोचने लगा हू कि आखिरकार कुछ तो पेट में जाए।'

मैंने कहकहा मारकर कहा अरे मर गए। इस कुछ तो पेट में जाए की बलागत का कुछ ठिकाना नहीं। और सब लोग पेट पकड़कर हसने लगे।

लगे हाथा एक वाक्या और भी सुन लीजिए। हम लोग अहमदाबाद-बम्बई के किसी मुशायरे की शरकत के वास्ते गए। एक बालाखान के बहुत बड़े खुले और शानदार हाल में फश पर बठे शगल कर रहे थे कि एक अजनबी नौजवान ने आकर कहा कि मैं हजरत फिराक गोरखपुरी से मिलने आया हू। वस्ल ने कहा, 'यह हैं फिराक साहब।' उस नौजवान ने लपककर फिराक के हाथ चूम लिए और घुटना के बल बठे अदब से बठ गया। फिराक ने कहा "आपका नाम?" उसने नाम बतान के बाद दोनो हाथ जाडकर कहा 'मैं आपको बल का एक वाक्या सुनान आया हू। इजाजत हो तो अज करू। फिराक ने कहा 'जरूर कहिए। उस नौजवान ने कहा कि परसा मैं बाजार से गुजर रहा था। देखा कि बरात का एक बहुत बड़ा जुनुस चौराहे पर रका हुआ दम-बखुद खडा हुआ है। मैंने पूछा—यह माजरा क्या है? एक साहब ने बताया कि डूल्हा जिस हाथी पर सवार है वह जमीन पकड़कर खडा हो गया है। लाख-लाख आबुस मारे जा रहे हैं मगर वह अपनी जगह से हरकत नहीं कर रहा है। और चूकि डूल्हा की सवारी का रास्ते में रक जाना अपशकुन समझा जाता है, इसलिए डूल्हा के बाप के हवास उठे हुए ह। जमी वह आदमी मुझसे यह कह ही रहा था कि मैंने देखा एक पदरह-सोलह बरस का लडका दौडा हुआ आया और उमने डूल्हा के बाप से कहा—मैं हाथी को अगर अभी-अभी चला दू तो क्या आप मुझे पचास रुपये दे देंगे? डूल्हा के बाप ने कहा—अरे पचास नहा सी रुपये दूंगा। यह सुनकर उस लडके ने उचककर हाथी के बान में एक बात ऐसी कही कि वह बसाकना दुम दबाकर भागने लगा। फिराकने पूछा 'उस लडके ने क्या कहा था?' उस नौजवान ने निहायत सजीदगी से कहा कि उस लडके ने हाथी के बान में कहा था अबे साले तर पीछे फिराक आकर खडे हो गए हैं। हम सबने जोरदार कहकहा से हाल की महराब गुजने लगी। वह नौजवान तुरत भाग खटा हुआ और फिराक की आखा के दाना डेरे पहिया की मानद घूमने लगे।

आखिर में निहायत अफमोम के माय में यह बहगा कि हिन्दुस्तान ने अभी तक फिराक की महानता को पहचाना नहीं है। भारत सरकार को चाहिए कि

यह उह सार आया पर जगह द और उह हर तरह सतुष्ट बरके अपन दामन को फूटा स भर और नमकहरामी क दाग स अपनी पशानी का बचा ले ।

जा शम्स यह तस्लीम नही करता रि फिराक का महान व्यक्तित्व हि दुम्मान के माग का गीरा, उदू जवान की आरफ और शायरी की माग का सिद्धर है यह खुश की बराम निरा घामड है ।

जिन्नावाद फिराक ! —गाइन्नावाद फिराक !

## मजाज

अफसास कि मैं यह लिखन को जिंदा हूँ कि मजाज मर गया।

यह कोई मुझसे पूछे कि मजाज क्या था और क्या हो सकता था। मरत वक्त तक उसका फकत एक चौथाई दिमाग खुलन पाया था और उसका यह सारा काम उस एक चौथाई खुलावट का करिश्मा है। अगर वह अपन बुनाप की तरफ आता तो अपन जमान का सबसे बड़ा शायर हाता।

मगर अफसास कि पीना उस खा गया।

मैंने मजाज को मुखातिब करके एक 'पदनामा' (सीख) कहा था। वह मेरी नरम मुजकर राया था कि आपको मुयस किस बदर मुहबत है। मगर उसपर अमल नहीं कर सका। अमल करता भी तो कस ?

बारहा कह चुका हूँ कि या तो दुनिया क हर काम म एतिला बरतना बेहद मुशकल है लेकिन शराब म एतिला का कायम रखना तकरीबन मुहाल है।

मजाज एतिला बरत न सका और जवानी म यह कहता गुजर गया—

हम मैकदे की राह स हाकर गुजर गए।

बरना सफर हयात का बेहतर तबीऊ था।

एक रोज किसी अल्लाह क बद न मजाज को समयाया कि देखो जोश साहब की तरह शराब की एक निश्चित मात्रा को घडी सामने रखकर एक निश्चित समय म पिया करो तो उमने जवाब दिया था कि जोश साहब ता घडी सामने रखकर पीते हैं मेरा बस चल ता मैं घडा सामन रखकर पिया करू। मैं उस बार-बार समझाया करता कि तुमन इल्म से रिश्ता तोड लिया है यहा तक कि अबबार तक नहीं देखत हा, अपन इल्म और अध्ययन का बडाओ। लेकिन वह नहीं माना।

यह बम्बई का जिक्र है मैं समुद्र के सामने क एक होटल म ठहरा हुआ था, मजाज और सागर भी मेरे हम-न्याला थे। आसमान पर लाजिमा थी, जमीन पर समुद्र, भेज पर शीशा व सागर और हवा कमबख्त ऐसी मुलाइम चल रही थी कि नाचन लगे। जब हमारा नशा खूब गठ गया ता मजाज ने उठकर सागर क गले म बाह डाल दी। सागर भी उमम लिपट गए। मजाज न कहा

मेरा सगरवा अरे सगरवा। सागर भी उनसे टिपटकर मेरा मजजवा मेरा मजजवा कहन लग। अभी यह सिलमिला चल ही रहा था कि मजाज न सागर का चट म बोसा ले लिया और मटक मटककर कहने लगा 'मगर एक बात है मगर एक बात है मगर एक बात है। सागर न कहा क्या बात है? मजाज न कहा मगर यह बात है, प्यारे कि तू शायर बिल्कुल



नहीं है।" हसन हुए सागर न रोना गुत्तर कर दिया। मजाज फिर उनके गले लग गए। प्यारे म तुम्हें अपनी जान में क्या अजीब रखता हूँ। तरा कोई जवाब नहीं।" सागर न रोना बंद कर लिया।

मजाज न कहा 'तुमसे इस कदर मुहब्बत के बाद भी खुदा की कसम मैं तुम्हें शायर तस्लीम कर ही नहीं सकता। मगर एक बात है मगर एक बात है। सागर फिर रोने लग।

जब मैंने देखा कि बार-बार मजाज सागर को गले लगाकर 'मगर एक बात है स रला रहा है तो मैंने कहा मजाज छलम कर इस तकरार को 'बठ जा खामोश सोके पर' और मजाज जब बठ गया तो सागर ने विसूकर कहा "यह मजाज भी अजीब आदमी है मुझसे मुहब्बत भी करता है और मरा दिल भी तोड़ता है। यह सुनते ही मजाज फिर खडा होकर सागर की बलाए ले-लेकर कहने लगा प्यारे मुझे माफ करा। मैं तुमसे बेहद मुहब्बत करता हूँ। खुदा के लिए हसने लगे नहीं तो मरा दिल पाश-पाश हो जाएगा।' सागर हसने और थिरकने लग। और ऐन उसी आलम में मजाज न कहा 'मगर एक बात है। सागर ने फिर रोना गुत्तर कर दिया।

हाथ रे उन राता को कहा स डूडकर लाऊ।

एक दिन वह भरे पास आया और आते ही तख्त पर गिरकर हसने और लाटने लगा। मैंने पूछा तो उसने बताया कि अभी एक नया तमाशा देखकर आ रहा हूँ। मैं खा साहब के यहां बठा था कि उनके नौकर ने आकर कहा 'वावरची ने यह कहला भेजा है कि हमारी तनख्वाह बला दीजिए। वरना हम नौकरी छोड़ देंगे। खा साहब ने विगडकर कहा बुला लाओ वावरची के बच्चे को।

वावरची आया तो उठाने डपटकर पूछा 'क्या कहलवा भेजा था तुने मुझ से?' उसने कहा मैंने कहलवा भेजा था कि हमारी तनख्वाह बठा द वरना'

खान साहब न उसकी जावान स वरना सुनते ही डडा तान लिया और कहा हा कहो वरना के बाद क्या करोगे?' वावरची न सर झुकाकर जवाब दिया, वरना इसी तनख्वाह पर काम करत रहेंगे।'

मैंने एक दिन पूछा मजाज तुम्हारे मा-बाप तो नमाज रोजे व पाबद पक्के मुसलमान हैं, फिर वे तुम्हारी शराबनोशी को कस बरदाश्त करते हागे? उसन व माप्ला कहा जाश साहब वाज मा-बाप इतन खुशकिस्मत होने हैं कि उनका ओलाह निहायत सआतमद (आतमारी) होती है और मैं एक एमा खुशकिस्मत बटा हूँ जिसके मा-बाप वहन सआतमद वाक्या हुए हैं।' मैं उसके इस जवाब से फडक गया।

एक बार तिल्ली में वह मुझसे बहुत नाखुश हो गया था। वह ताजा-ताजा तिमानी हस्पताल स बजाहिर तदुस्त हासर आया था। मुझे क्या मालूम था कि हरचत वह अच्छा हा चुरा है लकिन मरज अभी दूर नहा हुआ है।

एक राज उसन तिल्ली व चाफ कमिश्नर का फान किया कि मुझे सौ रुपय

भेज दीजिए । मैं इसपर बहुत फटकारा कि तूने अपनी और पूरी शायर कौम की इज्जत खाक में मिलाकर रख दी है । उसने मेरे मुँह पर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन यह गे र लिखकर मेरे पास भेज दिया—

जो गुजरती है कलब शायर पर  
शायरे इनकलाब क्या जानें ।

हैफ दुनिया के कारखान पर यहा जो रातें पल भर के लिए हसानी हैं व भरते दम तक म्लती हैं—

तार जा रिश्ताए-सोजा है, यह मालूम न था  
मौत की लरजिसे मिजगा है यह मालूम न था ।  
मोहलन मुस्तसरे-माहबत-याराय शबाब  
मुस्तकल मात्तमे-यारा है यह मालूम न था ।

## सरदार दीवानसिंह मफतू

जब वह रियासत निालत थ, हिंड मजस्ती क विला और हिंड हार्द नंगा क महंग म जलजल डालत थ । राज नवाजा की नाईं ह्यम कर दी थी उनरी कयम न । बड-बड शागर बापन थ उनर नाम न ।

दिल्ली की बात है । एग दिन शाम क वक्त एग रियासत क प्रधान मंत्री मर पाग बटे हुए थ कि दावानसिंह आ गए । उह दणत ही प्रधान मंत्री साहब का रर पर हा गया । जब मैंने गिनास भरख उनके सामन रखा ता उन्हाने दीवानसिंह की आर इशारा दिया कि उनर सामन मैं नहीं पिऊगा । दीवानसिंह न उह इशारा करत देखतर मुगस बहा, जोग साहन प्राइम मिनिस्टर साहब से कह दीजिए शौक स पिए मैं उनके खिलाफ एक् लपत्र भी नहीं लिखूगा । यह राजा नहीं हैं मैं तो राजाआ पर हमला करता हू जिसके यह मान हैं कि मैं इसान का नहीं सुअर का शिकार मेलता हू ।

उनकी मुलतान शिवारी की घटनाआ स तो हिंदुस्तान अब तक गूज रहा है । अब उनकी उदारता की भी एक घटना सुन लीजिए जा जाके एक दोस्त ने मुझे सुनाई थी । उहान मुझसे बयान किया था कि किसी राजा के बारे म एसी दस्तावेज उनके हाथ लग गई थी, जिसम उसके हुरामी होने का सबूत मौजूद था । उस दस्तावेज के जोर पर वह उस राजा से साठ सत्तर हजार रुपया हासिल करके घर आए । नोटा के बडल बडी बपरवाही के साथ मेज की दरवाजा म ठूसकर वह मुझसे बातें कर रहे थे कि उनके एक शिकस्ताहाल मित्र आ गए और खडे-खडे कहा कि सरदार साहब मैं आपसे हमशा के लिए रुखसत होने जाया हू । मुझस गल मिल लीजिए । वह खडे होकर उनस गल मिले और उह जबरदस्ती बिठाकर कहा 'मीर साहब यह हमेशा के लिए रुखसत होने के क्या मानी हैं ? मीर साहब ने कहा 'मेरे पास वक्त बहुत कम है । वस इतना कहूंगा कि करबलाए मुअल्ला जा रहा हू और अब जीते-जी वापस नहीं आऊंगा । अच्छा खुश हाफिज । यह कहकर मीर साहब उठ खड हुए । लेकिन जस ही वह जीने की ओर बले दीवानसिंह ने बढकर उह रोक लिया और कहा 'जब तक आप इसकी बजह नहीं बताएगे भगवान की कसम मैं आपरो जान नहीं दूंगा । मीर साहब की आवा म आम् आ गए और कहा 'सरदार साहब यह न पूछिए और मुझे जाने दीजिए । दीवानसिंह उह खीबकर कमरे म ले जाए और कहा 'जब तक आप इसकी बजह नहीं बताएगे मैं कसम खा चुका हू कि आपरो जान नहा दूंगा । मीर साहब न कहा 'सरदार साहब मुझ पर इतना कज हो गया है कि उसका जप करना मेरे वास्त अब नामुमकिन है । इसलिए जा रहा हू कि करबलाए मुअल्ला म बिदगी के बाकी दिन गुजार

दूगा। अच्छा अब जाने दीजिए, वक्त कम है।" मीर साहब फिर उठ खड़े हुए। दीवानसिंह ने उनका दामन पकड़कर पूछा 'आप पर किस बलर कब्जा है?' मीर साहब ने कहा, 'पद्रह हजार रुपये।'

दीवानसिंह ने कहा, 'वस? सिर्फ एक मिनट।'" और उन्होंने गिनकर बीस हजार के नोट मीर साहब की जेब में जबरदस्ती ठूस दिए। मीर साहब की आवा से आसू बरसने लगे और दीवानसिंह ने हाथ जोड़कर उनके सामने सर झुका लिया। है कोई इस दौर में दोस्त क या काम आनेवाला? क्या आज कोई अरबपति भी इस उदारता का साहस कर सकता है?

'रियासत' के दौर में उन्होंने देहल कमाया। लेकिन अपने पास कभी कुछ नहीं रखा। ख़ाया पिया और खिलाया पिलाया।

इसलिए उन पर मुफ़लिसी और फ़ाकामस्ती के दौरे पड़ा करते थे। लेकिन अगर मुफ़लिसी में कोई दोस्त या मेहमान आ जाता था तो वह चुपके चुपके अपने घर की चीज़ें बचकर उसकी दावत किया करते थे। और जब कोई उनकी मुफ़लिसी भापकर उन्हें दावत से मना करता था तो वह लड पड़ते थे।

मजाज़ ने एक दिन मुझसे कहा कि कल तो सरदार साहब ने कमाल ही कर लिया। मैं शाम को उनके वहा पहुँचा। उन्होंने मुलाज़िम से कहा कि बारह दजन सोड़े की बोटलें ले आ। मुहल्ले में उनका प्रडा रीब था। थोड़ी देर में बोटलें आ गई। एक दजन बोटलें रखकर उन्होंने नौकर को हुकम दिया कि बाकी बोटला का साड़ा गिराकर खाली बातलें फला दुकान पर बच आए। (उन दिना गोलीवाली सोड़े की खाली बोटल बारह आने में बिकती थी)। और उनसे जो रुपया हाथ आए उसकी एक ह्विस्की की बोटल और कुछ खाने का सामान ले आए। यह थी उनकी मेहमानवाजी की शान।

शायद यह १९३७ की बात है जब मैं दिल्ली से क्लीम निकाल रहा था और रोज़गार और इश्क़ दोना के हाथा बुरी तरह परेशान था, और इसपर तुरा यह कि मेरी बटी की शादी सर पर आ चुकी थी कि वह एक रोज़ शाम क वक्त मेरे घर आए। ब्राजी की बोटल अपन साथ लाए। (वह ह्विस्की पर घाड़ी को तरजीह देते थे।)

जब दौर ख़त्म हो गया तो उन्होंने मुझसे कहा 'मैं भाभी से एक वान कहना चाहता हूँ। मैं सखाबत से कहा, "सरदार साहब का ऊपर ले जाओ। मेरी बीबी उस वक्त तक पदों की पाबंद थी, लेकिन उनसे काना पत्नी करती थी। जब वह मेरी बीबी से वानें करके नीचे आए और दो मिनट क अदर रखसत हा गए तब मैं ऊपर गया, तो बीबी ने मुझसे कहा 'सरदार साहब नोटा का यह बडल दे गए हैं। वह कहते थे कि उन्होंने यह रकम अपन दोस्त नवाब बहाउलपुर से खत लिखकर भगवाइ है। देखी आपने दीवानसिंह की शराफ़त और दास्ती।

एक उमान में जब वह रफी अहमद किदवाई के खिलाफ बहुत सख्त मजबून लिख रहे थे, उम वक्त उनकी भाली हालत बहुत खराब थी। मैं उनके

इपलास का अनाजा करने सीधा त्रिन्वर्द्ध साहब के पास गया और उनसे कहा कि त्रिन्वर्द्ध साहब आप मिनिस्टर नहीं इस जमाने का हातिम हैं। आपकी ग्लोस नवाजी का डरो पिट हुए हैं। एरिन दोस्तनवाजी कोई बड़ा गुण नहीं। हंगकू नीरो, चमरा और मजीन भी अपने दाम्ना का नवाजा थे। अलतता दुश्मन नवाजी एक ऐसा गुण है जो इसान को पगम्बरी की सतह पर ल जाता है। क्या आप हलाकू की सतह पर रहना पसन्द करेंगे या पगम्बरी की सतह तक पहुँचना चाहें? उन्होंने मुसकराकर कहा 'पटलिया-सी क्या बुझा रहे हैं आप जो मुझा हाँ उस सुनकर कहिए।' मैंने कहा दीवानसिंह आजकल सभ्य परेशान हैं।

उन्होंने यह सुनते ही घटी बजाई। सेन्टरी आया। उसका नाम मैंने उहाने कुछ कहा। वह चला गया और पाँच मिनट के बाद चेर लाया। दस्तमत्त करके त्रिन्वर्द्ध साहब ने कहा यह चेर जाकर दीवानसिंह को दे आइए। वह दस हजार का चेर लेकर मैंने उनका पास गया। उन्होंने कहा 'चलिए अभी कश करा लें। चेर कश हो गया तो वह यह आग्रह करने लगे कि आधी रकम आप ले लें। जब मैंने इकार किया तो वह लडन पर अमादा हो गए। और मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

मैंने कह चुका है कि वह बलतीन दुश्मन भी हैं। इसका भी एक वाक्या सुन लीजिए। मैं पाकिस्तान से दिल्ली गया और उनके वहाँ ठहरा हुआ था। एक सुबह को जब मैं बाहर जाने लगा तो उन्होंने पूछा 'आप कहा जा रहे हैं?' मैंने जवाब दिया, 'सागर में मिलने के लिए।'

सागर का नाम सुनते ही वह उछल पड़े। दौड़कर मेरा हाथ पकड़ लिया। कहने लगें 'मैं आपको एक एस एहसानफरोश के पास जान की इजाजत हरगिज नहीं दूंगा जिस आपने पडित जी से कहकर रेडियो पर नौकर रखवाया था और उसका बदला उसने यह दिया कि जबसे आप पाकिस्तान चले गए हैं वह आपके खिलाफ जहर उगलता फिरता है। मैंने कहा सरदार साहब, मैंने सागर को नौकर नहीं रखवाया सागर न खुद पडित जी से अपनी मुलाजमत का वादा ल लिया था।' उन्होंने कहा यह मुझ भात्रूम हूँ। लेकिन जब बेसकर जी ने पडित जी को धोखा देकर उसका पत्ता काट देना चाहा था उस वक़्त तो आप ही थे जिसने बेसकर के फरेब का पर्दा चाक करके उसे नौकरी दिलवाई थी। मैंने कहा सरदार साहब सागर बुरा जादमी नहीं है। अगर उसने मेरे पाकिस्तान जाने के बाद मेरे खिलाफ आवाज बुलंद की थी तो इसका मकसद यह था कि वह धंधारा हुकूमत हिंद पर अपनी वफादारी का सिक्का जमा रहा था। और यह कोई ऐसी बुरी बात नहीं कि मैं इतने पुराने दोस्त से सम्बन्ध तोड़ लूँ। दीवानसिंह ने मारे गुस्से के कापते हुए कहा 'आप आदमी नहीं देवता है।' लफ्ज 'देवता' को इस कदर दात पीसकर अदा किया था गोया वह कोई मोटी सी गाली दे रहे हों। और जब मैं घामोश हो गया तो उन्होंने कहा 'जोश साहब मैं तो जब तक दुश्मन का खून न पी लूँ मुझे चैन नहीं आता। मेरे नजदीक दुश्मन को मार डालना ही सबसे बड़ा धर्म है।

## वस्ल विलग्रामी

अप्रेजा की तरह गोरे ऊचा माया दरम्याना कद नूरानी चेहरा, घनी लाल दाढी परिशना मूरत और नपोलियन-मीरत इसान थ ।

मेरी इननी उन्न आ चुकी है लेकिन मैं उनका मा हट निश्चय और शेर-दिल इसान आज तक नहीं देखा है । वह जब किसी बात पर कमर बाध लेत थे तो उन तमाम बातों को जो दुनिया भर के लिए नामुमकिन होती थी पल भर में मुमकिन बना दिया करते थे ।

अगर वह उस जमाने में पदा हान जब एक व्यक्ति का साहस मुल्का के नकश बन्द दिया करता था तो मुझे यकीन है कि वह एक महान साम्राज्य कायम करके सिकन्दर महान से टक्कर ले सक्त थे ।

हाफिजा बहुत कमजोर हो चुका है । उनके मिफ कद कारनाम याद रह गए हैं । इहीमें आपको खुद भानूम हो जाएगा कि वह क्या थे । उस दौर में जबकि फिरगी हुकूमत का रोब हर तरफ छाया हुआ था और उसका गुरुर जमीन पर पाव नहीं रखना था हम दोनों शायद बम्बई के एक बहुत शानदार होटल में बठे खाना खा रहे थे और बड़ी-बड़ी मूछा का एक घमघूसड जुगादरी अप्रेज हमारे सामने की मेज पर शराव पी रहा था । मैंने वस्ल साहब से कहा, "तब जानें कि आप इस गडामीर अप्रेज को पान खिला दो वह गिलोरी चुटकी में दवाए उसके पास गए और उसने कहा, "आपकी मूरत देखकर मुझे अदाजा हुआ है कि आप बहुत बड़े आदमी हैं, लेकिन दुनिया आपके साथ इसाफ नहीं कर रही है । मैं मुसलमाना का हेड पोप हूँ चाहता हूँ आप सरबुलद हो जाए । आप मुह खोल दें ।" उस अप्रेज पर उनकी मूरत और उनकी बातों का इस ब्रटर असर पडा कि वे-सोचे-समझे उसने अपना मुह खोल दिया और उन्हाने उसके मुह में गिलोरी रखकर उसकी पीठ को थपथपाया और खुदा आपका भला करेगा' कहत हुए मेरे पास आ गए । वह सितपिटाया हुआ अप्रेज उन्हें गौर से देखने लगा फिर अपनी जगह से उठा सर हिलाकर थक मू कहा और गुस्लखान चला गया ।

वह राजा साहब कठूरा की ब्रसरबागवाली निचली मजिल में रहते थे और मैं उनके वहा ठहरा हुआ था । एक रोज झुटपुटे का वक्त था कि मेरी नजर पडी एक मुरमरे के थले की-सी बूनी मेम पर जो सामने की सडक से हट से ज्यादा आहिस्ता आहिस्ता वारादरी की तरफ चली जा रही थी ।

मैंने कहा कि वस्ल साहब क्या आप में यह ताकत है कि आप इस थलाजान की मुम्न रफ्तार को तज रफ्तारी में तज्दील कर दें ।

उन्होंने कहा, 'वेशक ।' और वह अपने कमरे के सामने के कुए की जगत

पर जो घन दरखा और शादिया स घिरा हुआ था, जानर चडे हा गए और मेम साहब का इन्तजार करन लग । जब वह दगश दगश करती घन दरखा क नीध ग गुजरन लगी तो उहानि बड जार स इलाल्लाह का नारा लगातर और अपन नरली दाता था जरा सा आग तिरालतर इस तरह बट-बट बजाना घुस कर लिया कि बट भम साहन आ माई गाड बटनी हुई भाग चडी हुई सरपट और सडन के लौड बहबह मारतर तालिया बजान लग ।

एन तिन शाम का वह मन्ीहासण आए । कदा कि त्यानारायण निगम न मुझे आपक पास भेजा है कि मैं मुयह की गाडी स आपका बानपुर ल आऊ । बल रात का उनक वहा आपकी दावत है, जिसम आपके दोस्त जगनमोहन रवा तजबहादुर सभू जीर जस्सिस शाह मुलेमान भी मौजूद हाम । मैंने बीबी स इजाजत मागी । बट विगड गद । बहन लगी, "अभी परसा ता लघनऊ म आए हा । चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए मैं तुमको इतनी जल्दी नही जान दूगी । मैंने बस्ल साहन स अपनी मजबूरी जाहिर कर दी और कहा कि निगम साहब से माजरत कर दीजिएगा । उहानि बटा 'ऐसा हो ही नही सक्ता । आपको मेरे साथ जाना पडगा । मैंन कहा 'आप मेरी बीबी और उनकी हठ से वाक्फि हैं वह मुझे किसी तरह जाने नहा दगी । उन्हाने सीना टाककर कहा, इजाजत मैं दिलाऊगा । वह कोठी स बाहर निकल गए एक बहुत बडा नुकीला पत्थर उठा लाए और जीन की सबस ऊपर की सीढी पर खडे होकर उहानि आवाज दा, मेरी छोटी भावज, आप जरा दरवाजे के पट की आड स देख लें कि मैं किस तरह दम तोडता हू । बीबी ने पट की आड से कहा क्या जात है बस्ल साहन ?' उहानि बडा सा नुकीला पत्थर हाथ म बुधद करके कहा, देखिए मैं इससे अपना सर फोडकर मर जाने पर तुल गया हू । आपको माजूम है कि मैं सयद हू । सुनता हू पठान सादात की बडी इज्जत करते हैं । अगर आप जोश साहब को मरे साथ जाने की इजाजत नही देंगी तो मैं पत्थर अपने सर पर मारकर खूत्कुशी कर लूंगा और आले रसूल (रसूल की सतान) का खून आपकी गदन पर होगा । यह कहकर वह पत्थर का एन अपन माथ के सामने ले आए और रो रोकर कहने लगे "आप इजाजत देती हैं कि नही ? मैं एक दो, तीन कहूंगा । अगर तीन सुनते ही आप इजाजत नही देंगी तो सर फोडकर आपके जीने पर अभी-अभी शहीद हो जाऊगा । देखिए एक देखिए दो और दो कहते ही जस वह पत्थर उठाकर अपने माथे पर मारनेवाले थे कि बीबी ने कहा 'बहुत अच्छा । आप उह अपने साथ ले जाए लेकिन बल ही वापस भेज दें ।' यह सुनत ही उहानि पत्थर फन दिया सीनी पर शुक्रिये का सजदा किया और मुझे आख मारते हुए नीचे उतर गए ।

एक बार हम लोग रेल म सफर कर रहे थे कि किसी जवशन पर एक दूल्हा अपनी दुन्हन और मिठाई के टोकरे के साथ हमारे दर्जे म आकर एक कोने में बैठ गया ।

शोकत घानवी न मिठाई की तरफ इशारा किया। वस्ल ने जल्दी में आखें बंद करके चला कर लिया। इतने में विल्ली के भागा छोटा टूटा। दूल्हा ने दुल्हन से चुहलमाजी गुरू कर दी। उह मौका मिला गया। वह अपनी सीट से उठे। दूल्हा स जाकर कहा, 'तू शरीफ घरान का बच्चा मानूम होना ह। लेकिन यह अजीब बात है कि मैं तरे दादा के बराबर हू और तू मेरे सामने अपनी दुल्हन में छेन छाड कर रहा है। उमका शाना पकडकर उहाने उस दुल्हन स अलग करके मिठा लिया। वह नौजवान अदब में बठ गया। अब उहाने मिठाई के टाकर में हाथ डाल दो लड्डू निकाल और दूल्हा से कहा, बंटा, इमी बात पर ले एक लड्डू तू खा ले। एक मेरी वहु को खिला दे और मैं बाकी लड्डू तेरी और तरी दुल्हन की तरफ में तरे हमसफरा में बांट द रहा हू। वे भी क्या माग करेगे कि एक दूल्हा दुल्हन के साथ सफर किया था। और उहाने मारा टोकरा हम लोगो को खिला दिया।

वह लगनऊ के तमाम शायरा के दादा-अम्मा थे। जब कही काई बडा मुशायरा होता था मुशायरा करानेवाले उनके पास शायरा की सूची और किराया बगैरह भेज दत और वह सबके घरा पर जाकर उह निमंत्रित करन एक जगह पर सबको जमा करके अपन साथ स्टेशन ले जाते और टिकट लेकर अपनी जेब में रख लिया करत थे।

एक बार इस कल्प देर से स्टेशन पहुंचे कि गाडी छूट रही थी। उहाने सारे शायरा को थ टिकट ही रेल में सवार कर दिया और कहा कि आगे चलकर किसी बडे स्टेशन पर गाड को आगाह कर देंगे। दो चार स्टेशन के बाद एक नौजवान टिकट चेकर न हमारे डिबे में दाखिल होकर हममें टिकट तल्प किए। हम मचन दूर बंठे हुए वस्ल साहब की ओर, जो टिकट चेकर को देखते ही तस्वीह पडने लग थ इशारा कर दिया और मोचन लग कि देखें अब क्या गुल खिलेगा। टिकट चेकर को बनखिया स अपनी तरफ आता देखकर उन्होंने आखें बंद करके सर झुका लिया। मूरत उनकी खसान-खुदा की-सी थी। टिकट चेकर उनका सामने आकर खडा ता हा गया लेकिन टिकट मागन की जुरअत नहीं कर सका।

इतन में पटरी बदलन से गाडी को घटका लगा, उन्हाने आखें खोल दी। जब बडे शरारती अदाज में उहाने टिकट चेकर की तरफ निगाह उठाई और उसने कहा टिकट दो तो उहाने उसके मुह पर थप्पड मार दिया और पूछा 'पहले अपन वाप की खरियत बता और फिर अपने बच्चा से टिकट माग। मेरा नाम है वस्ल विलग्रामी।' टिकट चेकर ने बडी गमनाक आवाज में कहा कि कोई एक महीना हुआ वह इतकाल फरमा चुक हैं। यह सुनकर वस्ल साहब रोने लगे और उसे गले से लगा लिया और वह भी रोने लगा।

अब टिकट चेकर की क्या मजाल थी कि उनसे टिकट मागना। इलाहाबाद स्टेशन पर उसने हम सबका चाय पिलाई और अपने साथ ले जाकर हम बाहर



पहुँचाया ।

बड़ी जग के खतरनाक दौर में हम सब लोग वस्ल साहब की रहनुमाई में म्वालियर से लखनऊ जा रहे थे और हमसे मिल हुए फ्रंट क्लास के दर्जे में एक बड़ा लम्बा-तडगा अर्धेड अंग्रेज फौजी अफसर भी सफर कर रहा था । उसकी यह शान थी कि हर बड़े स्टेशन पर चार-पाच गोरे उसके दर्जे के सामने खड़े होकर पहरा देने लगते थे । इस फौजी अफसर के साथ उसकी निहायत परी पत्नी (मुंदर) लडकी भी सफर कर रही थी । हमने उसे इस फौजी अफसर की लडकी इसलिए समझा कि वह उससे 'ठंडी बहकर बातें कर रही थी ।

जब किसी जक्शन पर गाड़ी रुकी तो वह लडकी उतरी और 'हीलर बुक-स्टाल पर किताबें देखने लगी । नयाज फतहपुरी ने वस्ल साहब से कहा कि हम आपको सूरमा तस्लीम कर लेंगे अगर आप उस लडकी का बोसा ले लें ।

वस्ल साहब ने कहा, 'शत बढ़ लो । और जब पचास रुपये की शत बढ़ ली गई तो वह नीचे उतरे और व्हीलर की दुकान पर जाकर उसे घूरने लगे । जब उस माहजबीन (चंद्रमुखी) ने तब बंदलकर कहा 'तुम कौन गुस्ताख बूढ़े हो ? तो उन्होंने आँव देखा न ताव चट से उस गले लगाकर उसका बोसा ले लिया । लडकी ने चीख मारी उसका बाप भरा हुआ पिस्तौल लेकर झपट पडा पहरा देनेवाले गोरा ने भी बहकर उन्हें हल्के में ले लिया और वस्ल साहब ने गे रोकर बहना शुरू कर दिया, 'हाय, मेरी बेटी ऐसी विल्कुल ऐसी ही थी ।' यह सुनकर उस फौजी का दिल पसीज गया । उन्हें अपने दर्जे में ले गया, बेच खिलाए चाय पिलाई और उन्हें अपनी बेटी के पहलू में बिठा दिया । जब तक वह जिया, उनकी दोस्ती का दम भरता रहा ।

## छद्मूखा

मलीहाबाद के बड़े जमीनदारों में से थे। जिंदगी भर रेल में नहीं बठे। जब कभी मुकदमा की परकी के लिए लखनऊ या अपने मौजा की तहसील-वमूली के वास्ते शाहजहापुर जाते थे तो अट्टे<sup>१</sup> पर सफर किया करते थे। आगे-आगे उनका अट्टा होता था और उसके पीछे तीन अट्टे और होते थे, जिन पर खाने का सामान, बकरे और सिपाही लदे हुआ करते थे। लाख लाख लोग ने समझाया कि रेल पर सफर कीजिए लेकिन उन्होंने कभी किसी की बात नहीं मानी और हमेशा यह कहा कि या साहब जो सवारी हमारे इशारे पर नहीं चल सकती उसपर बठना बेकार है।

उनकी दूसरी खसूसियत यह थी कि जो शक्य उनके गुस्से शिडकी या गाली का तुरंत उत्तर नहीं देता था उसे वह पठाना के जुमरे से खारिज करके उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया करते थे।

और तीसरी खसूसियत यह थी कि जो मुनाजिम उनके पुनारत ही दो सेक<sup>२</sup> के अदर अदर हाजिर न हो जाए वह उसे छुड़ा लिया करते थे। और इसी कारण नादिरशाही हुकम<sup>३</sup> की तरह छद्मूखानी हुकम दूर दूर तक मशहूर था।

उनका यह एक बधा टिका उसूल था कि जब कोई पठान उनके पास मौजरी के लिए आता था वह मुमकराकर उससे पूछने थे कि आप खिदमतगारा के जुमरे में आ सकेंगे? जब वह जवाब देता था कि हम पठान हैं खिदमतगारी स तो हमारे बाप ताना भी नहीं बाकिफ तो वह खुश हो जान थे। उसके सम्बन्धिया के बारे में मानूम करते कि वे सब किस कदर हैं। और जब मानूम हो जाता तो उसके बाल-बच्चा की तानाद पर निगाह करके वह उसकी उसी कदर तनखाह मुकरर कर दिया करते थे। चूंकि खुश तनखाह के ब<sup>४</sup> बाय<sup>५</sup> नहा थ इसलिए वह पूछते थे कि या साहब आप कितनी रोटिया कितनी ग<sup>६</sup> और किस कदर गोश्त खाएंगे और कितना दूध पिएंगे? जब ब<sup>७</sup> तवा<sup>८</sup> त<sup>९</sup> कि मैं आठ रोटिया और पाव भर गोश्त खाऊंगा और आठ गर दूध में मंग<sup>१०</sup> काम चल जाएगा तो वह अपन मुशी कमरुद्दीनखा को हुकम दिया ब<sup>११</sup> ये कमरी दारद। यानी हे कमरुद्दीन या इसका नाम मुनाजिमा की गृही म दज कर लो मय खुराक।

एक बार उनकी बीबी ने कहा कि जिस सिपाही की आठ ग<sup>१२</sup> मुक<sup>१३</sup> की गई थीं उनके दस्तरखवान से आज एक रोगी बर<sup>१४</sup> था गई<sup>१५</sup>। यह यह सुनकर बाहर आए उस सिपाही को बुलाया और कहा, "या साहब, आज

आपने एक रोटी कम खाई है। यह बात हमारे आपके मुआहिदे के खिलाफ है।" सिपाही ने कहा "हूजूर, आज मरी तरीयत खराब थी।" उन्होंने कहा "नहीं खा सकते थे तो अपनी बची रोटी घर ल जात।" यह कहकर उन्होंने अपने मुशी कमरुद्दीन या को पुकारा और कहा "कमरी, यह खा साहब नदारद।" (यानी यह बर खास्त कर दिए गए।) सिपाही ने बड़ी लजावत से कहा "हूजूर मुझे नदारद न कर।" उन्होंने कहा "खा साहब आपने मुहा हिदा तोड डाला। आप पूरे एक महीना तक नदारद रहोगे। एक महीना बाद फिर दारद हो जाएंगे।"

एक बार उन्होंने खिदमतगार को पुकारा। खिदमतगार दो-तीन मिनट के बाद आया। उन्होंने पूछा कि देर क्या की? उसने कहा "पानी भर रहा था।" उन्होंने कहा "मरे पुकारते ही तुम पर यह बात लाजिम हो गई थी कि रस्सी का फौरन हाथ से छाडकर दौड पडत।" इतना कहकर उन्होंने हुकम दिया "कमरी यह खिदमतगार नदारद।"

बहु सालों में तीन महीने गरीबों को खाना खिलाया करते थे। एक बार उन्होंने मजाक के तौर पर किसी गरीब आदमी से पूछा "कभी ऐसा खाना तुम्हारे बाप ने भी खाया था?" उसने कहा "मेरा बाप जो खाना खाता था वह आपके बाप ने भी नहीं खाया होगा।" उन्होंने पूछा, "तुम्हारे बाप क्या खाते थे?" उसने कहा "ज्वार की सूखी रोटी और चटनी।" वह हस पडे और कहा "तुम सच कहते हो। अगर तुम मुझे पलटकर जवाब न दे देते तो मैं तुम्हें अभी निबलवा देता।"

एक बार एक खिदमतगार ने उनसे कहा कि हूजूर आपका रहीमुत्तीन खा सिपाही आज यह कह रहा था कि छन्दू या की नान्दिराही मुझसे बर दाशन नया होनी। अपनी तनखाह मिल जाए तो मैं उसकी नौकरी छाड दूंगा और न छोडू तो मरे नुतफे में फक है (यानी अपने बाप का नहीं।)। उन्होंने उसी वक्त रहीमुत्तीन या को बुलाया और कहा "खा मान्य आपकी मुस्तनी से हम बहुत खुश हैं। आज मैं आपकी तनखाह दुगनी कर दी है मज से रहना" और पुकारकर कहा "कमरी आज मैं यह या साहब दुगन दारद।" सिपाही खुश हो गया और वह जी लगाकर काम करने लगा। जब वह एक महीना काम कर चुका तो उसे बुलाकर दूनी तनखाह द दी और कमरुद्दीन न क्या "कमरी रहीमुत्तीन या आज मैं नदारद।" रहीमुत्तीन ने पूछा "हूजूर मरी क्या खता है?" उन्होंने कहा "आपने कुछ न्ति पहा कहा था कि अब छन्दू या की नौकरी कर ता मरे नुतफे में फक है। तबिन जब मैंने तनखाह दूनी कर ली तो आपने लाजब में आकर अपने घर गान्नी चड़ा ली। बग अब आप जाण। कमरी नुतफे का फक नदारद।"

एक बार उनका सिपाही न तिकायत का रि परगा में मरा दूध नहीं आ रहा है। वह मुम्म में भर घर पढ़ और बीबी में गरजना आवाज में कहा

अशरफ की मा तुमने हैदर खा का दूध बद कर दिया है ?” उनकी बीबी ने कहा, क्या कर, तीन भैंसा ने दूध देना छोड़ दिया है। सिर्फ एक भैंस दूध दे रही है। उसका दूध कसरत के बाद अशरफ पी लेता है। उतान वहा अशरफ खा दूध पिए और दारद को दूध न मिले। अच्छा, अभी छटी का दूध याद निलाए दता हू। बाहर आकर उन्होंने ललकार कर कहा ‘कमरी, चारा भसों नदारद ! कमरुद्दीन खा हैरत से उनका मुह ताकने लगे। उन्होंने कहा ‘मरा मुह क्या ताक रहे हा ?’ कमरुद्दीन ने कहा ‘भैंसा का नदारद मरी समय म नहा आ रहा है।’ उन्होंने कहा, ‘इमके यह मानी हैं कि पौरन बसाइया का बुलाओ और चारा भस जिवह कर डालो।’ कमरुद्दीन खा उनके बड़े पुरान खैरुवाह थे। उन्होंने कहा ‘भसा को किस खता म जिवह कर डाला जाएगा।’ उन्होंने कहा ‘अशरफ की मा न हमारे दारद का दूध नदारद कर दिया है। इसलिए सारी हरामजादी भैंसों नदारद। कमरुद्दीन खा लाख-लाख बीघत रहे मगर उन्होंने चारा भस जिवह कराके उनका गालन छड़े-छड़े गरीबा म तकसीम करा दिया।

एक दिन वह अपने दाग म बठे कमरुद्दीन खा स बातें कर रहे थे कि उनके बेट आकर खा न आकर सलाम किया। उन्होंने पूछा ‘लखनऊ हो आए ?’ बेट न कहा जी हा अभी-अभी लखनऊ से आ रहा हू और आपको सलाम करके घर जाऊंगा। इतन म उनकी नजर बेट की जूती पर पड गई। जाम स बाहर टाकर पूछा इस जूत का नाम क्या है ?’ बेट न कहा ‘बाबा इमका नाम है डामना !’ उन्होंने कहा पठान का पूत और यह जनखी जूती। इस जूती की मा की कमरी निकाल चाकू और टुकड़े-टुकड़े कर दे दस छिनाल जूती का। यह डामन की जूती अशरफ की पठनीनी को डस लगी।’ और जूती का टुकड़ टुकड़े दखकर जब अशरफ की आंखा म आसू आ गए ता उन्होंने कहा जय जनखे जोरु क दूर हा जा मेरी नजरा मे। जब अशरफ खा नजर पुनकर अर चले गए ता उन्होंने कहा कमरी अशरफ नदारद ! कमरुद्दीन जा उठा पडे। उनका मुह खुला का खुला रह गया। पूछा खान साहब प्रहापुर बटा और नदारद ! यह हा क्या कर सक्ता है ?’ उन्होंने कहा वह नदारद हो सनता आत्र हा जान के दाद। कमरुद्दीन खा न कहा दतनी जरा सी बात पर ! उन्होंने कहा ‘यह जरा-सी वान है ? मैंने उन गाला दो उनन पण्टकर जवाब नहा लिया। कमरुद्दीन उनकी जिद स बाकि थ। बीरु डयानी पर गए जोर लौंडी न कहा बडा घउब हो गया। खा साहब बहादुर अशरफ का आक कर देने पर मुल गए हैं। जनी-जली बीबी के पाम जाकर क्या कि वह उह घर पुनकर समनाए। घर म कुहराम मच गया। लौंडी न डयानी म पुनारखर कहा भिया आपको बीबी बुला रही हैं। वह अर गए ता बीबी ने सर पीटकर कहा हैं हैं यह क्या अघेर है ? एक निगारी जूती पर बच्चे की आड किए दे रहे हा।’ उन्होंने कहा यह

निगोडी जूती की बात नहीं। मैंने उसे गाली दी। वह उसे 'मुझे गाली नहीं दी। अगर वह असली पठान होता तो मुझे उनकी बीबी ने कहा, 'अरे यह तो साचा, वो बाप का गा है?' उन्होंने कहा, 'यही तो तुम्हारी भूल है। पठान बाप की भी गाली बरदाश्त नहीं कर सकता। अशरफ से कहो, मुँह दे, नहीं तो "बीबी ने मुँह पीटकर बटे से कहा, 'अ दे दे।' जब बटे ने आनाकानी की तो उन्होंने कहा, 'द कहता हूँ, मगर तीन पर तू गाली नहीं देगा तो अपनी सात पुँयाकर कहता हूँ कि खडे खडे आक कर दूंगा। यह कहकर अ कहा, "एक!" बेटा चुप रहा। फिर उन्होंने कहा 'दो!'" उन के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, 'दे व गाली! नहीं तो दूध न और जब उन्होंने बड़े निश्चय के साथ अगुली उठाकर तीन रफ खा ने कहा, 'अवे जनखे जोरू के तो उन्टि दौडकर ब लिया, मुँह चूमा और पीठ ठाककर कहा 'तू पठान, तरा बाप तरा दादा पठान और घर से निक्कर बडी गरजती आव "कमरी, अशरफ दारद!'

